LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

"दो शब्द"

भारतीय संस्कृति व जन जीवन में ज्योतिष को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। आदि काल से ही इस विषय पर ऋषियों ने अपनी दिव्य-दृष्टि से कई नियम बनाए और इन्हें ग्रन्थों का रूप भी दिया। इन्हीं ऋषियों की परम्परा में आधुनिक युग में एक ऐसे हुए पंडित रूप चन्द जोशी, गांव फरवाला, तहसील नूरमहल, पंजाब। जिनका नाम ज्योतिष जगत में आदर से लिया जाएगा और उनकी अनुपम कृति "लाल-किताब" ज्योतिष में नवीनता ढूंढने वालों के लिए आकर्षण रहेगी।

मुझे "लाल-किताब" देखने का सौभाग्य सन् 1979 में मिला लेकिन उस समय इसकी उपयोगिता को न समझते हुए कुछ अधिक ध्यान न दिया लेकिन जब श्री जगन्नाथ भसीन की पुस्तक "अरिष्ट ग्रह, कारण और निवारण" में इसका जिक्र पढ़ा तो इस "लाल-किताब" को प्राप्त करने व पढ़ने की लालसा हुई। मेरे परम मित्र श्री सुभाष सपरा के सहयोग से इसकी एक प्रति कुछ मास के लिए उधार पा सका। यह पुस्तक उर्दू में थी और फिर कुछ समय के लिए और बाजार में यह उपलब्ध न थी अतः यह निश्चय किया गया कि क्यों न इसे हिन्दी में लिख लिया जाए लेकिन इसके आकार को देखते हुए हिम्मत पस्त हो रही थी। पूज्या मां श्रीमति कौशल्या पुष्करणा के आशीर्वाद से तथा स्वजनों की प्रेरणा से दीर्घ कार्य को करना शुरु किया गया परन्तु जब यह कार्य अन्तिम चरण पर था तो किसी कारणवश पुस्तक वापिस करनी पड़ी और दोबारा काफी समय तक प्राप्त न कर सका।

अंत में मुझे श्री जी.एस.डाहर व श्री शाम लाल के सहयोग से "लाल किताब" का 1942 का संस्करण मिला, जिसके 380 पृष्ठ थे इसे भी हिन्दी में लिख लिया गया। यह हिन्दीकरण केवल अपने लिए ही था, लेकिन मित्र-वर्ग की प्रेरणा से इस पुस्तक को साइक्लोस्टाइल करने का निश्चय किया गया। अकेले ही रात्रि व अवकाश को इस कार्य में समर्पित करते हुए स्वयं टाइप करने लगा और दीपावली के पावन पर्व पर इस कार्य को पूरा कर सका। यह कार्य पूरा न हो सकता यदि मुझे अपने मित्रों का सहयोग न मिलता, जिनमें से मैं डा. नवल किशोर शर्मा, श्री सुनिल दीक्षत, श्री सुदर्शन

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

नारकर का विशेष रूप से आभारी हूँ।

मेरी इस पुस्तक के पढ़ने वालों से कर-बद्ध प्रार्थना है कि इस की जिल्द "लाल रंग सुर्खी ही रखें बसतीला न होने दें और इससे जन साधारण का शोषण न करते हुए उसका भला ही करें।

"कर भला हो भला अन्त भले का भला"

दीपावली की शुभ कामनाओं सहित

[signature] 15/11/82

सुभाष चन्द्र पुष्करणा सुपुत्र
स्वर्गीय श्री राम चन्द्र पुष्करणा,
एल-2/ 99-ए, डी डी ए फ्लैट,
कालका जी, नई दिल्ली।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

"विषय-सूचि"

ॐ

विषय पृष्ठ पृष्ठ न.

फरमान नम्बर = 1 कुदरत से किस्मत किस तरह आई ------ 1

फरमान नम्बर = 2 ------ 1

फरमान न. = 3 ---------- 2

फरमान न. 4 सामुद्रिक-ज्ञान ------ 5

राशि, कुण्डली के खाने ------ 6

बुध व रेखों की गलतफहमी ------ 7

पक्के घर न. 1 से 12 ------ 8 से 28

ग्रह से खाना न., दिमाग के खाने ------ 28-29

हथेली पर पक्के घर ------ 33

पक्का ग्रह व मसनोई ग्रह पाप ------ 34

पापी, मसनोई ग्रह का असर, अन्धे ग्रह, अन्धराता ग्रह, धर्मी ग्रह— 35

साथी ग्रह, बालुकाबल, दोस्ती/दुश्मनी करना या देखना ---- 36

कायम ग्रह, ग्रह का घर, घर का ग्रह, दोस्त/दुश्मन, उम्र/मियाद,

बराबर के ग्रह ------ 37

ग्रह की उम्र का अर्सा, हर ग्रह की मियाद में बीच के ग्रहों की मियाद - 39

ग्रह की अपनी राशि, राशि व ग्रह 41

दुनियावी ताल्लुक में ग्रह व राशि --- 3 4

12 खानों में ग्रहों की मुख्तलिफ हरकतें, खाना का मालिक ग्रह/राशि

ग्रहों की कुर्बानी के बकरे, दौरा ग्रह 45

35 सालों चक्र, जिस्म व ग्रह का ताल्लुक 4

ग्रहों की दृष्टि, सेहत-बिमारी-शादी- औलाद-मकान---

आदि खास खास चीजों के लिए, ग्रह का असर हर घर में 4

बालिग-नाबालिग ग्रह --- 55

किस्मत का ग्रह व इसकी तलाश, किस्मत की हदबन्दी सालों में,

किस्मत के ग्रह को जगाने वाला ग्रह --- 58-59

सोया हुआ घर/ग्रह, खाना न. को जगाने वाला ग्रह, शक्की ग्रह, 60

ग्रह फल व राशि फल 61

धोखे का 12 सालाह चक्र, धोखे के ग्रह की तरतीब 65

ग्रह की महादशा 66

कायम ग्रह और नेक बुनियाद का ग्रह, महादशा में कौन कौन से

ग्रह कितने साल सोए हुए होंगे -- 72

ग्रह का उपाय, टकराव या बरताव पर पैमाना वक्त 74-75

उपाय की मियाद, हर ग्रह का उपाय 77

पितृ ऋण --- 78

वर्ष - फल -- 79

वर्ष - फल बनाने के लिए मददगार सूचि 84 से 87

फरमान नम्बर 5-----बृहस्पति खाना नं. 1 से 12 में-असर। — 88 से 103

सूर्य खाना न. 1 से 12 में असर --- 103 से 118

चन्द्र -- खाना न. 1 से 12 में असर -- 118 से 137

शुक्र ---- 12 हो खानों में असर -- 137 से 153

मंगल नेक -- 12 ही खानों में असर == 154 से 166

मंगल बद या मंगलीक बारह खानों में असर — 167 से 175

बुध - बारह खानों में असर -- 175 से 200

शनि - बारह खानों में असर -- 201 से 224

राहू -- बारह खानों में असर -- 224 से 239

केतु ---- बारह खानों में असर -- 239 से 256

फरमान न. 15 === दो ग्रह मुश्तर्का या दो से ज्यादा 259 से 399

बृहस्पति-सूर्य -- 263

- " - चन्द्र -- 267

- " - शुक्र -- 273

- " - मंगल -- 276

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

बृहस्पति- बुध — — — - 278
- " --- शनि — — — 285
-सूर्य -चन्द्र — — — 301
सूर्य - शुक्र — — 304
सूर्य - मंगल — — — 305
सूर्य - बुध — — — 307
सूर्य - शनि — — — 313
चन्द्र - मंगल — — — — 318
चन्द्र - बुध — — — — 321
चन्द्र - शनि — — — — 325
चन्द्र - शुक्र — — — — 330
शुक्र - मंगल — — — — 332
शुक्र - बुध — — — — -334
शुक्र - शनि — — — — -337
मंगल - बुध — — — — -342
मंगल - शनि — — — — - 346
बुध - शनि — — — — — 354
- केतु — — — — — [illegible]
- बृहस्पति — — — — - [illegible]
- सूर्य — — — 376
- चन्द्र — — — 377
- शुक्र — — — 378
- मंगल — — — 379
- बुध — — — 380
- शनि — — — 381
-केतु -बुध — — — 382
राहु-केतु -बृह., राहु-केतु-शनि, — — 382
राहु-केतु-सूर्य-शुक्र, राहु-सूर्य-चन्द्र, राहु-सूर्य-बुध "
राहु-शुक्र-केतु, राहु-बुध-शुक्र, राहु-बुध-बृह., राहु-बुध-चन्द्र "
राहु-बृह.-शनि, राहु-मं.-शुक्र-बुध ————————— "
राहु-बृह.-बुध-चन्द्र, राहु-मंगल-शनि, बुध, केतु-बृहस्पति 384
केतु -सूर्य — — 386
केतु- चन्द्र, केतु -शुक्र — — 387
केतु -मंगल — — 388
केतु -बुध, केतु-शनि; केतु-सूर्य-चन्द्र — 389
केतु-शुक्र-बुध, केतु-मं.-बृह., केतु-मं.-शनि, केतु-सूर्य-बृह.,"
केतु-सूर्य-शुक्र, केतु-सूर्य -बुध — — 390
केतु-सूर्य-चन्द्र-बुध, केतु-मं.-शुक्र-बुध, बृह.-सूर्य-चन्द्र"
बृह.-सूर्य-बुध, बृह. चन्द्र-शनि, बृह.-शुक्र -बुध, " 391
बृह.-शुक्र-शनि, बृह.-शनि-बुध, सूर्य-बुध-शनि "
सूर्य-बुध-बृह., सूर्य-बृह.-शनि, सूर्य-बृह.-शुक्र,
सूर्य-शनि-शुक्र, चन्द्र-शनि-बुध, चन्द्र-सूर्य-शुक्र "
चन्द्र-शुक्र-बुध === === 392
चन्द्र-शुक्र-शनि, चन्द्र-शुक्र-बृह. — 393
शुक्र-बुध-मंगल, शुक्र-बुध-शनि — 394
मंगल-बुध-सूर्य, मंगल-बुध-चन्द्र, मं.-बु.-शनि,
मं.-बुध-चन्द्र, मंगल-चन्द्र-शनि — 395
मंगल-शुक्र-शनि — — 396
मं.-शुक्र-बृह., मं.-च.-बृह., मं-च.-श., मं.-श-बृ.,
मं.श-बृ., मं.सब पापी ग्रह, मं.-शनि साथ कोई तीसरा ग्रह,
चार ग्रह — — 397

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

चन्द्र-शु.-श.-मं., च.-बु-बु.-श., मं.-श.-बृ.-बु., मं.-च.-शु. "
बु.बृ च.-बु.-बृ.-मं., मं.-श.-बृ.-बु., द.-शु.-बु.-श., " 398
च.-शु.-बु.-बृ., पांच ग्रह या पंचायत "

तमाम ग्रह इक्ट्ठे, ज्योतिष कुण्डली -टेवे की आसान दुरूस्ती-399

ज्योतिष अनुसार बनाई जन्म कुण्डली, = 400

चन्द्र कुण्डली — — 401
"लाल किताब" के मुताबिक चन्द्र कुण्डली — 402
हस्त रेखा से चन्द्र कुण्डली —— —— 403

हस्त रेखा से जन्म कुण्डली बनाने का ढंग, हाथ पर ——
जन्म कुण्डली के खाने — —— — 406 से 413

हथेली पर खास निशान व उनका असर —— 413

चन्द्र कुण्डली व कुण्डली, राशियों के बिना सिर्फ
ग्रहों से ही हर खाना का असर देखने का ढंग —— 405

ग्रह कुण्डली की मकान के हिसाब से दुरूस्ती की जांच—— 417

कुण्डली के खानों के हिसाब से मकान — — 418

मकान कुण्डली के पक्के खाने — — 419

मकान की हालत मालूम होने पर कुण्डली बनाना ——420

मकान के गोशे —— —— —423

गोशा निकालने का ढंग — — - 424

पांव पर खास निशान व असर —— - 427

शादी, शादी का वक्त, तायदाद शादी, - 427 से
तायदाद औरत, औरत का रंग व स्वभाव, शादी -
रेखा का दूसरी रेखाओं से तअल्लुक, मर्द-औरत के जोड़े की से
की उम्र, बाहमी गुजरान = 436

औसत आमदन माहवार(कुल जाती), खर्च-बचत, खर्च = 437 से
पर काबू पाना, धन व जायदाद जद्दी में इजाफा = 440

साहूकारा — — - 442

औलाद, ग्रहों से औलाद का ताल्लुक, वक्त औलाद = 443
तायदाद औलाद, वाल्दैन-औलाद का बाहमी ताल्लुक = से
औलाद का वाल्दैन को सुख, साहब औलाद = 450

सेहत व बिमारी, बिमारी का वक्त, ग्रह-बिमारी = 451 से
का ताल्लुक, बिमारी के दूर करने के उपाय, = 454

उम्र, ग्रहों की उम्र, अल्प आयु, — 455 से 459

पेशानी की रेखा, मौत का पहचान, मौत का =461 से
आखिरी दिन, साल व मुकाम, उम्र के साल, = 464

चन्द मददगार मिसालें — — 465 से 486

दो शब्द — —

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

सामुद्रिक शास्त्र की लाल किताब : लेखक-शर्मा गिरधारी लाल

(हिन्दी अनुवाद)

खुद इन्सान की पेश न जाए, हुक्म विधाता होता है
दुख दौलत और साँस आखिरी, उम्र का फैसला होता है

बीमारी का इलाज है मगर मौत का कोई इलाज नहीं,
सांसारिक हिसाब-किताब है कोई दावा खुदाई नहीं ।

लाल किताब के फरमान: कुदरत से किस्मत किस तरह आयी

<u>फरमान नं० 1</u>

हुक्म विधाता जन्म मिले तो, लेख ज्योतिष बतलाता है
लाल किताब बच्चा ग्रह चाली, किस्मत साथ ले आता है
हर बच्चे की नन्हीं मुठ्ठी में, पकड़ा रेख आकाश का है
भरा खजाना जिसके अन्दर, निधि सिद्धि की माला है
नौ निधि को ग्रह नौ माना सिद्धि बारह राशि है
नौ जरब जब बारह मिलते होती माला पूरी है
राहु केतु जो पाप गिने है, ग्रह सब ही को घुमाते है
गुरु अकेला दो को चलावे घमते पर वो खुद में है
सात हों नौ या माया चौरासी, पाप फर्क दो ही का है
ऊपर नीचे जगत के अन्दर, झगड़ा इन दो ही का है
पाप अगर सब दुनिया छोड़े. सात ग्रह बच जाता है
राशि बारह में सात ग्रह से, नर्क चौरासी कटता है
नन्हीं मुठ्ठी के खुलते बच्चे की, आकाश हवा भरपूर हुआ
हरकत. गर्मी, पानी से मिट्टी, ब्रह्माण्ड नाम पड़ा
हाथ दायाँ और कुण्डली जन्म को तकदीर मर्द का नाम हुआ
कुण्डली चन्द्र या हाथ बाएं से तकदीर बशर का नाम हुआ
उल्ट हाथों से औरत माना, ग्रहफल राशी आम हुआ
इल्म कयाफा ज्योतिष मिलते. लाल किताब का नाम हुआ
नौ ग्रह राशि बारह घूमी किस्मत का आगाज हुआ
नेक हवा जब चलने लगी तो जहां दोनों आकार हुआ
तरफ 12 त्रिलोकी होते. गुरु जगत में जन्म हुआ
माया हवा जब मिलने लगी तो पिछला जन्म अब खत्म हुआ
राजा सूर्य बच्चा ग्रह चाली, घर अपने प्रवेश हुआ
अटल लेख का झगड़ा चला तो, ब्रहस्पती गुरु उपदेश हुआ

<u>फरमान नं० 2</u>

लाल किताब है ज्योतिष निराली, जो किस्मत सोई जगा देती है
फरमान पक्के देके बात आखिरी तो लम्बी से जहमत हटा देती है
शर्त राहु केतु की 7वें भी होती जन्म राशि भी वो मिटा देती है

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

तमाम एक का हिस्सा लेकर जो चलती, फकत 12 पर ही जो चलती है
है दुनियावी रेखा कयाफा से चलती, फलादेश ज्योतिष बतादेती है
हवाई ख्यालों को यकतरफ करती बड़ा घोड़ा चन्द्र को कर देती है
बात 28 नक्षत्रों न पंचांग गिनती कुण्डली राशि 12 को दे देती है
सिर्फ पक्के घर 12 आखिर लेती है ग्रह नौ से किस्मत बता देती है
जन्म वक्त दिन माह उम्र साल सब कुछ, असल नाम कोई उड़ा देती है
फकत रेखा फोटो या कोठे से कुण्डली जन्म मय चन्द्र बना देती है
लिहाजन विधाता किसी की हो नहीं उपाय मामूली बता देती है
ग्रह फल व राशि के टुकड़े जो करती या रेखा में मेख लगा देती है।

<u>फरमान नं० 3</u>

जब बच्चा पैदा। नोट : बुलन्द आसमान की आखिरी हद और पाताल की गहरी तह से घिरे हुए दरम्यानी खाली मुकाम या आकाश में मौजी और जाहिरा हवा के दोनों जहानों में आने जाने के खुले रास्तों को जन्म मरण की गांठ लगा देने वाली चीज ग्रह चाली बच्चा कहलाई। होता है बन्द मुट्ठी लाता है और जब वो इस दुनिया से कूच करता है तो वो दोनों हाथों की मुट्ठियाँ खोल जाता है। छोटा सा बच्चा अमूमन मुट्ठी बन्द ही रखता है और आसानी से किसी दूसरे को अपने हाथ की हथेली देखने नहीं देता। ज्यों ज्यों बढ़ता है मुट्ठीयाँ खुली रखने का आदी हो जाता है और आखिर एक दिन ऐसा आता है कि वो भरी दुनिया से मुंह मोड़ लेता है जिस्म अकड़ जाता है और वही मुट्ठी जोर से बन्द करने पर भी बन्द नहीं होती मतलब ये कि वो बचपन में अपना कुदरती भेद और छोटी सी मुट्ठी का खजाना किसी को दिखाना नहीं चाहता और जब अपनी खिदमत उम्र के लिए साथ लाया हुआ दाना पानी और दुनिया का तमाम हिसाब किताब खत्म कर चुकता है तो खाली पड़ी हुई चीज़ की मुट्ठी भर कर अपने साथ नहीं ले जा भी सकता मुट्ठी बन्द करके साथ क्या लाया और कौन सी चीज की मुट्ठी भर कर अपने साथ न ले जा सका यह एक भेद है जिस का मतलब इसी मुट्ठी में ही न भरा हुआ है। बन्द मुट्ठी में क्या है सिर्फ खाली जगह, जिस का दूसरा नाम आकाश है जिस में कि सिर्फ हवा भरपूर है। हवा से जब आग मिली तो पानी बना, उस से मिट्टी मिली तो दुनिया का सब भण्डारा पैदा हुआ दूसरे ख्याल में बन्द मुट्ठी के आकाश में जमाना की हवा का मालिक बृहस्पति था जिस में गर्मी के भण्डारी सूर्य की चमक से चन्द्र के पानी और शुक्र की मिट्टी के बाल मैथुन का खाना पीना, और बुध की अक्ल व बोलना सुनाना शनि का जादू मन्तर और देखना दिखाना राहु की रहनुमाई व कहलवाना कहलाना और केतु से चलना फिरना या पैरों से मिलना मिलाना और खुद कुदरती को अपना ही खुद बनाना, सब के सब बन्द पड़े हैं।

ज्योंही कि इस बच्चे के ऊपर का रुख किया बन्द मुट्ठी के आकाश में नौ निधि की अटल ताकत व बारह सिद्धि की खुद अपनी हिम्मत की हवा (अर्थात हस्त रेखा) (कुण्डली के आकार में ग्रह राशि) (हिसाब ज्योतिष विद्या) सार या बैल के सींगों पर कुल दुनिया की धरती माता का बोझ या ज़मीन

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

शेर के मुँह को बेहाल अंग के खून की लाली का रंग नहीं चढ़ता वो लाल होने
की बजाए और भी चमकता चला जा रहा है। मंगल भी जर ग्रह है मेहनती
अंग के असूलों को चलाने वाला है। मुकाबला पर शुक्र की जमीन सब को एक
ही आँख से देखने वाली औरत है। हमला नहीं करता किरणों को वापिस
ले जाता है और सूर्य और बृहस्पति के शेरों को काफी असला निहायत गरीब
की हकीकत ब्यान करता है। मंगल आदल है या अदल का मालिक है बृहस्पति
हवाई शेर रहीम या रहम का मुजस्सम देवता है किसी से दुश्मनी नहीं करता
सूर्य मुन्सिफ है जिस में रहम और अदल दोनों शामिल हैं क्योंकि इसके जाहिरा
सूरत के अन्दरूनी वजूद में चन्द्र का शान्ती वाला दिल बैठा हुआ है जो नजारा
देख रहा है। फैसला होता है कि पाँव पड़ी नीचे लेटी एक ही आँख की मालिक
कामी औरत पर मर्दों का हाथ उठाना मंगल का काम और हमला करना
शेरों और बहादुरों का काम नहीं। चुप चाप बैठा हुआ बुध अपनी अकल का
दायरा बनाता करता है। मिथुन राशि न0 3 पैदा हो जाती है या मेष
न01 के मंगल व सूर्य मिल कर 3 होने पर मिथुन मिथुन मिलावट या मर्द
औरत का जोड़ा या मर्द औरत की मिलावट की बाहमी अकल या कामदेव
बना की ताकत हाथ मिल बैठती है। बुध शुक्र की अपने घर में ही पासदारी
करने लग जाता है दूसरी तरफ शनि जिसने जमीन या औरत को देखने के
लिए अपनी आँख उधारी दी थी औरत को समझाता है कि मेरे होते हुए
यह सब तेरी आँख की नजर का सिर्फ एक मामूली करिश्मा है शनि ने बाप
सूर्य के बरखिलाफ भी औरत को सलाह दी, औरत भोली भाली होती है
इस के फरेब में आगई। आँख शनि की मगर मिट्टी शुक्र की जाहिरा भोली भाली
शैल मकु नजर आ रही है मगर इसकी शैतान आँख के एक ही तख्यल के
करिश्में ने सूर्य और बृहस्पति के शेरों को नीचा कर दिया सब नीच फल पैदा
हो गया दुनिया में बुराकारी हुई [ ] मंगल के पेट में छुरियां फिरने लगी
[illegible] गोया वो राहू बन गया। दिमाग में तकल व हरकत हो रही है
मंगल की पेश नहीं आती वो सूर्य और बृह0 दोनों की खातिर जो
सब के पिता है आँख से मार देने वाली असला से तंग होने लगा और
खुद हाथ से उसे मार देने पर तैयार हुआ, मगर अकेला हूँ तो ऐसी कार्यवाही
कार्यवाही कर आऊँ, बुध है और मंगल के होते हुए राहु भी बुध है जिसकी
वजह से मर्द औरत का जोड़ा कामदेव को अन्दर छुपाये फिर रहा है मगर
मंगल दुश्मनी नहीं छोड़ता। अब काबू आया औरत को मार ही देने का
असूल बरतने लगा। फिरता कोताह शुक्र को केतु की मदद मिलने पर या
कामदेव की मेहरबानी और मंगल की सलाह से किरनें फिर जमीन पर शुक्र को
मार देने या नीच करने की बजाए उसे चमकाने को वापिस हुई। अब जमीन
क्या चमके सब ग्रहों को शनि की शैतानी मालूम हो गयी। बृहस्पति की
हवा-हुक्म बजा रही है। मंगल का मेहनती अंग अक्सर तौर पर मर्दी नहीं
छोड़ता वो सूर्य के हुक्म या मंगल की किरणों को कभी इधर कभी उधर
करता है। कशमकश पैदा हो गयी। मिट्टी की किरनें किसी का कुछ बिगाड़
नहीं सकती। बृहस्पति की हवा भी जोर पकड़ रही हैं। गर्द आवड़ने लग
लगे और शुक्र के झगड़े सब की आँखों में पड़ने लगे। मगर इसकी अपनी आँख
पहले की तरह देख रही है क्योंकि ये शनि की बनी हुई है वही अर्ज दुनिया

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

के झगड़े हैं वही बचा रहा जिसने शनि की आँख से आँख न मिलायी गर्मी से सर्दी बढ़ी मैदान गर्म हुए और पहाड़ ठण्डे रहे और ख्यालात के सर्द और गर्म दो पहलू हुए । औरत के तबस्सुम (मुस्कराहट) की आँख के इशारों से सैकड़ों बखेड़े और जंग व जदल होने लगे । दुनिया लड़ाई का मैदान बन गयी और सुख दुख की नदियां या (रेखायें) हाथ के इदरकदम में बहने लगी। मंगल ने नजारा दिखाया चन्द्र ने तमाशा देखा मगर रेखाओं के समुन्द्र (चन्द्र का दूसरा भाग) ने शान्ति न छोड़ी । पानी धीरे-धीरे गर्म हुआ मगर शुक्र का तमाम ब्रह्माण्ड या । शुक्र की कुल जमीन या हाथ का दरकदम । सूर्य और शुक्र की बाहमी दुश्मनी के कारण से इतना तंग हुआ कि सूर्य को दबाने के लिए सारे का सारा ही उठकर दौड़ता हुआ मालूम होने लगा बुध० की हवा में शुक्र की मिट्टी के कण तूफानी जोर से फैल गये । तमाम मुतलकैन तंग हुए । सूर्य की तपश को मध्यम किया मगर इस के रथ को न रोक सके सबने अपना आप ही बरबाद किया सूर्य का कुछ न बिगाड़ सके ।

धीरे -धीरे सूर्य का रथ छिपने लगा और काली रात शनि का पहरा होने लगा किरणों खत्म हुई मंगल चला गया अब समंदर की सैर शनिचरी में राहु भी आ निकला । रात हो गई सूर्य की पहली चमक बुध० की ठण्डी हवा के साथ चन्द्र की शान्ति से फिर जाहिर होने लगी । गर्मी घटी सर्दी बढ़ी,जमीन को कुछ शान्ति हुई और समुन्द्र ने भी गर्मी को अपने घर के अन्दर ले दर बदर करना शुरू किया राहु ने रात खत्म की तो फिर ठण्डी हवा चलने लगी। रात के बाद दिन के फर्क की हदबन्दी या केतु निकल आया क्योंकि दिन खत्म और रात शुरू के बाद राहु था और फिर जब सूर्य के उम्मीद हुई या राशि मण्डल में ग्रह चाली बच्चा को ज्यूँ ज्यूँ हवा लगने लगी, बुद्धि या अक्ल आने लगी और जोर से सब्ज़ रंग होने लगा (नोट:5 वर्ष जो के पौधें और पेड़ों के पत्ते भी निकलते ही जर्द रंग होते हैं बन्द सर्दत में पैदा शुदा पौधा इस बात को साफ करते हैं) जो बुध का रंग और जमाना है याने अमावस की हवा अकल तो देगी मगर जर्द T के सब्ज करेगी। बुध० की मदद कम होती जाएगी गोया उस बुध के सब्ज रंग से मिली हुई अक्ल से ही इन्सान धन दौलत के कमाने की धुन और लग्न में रात दिन मरते फिरना सीखेगा। क्योंकि क बुध बुध० से दुश्मनी पर है। माँ कहती है कि बच्चा बड़ा हुआ मगर ? बुध० की उम्र घटती जाएगी । पैदाइश के वक्त बुध० की पूरी उम्र का था हर तरफ से साफ था अमावस की हवा से कई रंग बदलने लगे। जर्द से सब्ज हुआ तो राहु साथ मिला गोया दिमाग में खलल व हरकत पैदा हो गई और केतु के साथ बदी करने का बीज आ मिला। आखिर यहाँ तक कि सब अमावस उलझन हो गया फिक्र व गम बढ़े हुए मगर शुक्र का गुलाम है कि राहु व बुध० बराबर हैं और बाहम कभी दुश्मन नहीं होते। दोनों के मिलाप से सब्ज रंग पैदा हुआ तो बुध आ निकला और जर्द बिल्कुल ही जाता रहा अक्ल पूरी हुई तो अमावस की हवा का इसरार ही उठ गया "हीले रिज्क बहाने मौत" का मसला खड़ा हो गया और फरिश्ता का होसला या कुदरत

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

का लिखा शुरू ही गया समझा ही नहीं गया बल्कि जब कुल बुध या बुद्धि की अक्ल का गोल दायरा बृह० के बुर्ज पर आया तो बृह० की हवा का वो यह बन्धा कि उसे निकलने का सिर्फ वही आकाश खाली जगह बाकी रह गई। किस्मत की अक्षा हवा से बाग-बगीचे बढ़ने लगे। और आसमान की तरफ उठने लगे। मुख्तसर अब किस्मत का इन्तज़ार न रहा।

इतने में पूर्व आसमान पर नज़र से गायब हुआ, रात आई. आग बुझने और सर्दी मरने लगी। घबराहट खत्म और शान्ति आने लगी। चक्र चलता रहा है। दिन के थके हारे सोने लगे कई तरह की ख्वाहिशें होने लगीं। जिसके पर्दे में हवा से आग हुई आगे पानी, पानी से मिट्टी बनी या बच्चा ज़माना की हवा से गर्मी सर्दी महसूस करने और माता पिता के साया में आराम करने लगा। यही वजह कुदरती है आकाश की हवा उसे सांस का काम देने लगी यही इसी असूल पर जाता है कि हर सांस के आने और जाने में इन्सान की किस्मत का ताल्लुक होता है। जिसकी वजह से कोई बुद्धिमान या बुध का मालिक या अक्लमन्द या हीन व ओछ नहीं कहता कि एक के बाद दूसरा सांस आयेगा या नहीं। मगर हर दम यही ख्वाहिश करता है कि अगर एक सांस बाहर को गया हुआ है तो दूसरा मेरे अन्दर ही आ जाए। ताकि अगर चांद ने किस्मत की हार दी है तो बाकी ही महसूस करे। यही दायरा दायरा करता रात दिन 24 घण्टे में 12 राशि मय 7 ग्रह या चौरासी लाख जून पूरे कर लेता है और यह दुनिया की वह चौरासी या बारह राशियों में सातों ग्रहों की गरदश या चोट के से गुज़रता चला जा रहा है। अगर यह सांस हवा या बृह० न हो तो न-व चौरासी खत्म हो क्योंकि बृह० बुध बुनियादी ग्रह वाली समझा है बृह० अंडे पर बुध का गोल अण्डा खाली बुलबुला ही रह जाएगा जो दुनियावी ख्याल में अण्डे से बृह० की जगह दिखाता हुआ अण्डे का खाली बुलबुला गोल या ढांचा घर या बच्चा के ऊपर की झिल्ली या बेर होगी जो बृह० व राहू के बीच हद बन्दी करने वाली चीज़ आकाश की बुनियाद अक्ल या दिमाग की हद कहलाएगी। जिस की जांच पड़ताल सामुद्रिक शास्त्र से होगी।

सामुद्रिक शास्त्र

फरमान नं० 4 :-

हस्त रेखा व ज्योतिष से मशहूर या दोनों में से किसी एक के ज़रिए से दूसरे को पैदा कर लेने वाले मज़मून को सामुद्रिक शास्त्र कहा है। जिस से हस्ती से बीती या बीती से हस्ती का भेद खुलता है यह खासियत है इस की मुकम्मल तौर हाथ में बुध का समझ आ जाने वाली चीज़ का तौर चीज़ से उस का बनाई और बनावटी असर का पता चल जाता है और इस से बुत से बनाई व बदली नेहमत का अन्दर बाहर या कमाली व बुराई राज का बाहमी ताल्लुक चलता है. जन्म मरण के सवाल का शुरू व आखिरी या पहला, जन्म का हाल बल्कि भी पहले कि बेटी मालूम करने का ढंग सब हाथ की हथेली पर ही लिखा हुआ है। जिस के पढ़ने में सामुद्रिक शास्त्र मददगार होगा। बुर्ज, राशि और रेखा के अलावा मकान, जाए रिहाइश, हवाल दूसरे मनुष्य माल मवेशी परिन्दे या दूसरे दुनिया के साथी और "इल्म क्याफा" इस इल्म के ज़रूरी पहलू लिये गए हैं।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

राशि:-

हाथ की हथेली के बराअज्म के बुर्जों के अलावा हाथ की अंगुलियों की हर एक गांठ को "राशि" कह कर पुकारा गया है। जो बारह तरफों की खबर देने के लिए गिनती में बारह हैं। (1) मेष, (2) वृष, (3) मिथुन, (4) कर्क, (5) सिंह, (6) कन्या, (7) तुला, (8) वृश्चिक, (9) धनु, (10) मकर, (11) कुम्भ, (12) मीन।

हर राशि के सातवें पर वही ग्रह उच्च होगा जो पहले नीच था यानि सात ग्रह और 12 राशि या 12×7=84 चौरासी की योनि का जंजाल या रात दिन में चौरासी लाख जोन का मजमूआ अजीब पैदा हो चुका है हर सातवें के बाद फिर वही ग्रह असर करते हैं हर आठवें वही हालत हो जाती है इसी असूल पर ग्रह व राशि का असर मुकर्रर होते हैं। लाल किताब का आम असूल इल्म ज्योतिष की जन्म राशि (लग्न) लाल किताब में मेष राशि होगी। जिस का पक्का घर हमेशा अंक नं० 1 वाला होगा जिसके बाद बाकी घर बातरतीब होंगे। यानि इल्म ज्योतिष वाले ख्वाह कोई भी जन्म राशि रख कर शुरू करें उसकी जन्म राशि वाले हिन्दसा को लाल किताब के मुताबिक खाना नं० 1 (बाकी बातरतीब) ही मिलेगा।

फर्ज किया कि जन्म कुण्डली में तुला लग्न है

साथ वाली कुण्डली लाल किताब के

मुताबिक

हालात देखने के लिए बृह० खाना नं० 1। सूर्य नं० 2 वगैरह मुलाहजा करें इसी तरह ही वर्ष-फल पढ़ें।

2: हर ग्रह के बालावार असर के शुरू में जो चीजें लिखी हैं जब वो पैदा होंगी इस खाना में दिया हुआ असर शुरू होगा। मसलन शुक्र नं० 1 -9 में सफेद गाय के या शादी 25वें साल मन्दा फल शुरू होगा। क्या देखा ठीक भी है पहले देख लें।

कुण्डली के खाने:-

जगह जगह खाना नम्बर से मुराद हस्त रेखा की कुण्डली का पक्का खाना नं० मुराद होगी राशि नम्बर न होगी*।

<u>पक्का घर</u> (1) अगाध हाल, (2) जन्म मरण का दरवाजा, (3) दुनिया से माया के चले जाने का रास्ता, (4) माता का पेट-शिकमादरी, (5) मुस्तकिल आने वाला अगला जन्म, (6) पाताल -ख्वाब हस्ती, (7) कुल फल मैदान दुनिया (8) दुनिया का बाहर मौत निशानी (9) अगाध बाजी, पिछला जन्म, पेट, माता, सहायी, (10) दसवाँ द्वार, ख्याली दुनिया, (11) दुनिया का अन्दर माया का दुनिया में आने का रास्ता जन्म वक्त या आमदन, (12) आखिरी वक्त, या आजादी, व वीराना का सुख आलम कूच का रास्ता।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

कुण्डली में बन्द मुट्ठी के खाना:

हाथ लाया माल -- 1 : 7 : 4 : 10
वाल्देनी हाल बचपन --- 9 : 11 : 12
औलाद , बुढ़ापा--- 2 : 3 : 5 : 6
बीमारी दुःख -- 8
100 की सदी -- 1 : 7 : 4 : 10 , हाथ लाए बजाते मुट्ठी का अन्दर
50 प्रतिशत --- 3: 11 : 5: 9: दूसरों के पास मुट्ठी का बाहर
25 प्रति शत--- 2 : 6 : 12 रिश्तेदारों के पास - मुट्ठी का बाहर।

कुण्डली के खानो की गिनती इस हाथ और मुकाम हमेशा के लिए मुस्तकिल तौर पर मुकर्रर कर दिए गए हैं। बारह राशियों के लिए बारह ही खाने निश्चित हैं इन बारह खानों में 9 ग्रह आएंगे बाकी चार (खाना नं० 7 में दो ग्र इकट्ठे) में बुध० की हवा का असर गिना गया है क्योंकि हर खाली जगह में हवा का असर होगी।
खाना नं० 5 मुस्तकबिल, खाना नं० 9:- लाइफ, खाना नं० 11:-दुनिया का अन्दर, खाना नं० :-5 8 दुनिया के बाहर।

<u>राशियां</u>:- गिनती में 12 राशियां हैं जिन का जुदाजुदा मुकाम - हर एक अंगुली की तीनों पोरी पर हमेशा के लिए पक्के तौर पर मुकर्रर है। गिनती हाथ और जगह मुकर्रर करते के वक्त मध्यमा अंगुली को सब अंगुलियों के आखिर में लेते हैं क्योंकि मध्यमा अंगुली सन्यास या दुनिया से अलहदगी की अंगुली गिनी गई है। जिस का ताल्लुक गृहस्थ के बाद होगा।

2: पहली अंगुली तर्जनी की तीनों राशियों का इकट्ठा लिया हुआ असर जिन्दगी का पहला हिस्सा या जमाना की हवा की वाकिफयत या बुध० का असर है जो 25 वर्ष उम्र तक गिना है। दूसरी अंगुली अनामिका की राशियों के दूर्ध का जमाना गृहस्थ का ताल्लुक 25-50 बरस दुख कमाई वगैरह होगा। तीसरी अंगुली कनिष्ठा की तीन राशियों का असर वानप्रस्थ या मुकरियों को उपदेश का असर 50-75 होगा। चौथी अंगुली मध्यमा की तीनों का असर 75 से 100 तक वानप्रस्थी होगा। यह जरूरी नहीं है कि हर एक राशि का निशान अंगुली की उसी पोरीपर पाया जाये कि उस राशि का मुकाम मुकर्रर है लेकिन अगर निशान पोरी पर पाया हो जहाँ कि उस राशि का मुकाम मुकर्रर है लेकिन अगर निशान राशि अपनी मुकर्रर जगह पर ही हो तो वो आदमी उसी राशि का होगा और अगर कोई भी निशान राशि न पाया जाए तो हैरानी की बात नहीं ग्रहों या बुर्जों से पता चल जाएगा।

<u>बुर्ज व रेखों की गलत फहमी</u>:-
बुर्जों को पक्के तौर पर जगह बजगह मुकर्रर कर दिया गया है इसी तरह से ही राशियों के लिए हमेशा के वास्ते जगह मुकर्रर कर दी गई है। बुर्जों के लिए रहने की जगह को बुर्ज या ग्रह का घर कहेंगे और राशि के लिए मुकर्रर की हुई अंगुली की पोरी को राशि का घर कहेंगे। हर बुर्ज या ग्रह का निशान मुकर्रर है इसी तरह से हर राशि का निशान भी मुकर्रर है ग्रह के निशान से ग्रह का जिस्म ताकत या असर लेंगे। मगर ग्रह के लिए जो जगह हथेली पर हमेशा के लिए मुकर्रर है वो मुकाम इस ग्रह का घर होगा। ख्वाह ग्रह खुद किसी दूसरे ग्रह के घर जा बैठा हो। इसी तरह से ही राशियों का हाल है यानि राशि

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

जो जगह अंगुली की पोरी पर मुकर्रर है वो राशि का घर है और जो निशान राशि का है वो राशि का दिया हुआ असर या निशान या सबूत होगा। इस तरह पर अब किसी बुर्ज का निशान किसी दूसरे ग्रह के घर में पाया जावे तो हम कहेंगे कि वो ग्रह दूसरे ग्रह के घर में चला गया है। मिसाल के तौर पर अगर सूर्य का सितारा चन्द्र के बुर्ज पर वाकया हो तो चन्द्र के घर में सूर्य आया हुआ गिना जाएगा या अगर यही सूर्य का सितारा गुरु के बुर्ज पर हो तो सूर्य को गुरु के घर मेहमान कहेंगे अब सूर्य और गुरु का या सूर्य और चन्द्र का जो आपस में ताल्लुक है वही असर होगा। इसी तरह से हर राशि के निशान का असर लेंगे।

पहला घर नम्बर 1 का:-

घर पहला है तख्त हजारी ग्रह फल राजा कुण्डली का,
ज्योतिष में इसे लग्न भी कहते झगड़ा मनुष्य है माया हल्का,
पूर्व तरफ पहला घर सूर्य - परोपकार चक्रवती का,
वजूद, मकान, सर हमल भी गिनते जमाअत हाल ब्याही का,
धार पिचारी तख्त के पीछे शीश महली खड़े हों जो कि,
राज ताल्लुक रंग हो गुरु के रहम पुरानी बाबू चकर है,
कल्ल झिल्ली ग़ैर जो पैदा होवे- बाद हैसियत दुनिया लेंगे,
पहला घर सारा तख्त गिना तो 7वाँ रखे की धरती हो,
सातवाँ ही गर खाली हो उल्टा तख्त वो 24 हो ,
बाद 24 के जितने जागे- दुश्मन ग्रह उठ आता हो
टक्कर ऐसी उठ ग्रह होगी जागे न हो दो चलता हो,
लग्न अगर खुद खाली हो तो किस्मत जाग न आई हो,
किस्मत उसकी सातवें बैठे या घर चौथे दसवें।10। हो,
मुट्ठी केघर चारों खाली- 1,:,9,3,11,5वें हो,
यह घर भी गर खाली होवे 2,6,12,8वें हो,
घर बारह की घूम के देखे 5 ऊँच चाबत या घर का जो,
किस्मत का वो मालिक होगा बैठा तख्त पर झगड़े हो,
पर पहला जब राज हकूमत साथ वजीरी होता है,
हर दो के कोई दुश्मन होवे सख्त फकीरी होता है,
ऊँच नीच ग्रह के जो गिने हैं वो नहीं इस घरों लड़ते हैं,
बाकी ग्रह सब झगड़ा करते उम्र के भी वो मरते हैं,
तख्त पर बैठा हर ग्रह खुद राजा दूसरों के वो स्त्री है,
तो हैं इसकी औरत बेटी बुध गुरु जो बैठती है,
ज्यादा एक से घर पहले में हर ग्रह स्त्री होती हैं,
दो से ज्यादा घर 7वें में स्त्री ग्रह नर होती हैं,
के गिनती मगर हो राजा अलहदा राय कमेटी होती है
जाहिरा बेशक तीन हों बैठे गिनती चार की होती है,
अकेला पहले बहुत हो 7वें ग्रह फल राशि होती है
उल्ट बहर अगर हो टेवे बैठे जड़ 7वें की कटती है,
रवि शनि बुध मंगल टेवे कहीं भी इकट्ठे बैठे हों,
फल बैठे की घर पहले के उस टेवे में होते हैं।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बुध अपना ज़ाती जिस्म तमाम अज़ू वजूद हाथ पर पांव दिमाग़ी ज़ाती कमाई स्वाभाव गर्मी ख़ुश्की व आतशी होगा। बिल्ली या शेर में पैदा होवे वोले मवेशी सींग जिसके बड़े हों खुद खडा मकान। अपना तख़्त पर दिमाग़ी तख़्त के गोशे हमराह सवारी रथ गाड़ी, मोटर सवारी ताकत मुल्क मुल्क दिमागी ताकत एक मुश्त परोपकार।/4, राज दरबार, सहायी ताकत पुरानी रस्मों रिवाज़, व मकानात का ताल्लुक। वक्त पैदाइशी अपना हाल मौजूदा जन्म, हाथ लगा हुआ खज़ाना वास्ते खुद अपना जिस्म, दुनिया में नाम किस हैसियत का होगा, ग्रहों का ताल्लुक मुतल्लका रिज़क रोज़ी व अपना ज़ाती वजूद मसलन बुध, सूर्य, शनि, मंगल बैठा हो वही हाल होगा सूर्य इस घर में साथ बैठे चाहे मित्र हो चाहे शत्रु। ग्रहों को मदद दिया करता है। राहू राशि फल का होगा। ग्रह का असर बैठे की रफ्तार से होगा। यह केतु के खाना नं० 7 का और केतु का इस घर का मुन्सिफ होगा शुक्र, सूर्य बुध वगैरह सूर्य का जिस्म तमाम वजूद व तमाम दुनियादारों का अलहदा-अलहदा होते हुए और फिर इकट्ठे एक हो कर काम करने की हिम्मत व ताकत माफिक राजा व औरत होगा।

पक्का घर खाना नम्बर दो।2।

घर पक्का पूजा गुरु ब्रह्म मात स्थान है, मिलता यहीं पर है सादका मात व वर ससुराल हाल व समुन्द्र घर 9वें का या फल उस हो पहली का,
सफेद झण्डा लोहबार पर झूले उस गुरुद्वारा है घर2 का,
तरफ जुनूबी मगरब है तो- अर्थ हुआ मिट्टी का है,
घर आठवां और छठा मिलते- दरवाजा यह दो का है,
ग्रह शत्रु पापी सभी दुश्मन सफा सब क्लेश
मौत पाताल के केवल कारण गुरु के शुभ उपदेश
घर 10वां गर खाली होवे सोया हुआ कहलाता है,
घर दस पर जो आए दूजे ग्रह किस्मत बन जाता है,
कमाई किस्मत बचत ज़ाती स्त्री धन भी मिलते हैं,
माता बुआ और फूफी मासी जगह निकम्मी लेते हैं,
कद दीवापन अंगुली इसकी दूजे स्वभाव नेकी है,
जायका में जो खट्टा मीठा तो मोह माया भी होती है,
बैल हलोल साथ लगा कर दरख्त भी पैदा होता है,
मकान इकट्ठी राज हुकम बैल पे राहु चढ़ता है,
घर पूजा के मेहराब है 8 का केतू राहु केतू है,
सर पांव के दोनों माफिक माथा तरह बनाई है,
पीपल कि पितल मिट्टी पीली केसर पीला रंगभी है,
असर शनी का इस घर आ कर मन्दे का भी उल्टा है,
ग्रह मुतल्लिक बुरा है करते वहम मुट्ठी के बातों में,
फल 2,11 अपनों अपना धर्म मन्दिर गुरुद्वारा हैं,
स्त्री ग्रह जब शनि से मिलकर बैठे जो या कहीं भी हो,
ग्रह दृष्टि से जो कोई देखे आठ औलाद के मरते हों,
पाप की बैठक घर के गुरु के गृहस्थ शुद्ध बन जाता है,
किस्मत सब की चौथे पे चलती केतु गुरु बुध मिलता है,

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

चन्द्र-मंगल बुध शनि बैठे मौत जनम देवे मिलता है,
आठ ग्रह इस घर में आते गुप्त रवि पर होश रहता है,
केतु गुरु करें मस्तक लम्बा कर्म धर्म बुरा कहता है,
न कुछ कलम जब लिखे विधाता माथा खुला हो जाता है
दुनिया की किस्मत है आकाश गुरु में फर्क लम्बा चौड़ाई केतु है,
गुरु लम्बा मिलते तो केतु से चौड़ा मिले बैठे दोनों गुरु जाता है,
गुरु शुक्र जब टेवे में बैठे कहीं भी इस के बैठे हों,
फल वैसे ही घर दूजे के इस टेवे में होते हों,

यह बृह० का असल मकान है चन्द्र ऊँच करता है तो बृह० का दौलत है इस राशि को नीच करने वाला कोई ग्रह नहीं। बृह० को इस लिए गुरु माना है और बालबुद्धि में सब ग्रहों से दर्जा अव्वल या अदर करने की बात में नं० एक पर माना है। देखने से मालूम होगा कि राशि नं० 2 बृष के घर का मालिक शुक्र (मिट्टी या औरत) है जिसे लक्ष्मी का अवतार माना है। यही घर बृह० की कुण्डली में दौलत वगैरह का लिखा है बैल पर साधु की सवारी, जिसकी पैर पर सवार होवें। इस घर को सब ग्रहों ने इज्जत से देखा है और इस राशि का नीच ग्रह है न ही शुक्र या लक्ष्मी ने किसी राशि का नीच किया है यानि नीच की करने वाले ग्रहों के नामों में शुक्र का नाम कहीं नहीं मिलता, लक्ष्मी को इस लिखते हुये नीच माना कहा गया है और इस घर में सिर्फ गुरु को ही बिठाया है। सब ग्रह खाना नं० 9 से लिखें लिखा हुआ तमाम फल उम्र के आखिरी हिस्सा में देंगे। यानि खाना नं० 9 में अगर शनि का फल 60 वर्ष लिखा है तो वो उम्र के शुरु की तरफ से 60 वर्ष बुढ़ापे की तरफ को होगा और यही शनि खाना नं० 2 में 60 वर्ष होगा मगर मौत के दिन की तरफ से पीछे जन्म दिन की तरफ को गिन कर। इसी तरह सब ग्रह असर देंगे। वृषभ राशि बैल, घर का मालिक शुक्र है, सफेद झण्डा लिए जो बृह० का दुश्मन है मगर अमानत की हवा या बृह० दुश्मनी इस से नहीं करता।

अंगुलियाँ (लम्बाई चौड़ाई, सीधी टेढ़ी) वगैरह माथे पर या तिलक की जगह, गुदा या टट्टी की जगह, स्वाभाव सर्द-गुरु०, गुरु गुप्ती किस्मत, गुरु-स्वाभ, घर की किस्म यानि गुरुद्वारा बैठक घर है या फकत खाता वगैरह, व सूरत का मतलब, सूरत बाबत व सूरत के अपने घर का हाल, शान बना कर पैदा होने वाले पेड़, रिश्तेदारों से पाई हुई चीजें मार्फत स्त्री वगैरह, या स्नेह मुफ्ताकी ताल्लुक मुतल्लका बृह० स्वभाव (केतु) गुरु, मोह माया, दौलत इज्जत शरीफाना शरीफाना स्लोवत, आयडा पैर के नाम, बुढ़ापे में खुशहाली व हवाई महल, पवन अंगु जाती कमाई अट्टा मीठा अर्क, जन्म मरण का स्वभाव, स्त्री ताल्लुक माता गुरु, मासी फूफी बेटा या मशूका औरत वगैरह। रिश्तेदारों से दौलत, गृहस्थ-ससुराल, बृह० या शुक्र जैसे हों वैसा ही फल होगा। तमाम ग्रह बृह० के पैर दाबा होंगे यह लेख है खाना नं० 8 का और लेख या इस घर लग्न नं० 2 का मुनिफ होगा मंगल-बद। यही रंग सफेद खाकी। बृह० खाना नं० 2 व 8 के 16 का फैसला खाना नं० 8 को साथ लेकर होगा। इस घर में मंगल बद के अच्छे ग्रह और पापी ग्रह खुद टेवे वाले पर बहुत असर न देंगे यानि इस घर में बैठा हुआ राहु भी बृह० के मातहत होगा। इस घर के ग्रह आखिरी उम्र में नेक फल देंगे।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ॐ

कुण्डली का खाना नं0 2 हस्ते ब्यान में बाकी तख्तों में राहु केतु की बैठक का मैदान, सआलीई ग्रह की जगह, पेशानी, खाना नं0 6 और फिर खाना नं0 12 दोनों का बीच माथा खाना नं0 2 होगा। भवों के ऊपर और दिमाग की हद के नीचे । नाक के मुताबिक 90 डिग्री पर सर और भवों को मिला हुआ खत या रेखा दिमाग के हिस्सा को पेशानी से अलग कर देता है। पेशानी होगी। पेशानी पर निशानात का असर सिर्फ उस पर होगा जिस का कि उस रेखा में लिखा हुआ है। पेशानी पर सब की मुश्तर्का किस्मत लिखी है। दिमाग का खाना नं0 35 हमेशा जमाना की हवा से टकराता और कुदरती किस्मत पर ग्रह0 का असर डालता है। इसके पीछे खाना नं0 20 सूर्य और खाना नं0 21 चन्द्र चमक रहे हैं। जिन दोनों के ऊपर खाना नं0 12 शनि का घर है दिमाग के तमाम सात [illegible] में पूरे तौर पर मुकम्मल हो जाते हैं गोया 7 ग्रहों का असर 12 राशियों में हो जाता है और 35 साल में तमाम ग्रह अपना दौरा पूरा कर लेते हैं। 12 साल तक बच्चा की रेखा का इतबार नहीं और 12 साल के बाद किस्मत के चमकने की उम्मीद और 35 वर्ष के बाद दूसरा चक्र माना गया है। यह बातें दिमाग के दाँए बाँए हू-बहू एक ही हैं। दाँया-बाँया हाथ नेकी-बदी, सफल-असफल, भलाई बुराई तदबीर-तकदीर, राहु-केतु, हर-जाना, सब [illegible] कर दो पहलू जाहिर करते हैं। इन्सान का जाती हाल या इन्सान का कुल दुनिया से ताल्लुक और सब की मुश्तर्का किस्मत का मैदान या माथा हर शख्स अपने साथ लिए फिरता है खाना नं0 2 को पेशानी माना है। पेशानी पर तिलक लगाने की जगह ; दोनों भवों का बीच व नाक का आखिरी हिस्सा का सीधा। अलग पेशानी या खाना नं0 2 की असली जगह है। इस तिलक के निशान की जगह छोड़ कर बाकी तमाम पेशानी की जगह खाना नं0 2 का बाकी मैदान है इस बाकी मैदान में राहु केतु की बैठक या खाना नं0 8 का असर भी माना गया है। खाना नं0 2 का यह मैदान खाना नं0 6 को भी देखता है। मुलाहजा तिलक की जगह ; ग्रह0 का खाना नं0 2; राहु केतु मुश्तर्का बैठक की जगह ; सआलीई ग्रह की राशि भी है; का दरवाजा है। दूसरे शब्दों में खाना नं0 8 को राहु केतु की शनि के साथ होने की बैठक गिनें तो इस बैठक या यूँ कि नीचाव खाना का दरवाजा खाना नं0 2 राहु केतु दोनों की मुश्तर्का। मगर शनि वाकैयियत मौत कायम; बैठक होगी जिस में शनि.की मौत का ताल्लुक न होगा। सिर्फ राहु केतु की असली नेकी-बदी का मैदान गुरुद्वारा, मस्जिद, मन्दिर होगा, इस धर्म स्थान का दरवाजा दोनों भवों की बिल्कुल बीच जगह होगी जिस का मालिक ग्रह0 है जो दोनों जहान का मालिक है जिस के रास्ते की बाबत के दोनों सिरों पर सूर्य और शनि ; दिन- रात; मिलते हैं। यानि दुनिया के बाहर खाना नं0 8 और दुनिया का अन्दर खाना नं0 7। के साथ ग्रह0 की दूसरी ताकत खाना नं0 5 मुतअल्का और खाना नं0 9 [illegible] का दरम्यान जाता हाल खाना नं0 1 या चन्द ग्रहों के बाद 1,7,4,10। गिना, थोड़े शब्दों में जिस तरह खाना नं0 4 ने अपनी नेकी न छोड़ी थी इसी तरह ही खाना नं0 2 ने कुल दुनिया से ताल्लुक न छोड़ा अगर शनि तमाम जिस्म का बीच था और चन्द ग्रहों के खानों में खाना नं0 4 बच्चा के साथ लाए हुए खजाने का भेद था तो चेहरा पर तिलक की जगह

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

.. दुनिया में बचाव के लिए बाकी सब तरफ से मिलने मिलाने वाले अज़ीज़ों का बेटी खाना नं० 2 हुआ इस दो खानों यानि खाना नं० 4 और खाना नं० 2 का मुश्तर्का असर किस्मत का करिश्मा हुआ। जो ग्रह फल व राशि फल दोनों का सबे ख्याल भी किया जा सकता है खाना नं० 4 कहलाता है चन्द्र को, खाना नं० 2 कहलाता है बृह० को, दोनों मिले मिलाए । माता-पिता। वाल्देन या अकेला बृह० जो दोनों जहानों का मालिक है, होगा। जो बच्चे को मदद देने के लिए खाना नं० 5 में सूर्य के साथ और खाना नं० 11 में शनि के साथ जा मिलता है बृह० की इसी लम्बाई को सब की लम्बाई मिलते हैं ख्वाह चेहरा की कोई ख्वाह पेशानी की। पेशानी की चौड़ाई कुल चेहरा की लम्बाई का 1/4 से होती है। पेशानी की इस मिक्दार से जिस कद्र चौड़ाई बढ़े इसी कद्र नेक असर ज्यादा बढ़े और मुबारक होवे। पेशानी की चौड़ाई खाना नं० 2 के बृह० से या खाना नं० 2 से मिल चन्द्र केतु का साथ होवे इसी कद्र पेशानी चौड़ी होगी। जिस कद्र कम असर या ताल्लुक केतु का खाना नं० 2 से हो इसी कद्र पेशानी लम्बी होगी। जिस कद्र पेशानी की चौड़ाई हो इसी कद्र नेक असर ज्यादा हो। तमाम मुल्का दुनिया का मुश्तर्का नेक जब बृह० के साथ या बृह० के घरों में हो तो पेशानी कुशादा होगी। पेशानी का ऊपर का हिस्सा जिस कद्र बाहर को उभरा हुआ होवे इसी कद्र ज्यादा दौलत-दरयाफ्त और बात चलन उम्दा होगा। खाना नं० 2 का असर खाना नं० 6 के रास्ता खाना नं० 12 में जाके ही पेशानी का ऊपर का हिस्सा मुराद होगी। पेशानी का निचला हिस्सा जिस कद्र बाहर को उभरा-हुआ होगा इसी कद्र दौलत-जायदाद ज्यादा नेक तरफ काम करने वाली होगी। खाना नं० 8 का असर खाना नं० 2 की मार्फत खाना नं० 6 में जावे। पेशानी पर त्रिकोण, तराजू, मछली, त्रिशूल, अंकुश, पद्म, पंखा, तलवार या परिन्दे का निशान कोई भी एक हो तो अजीजों व रिश्तेदारों का सुख न हो। कौए के पाँव का निशान हो तो कम उम्र, मन्द भाग्य होगा, खाना नं० 2 में खाना नं० 8 के मन्दे ग्रहों का असर मंगल बद वगैरह का मिलने से मुराद होगी। पेशानी पर टूटी-फूटी लकीरें बहुत हों या उन का झुकाव नीचे की तरफ ... नाकिस हों तो अल्प आयु होगी। यानि कम उम्र होगी और जिन्दगी उम्र के हर आठवें साल में 64 साल तक खतरा में हो। खाना नं० 2 में बृह० या केतु के दुश्मन ग्रह, राहु या ज्यादा लकीरें हों तो नुकसान होगा। 7 मन्दे ग्रह उम्र 50 साल, पेशानी पर सुर्ख रंग नाड़ियाँ कम उम्र होने की दलील हैं। खाना नं० 2 में मंगल बुध या सूर्य बुध हों, सफेद रंग की नाड़ें मुबारक होंगी चाहे मर्द की चाहे औरत की हों। खाना नं० 2 में अकेला बुध या राहु बृह० मुश्तर्का हों, तिलक की जगह छोड़ कर पेशानी पर निशान जब खाना नं० 2 हर तरह तरह से और हर तरफ से । खाना नं० 8 की दृष्टि वगैरह। खाली हो तो खाना नं० 2 को तिलक की जगह गिनते हैं। खाना नं० 2 में ग्रहों का असर मय खाना नं० 8 के पेशानी पर त्रिकोण या ┬┬ हो तो मुश्तरका आमदन हाल होगा। पेशानी पर तिलक की जगह केतु का निशान खाना नं० 2 में हर तरह से अकेला केतु।

<u>खाना नं० 2 के ग्रह:-</u> खाना नं० 2 के ग्रह बुढ़ापे में अपना असर नेक करते हैं हाथ की हथेली पर दांए दिखना हाथ पर जिस पर जिस ग्रह का निशान हों तो ग्रह हमेशा ही नेक फल देगा या खाना नं० 2 के ग्रह हमेशा नेक फल देंगे जब

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तक कि खाना नं० 8 खाली हो।

<u>हाथकी अंगुलियाँ- खास बाते</u>:- मुतलक हाथ की पाँच अंगुलियाँ होती है और अगर गिनती में छ: हों तो कम उम्र और मन्द भाग होगा वर्ना लम्बी उम्र और खुशहाल व उम्दा हाल होगा। अंगूठा जब अंगुली कहलाता है जिसका निज असर से हुआ है। बाकी चारों अंगुलियां बारह राशियों की मालिक है जिन से तमाम दुनियावी कारोबार मुतलका है हर एक अंगुली की जुदा जुदा ताकत है और अंगुली हर एक पोरी या राशि का जुदा जुदा असर है।

<u>अंगूठा</u>:- अंगूठे की लम्बाई अंगुलियों के साथ मुतलका है और इनके असर में कमी बेशी कर देती है।

1| अंगुलियों की नाखुन वाली पोरी: रूहानी ताकत। बीच वाला हिस्सा- दिमागी ताकत। निचला हिस्सा -- जिस्मानी ताकत।

अनामिका मध्यमा से बड़ी-- दौलत-पसन्द मगर आखिरा कंजूस।

जानना है! मध्यमा अनामिका से बड़ी:- दानशमन्द ××× ताकत इज्जत मगर दुनियावी हाल।

तर्जनी मध्यमा से बड़ी:- पादरी या मुल्की तरह के ख्यालात रखने वाला सोच कर कम खर्च करने वाला।

अनामिका तर्जनी से बड़ी:- मशहूर जिन्दगी वाला हो।

तर्जनी और मध्यमा बराबर:- हैसियत वैसा जमाना में एक बहादुर होगा।

तर्जनी और अनामिका बराबर:- मशहूर जिन्दगी का मालिक हो।

मध्यमा और अनामिका बराबर :- मशहूर जौहरिया हो, पूर्व शक्ति बराबर जमा-घटा बराबर।

कनिष्का और अनामिका बराबर:- तहरीर व तकरीर में बल का मालिक।

अंगुलियों का असर लम्बाई हर एक की अपनी अपनी राशि का मालिक ग्रह अपने अपने घर:-

<u>हाथ अंगुली</u>	<u>लम्बी</u>	<u>बहुत लम्बी</u>	<u>बहुत ही लम्बी</u>	<u>बहुत छोटी</u>
तर्जनी	हकूमत	सोच विचार	हकूमत	आदब
मध्यमा	शीघ्र समझने वाला	अक्लमन्दगी	बुरे ख्याल	बेबुनियाद ख्याल
अनामिका	बरती काम	मशहूर बहुरूपिया	शौकीन ख्यालात	मशहूरी पसन्द
कनिष्का	बोलने की ताकत	तकरीर	जबान के जुबान तक छुपा ले	बेवफा
1| तर्जनी	नेक इमानदार	बहादुर	साहब तदबीर	सच्चाई पसन्द
2| मध्यमा	नेक मकसूद बच्चों के ख्यालात	वहमी	अक्लमन्द	दानशमन्द
3| अनामिका	बदचाहत	खुदगर्ज	बहादुर	लालची
4| ×नसीहत	×हाजिर×जवाब			
4| कनिष्का	नसीहत करने वाला	हाजिर जवाब	झूठी	पुख्ता राय

नोट:- नं० 1 से 4 के आगे अंगुलियों के लिये खाना नं० 8 की दृष्टि है और फल क्रमश सिरा नोकदार, चौड़ा, गोल, चपटे आदि का है।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

सीधी अंगुली का असर , कायम पर , खास:-

तर्जनी :- हकूमत की अंगुली, इरादा की पुख्तगी, मुतब्बर ख्याली।

मध्यमा:- सन्यास, उदासी, अलहदगी, गोशा नशीनी।

अनामिका:- खुद दस्ती मेहनत की आदत, मुहब्बती पेशावरी।

कनिष्का:- बोलने की ताकत , दिमाग की ताकत।

<u>ग्रहों की दृष्टि या दूसरे को देखना</u> :-

जो अंगुली टेढ़ी हो जावे वो अपनी ताकत छोड़ देती है और जिस अंगुली की तरफ झुक जावे उसी अंगुली का असर पैदा होगा। अंगुली के झुकाव से मुराद यह है कि अंगुली की बनावट में टेढ़ापन हो।

अंगुलियों के नाखून वाले सिरे से नीचे की तरफ जड़ तक अगर गाजर गाजर की तरह दर्जा-बदर्जा मोटी होती जावे और इन को बाहम मिलाने से कहीं में कोई सुराख न रहे तो सारी उम्र आराम युक्त, मुराद पूरी होगी, उम्दा हाल, मजबूत जिस्म होता है। तंग दस्ती कभी न होगी यानि वाकत जरूरत रुपया का इन्तजाम मौजूद होगा, अमूमन पैदा होगा।

अंगुली	झुक जावे जिस तरफ	असर होगा
तमाम	तर्जनी	पक्का इरादा, आज़ाद तबीयत, बड़े का ख्याल हौसलामन्दी उम्मीद का आदमी होगा।
तर्जनी	मध्यमा	मुनदर्जा बाला का उल्ट होगा।
तमाम	मध्यमा	हद से ज्यादा उदासी ,अलहदगी पसन्द।
मध्यमा	तर्जनी	दुनिया को छोड़ बैठे वाला, मुर्दाख्याल उदासी।
मध्यमा	अनामिका	एक लम्हा खुश दूसरे लम्हा उदास अजीबो गरीब तबीयत।
अनामिका	मध्यमा	बुरी शोहरत पसन्द, मध्यमा की हालत।
अनामिका	कनिष्का	दस्ती काम व्यापारी, पैसे का पुत्र
कनिष्का	अनामिका	असली लियाकत दस्ती काम को तिजारत से ज्यादा अच्छा समझने वाला।

हाथ की अंगुलियों के नाखुन :-

नाखुन नौ महीने में पूरा हो जाता है इस लिए कटे हुए नाखुनों से पता चल जाएगा कि बीमारी किस समय हुई थी। मुख्तलिफ ग्रहों का नौवें खाने पर (दरम्यान में 7 छोड़ कर) असर होता है जबकि 9वां खाली हो वहां कोई असर नहीं मिलते।

<u>नाखुन</u>	<u>असर होगा</u>
मोटे चौड़े	इल्म व हुनर वाला, शर्मसार हो। पट्ठों की बीमारी हो।
छोटे	तंगदिल, लालची, जल्दबाज, रंजिदा।
बहुत छोटे	कम अक्ल, जल्द बाज़ ।
दरम्याना	अच्छे और मुबारक असर वाले।
लम्बे	फेफड़े और छाती की बीमारी , जिस्मानी हालत कमज़ोर।
पतले और मुड़े हुए टेढ़े	नाजुक हालत, खराब आदतों में।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

वस्तु का रंग	असर होगा
सब्ज़ रंग	शरीर ,जवानी
नीला	खून की कमी, बीमार
सफेद रंग	खून की कमी, बीमार
ज़र्द रंग	दिल की बीमारी
स्याह रंग	उम्र भर कम दौलत
मोती या सिक्का का	परेशानी

पक्का घर नम्बर तीन (3)

घर तीजा है पक्का मंगल ~~शनि~~ धन दौलत के बंदे का,
ब्याहता व अठारह नाते अपने या चोरी अय्यारी का,
असर नज़र और जंग व जदल सब- महल भी उसके लेते हैं,
बहुधा बहाना-ए- मस्ती इत्तफाक बैठा भी मिलते हैं,
उसकी जवानी या खून जिगर का तख्त दरख्त, आकाश भी है,
खुली गली और राहें चहुँ ओर सामान आराम सफर भी है,
शेर दरिन्दे इस घर रहते- त्रिलोकी भी होता है,
ताकत बच्चा पैदा करने ससुराल अहवाल अकेला है,
इस घर का जो रंग है खूनी असर होता भी खूनी है,
ग्रह जो इस घर नहीं पर होए कहलाता वो कच्ची है
स्त्री ग्रह जब नीचे आवें औरत भी तो मर्द कहलावें
शुक्र बैल और चन्द्र साधु मर्द बढ़ेंगे बढ़ेगी आयु
मंगल ~~शनि~~ मंगली न होगा शिवजी होकर दया करेगा
स्त्रियों की भी पूजा होगी नीच काल जहाँ उत्पत्ति होगी
होगी तो खूब उम्दा होगी मर न होगी चोरी न होगी
बुध ~~जैसे ही~~ अब नीचे शनि और मंगल देखे कहीं भी इसके बैठे हों
फल वैसे ही घर तीजे के उस देखे में होते हों।

खाना नं० 2 :-

त्रिलोकी कायम खाना नं० 3 के खाना नं० 9 में थी ही ग्रहों से जाहिर हुआ, जहाँ कि गैबी और ज़ाहिरा दोनों जहान का मालिक बृह० था जिस ने दुनिया को यह खबर देने के लिए मुसाफिरों का घर शुक्र का खाना नं० 2 को पक्का घर बनाया जिस में आने के बाद चले जाने का पैगाम या मौत का हुक्म भी। खाना नं० 8 से आने लगा। इस गुरु फकीर या बृह० ने यह भेद कुत्ते के ज़रिए खाना नं० 6 में भेजा। कुत्ता बोला तो इसकी आवाज़ फिर वापिस आसमानी खाना नं० 12 में जा पहुँची इस भेद को जो तीन खाना नं० 3 के ग्रहों और खाना नं० 8 से खाना नं० 2 में ले गई वो दृष्टि या मंगल शनि की नज़र का होना कहलाया इस नज़र को बृह० ने पहचाना और अंधे हाथी दुनियावी दरवेश कुत्ते की आवाज़ बुध ने जाहिर कर दिया। बृह० ने गैबी बात पहचानी, केतु ने बुध के रास्ते धन दौलत के घर के खाने में खबर दे दी। दोनों दरवेशों की इस ताकत को बुध ने जाहिर किया इस लिए बुध का आकाश या आवाज़ नक्कारा खल्क को आवाज़-ए-खुदा कहा गया या बुध सब का भेद खोल देगा। अगर बुध अच्छा तो शुक्र का बुरा फल न होगा इसी लिए बुध अपना फल शुक्र में पहुँचा देता है ताकि बुध के बगैर शुक्र

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

पामाल होगा और शुक्र के बगैर बुध दीवाना पागल कुत्ता होगा। जो अपने मालिक को छोड़ कर और अगर वो अपने ही घर नहीं तो पागल हुआ बन्दा हो (यानि खाना नं० 12 में) तो मालिक को भी काट लेगा। चोथा बुध ही सब ग्रहों का मैन्दी है और बृह० सब को जानने वाला है। यह दोनों ही ग्रह राहु-केतु के सर और पांव को पहचान सकते हैं क्योंकि दोनों मुश्तर्का ग्रह यानी बच्चा माने हैं मुश्तरका खाना नं० 3 के ग्रह बाखाना नं०9 (या नं०) ✱ उसकी हालत के बनाने वाले होंगे यानी जो नं० 3 के ग्रह खुद खाना नं० 11 की गन्दी हालत (दुश्मन ग्रह के सबब) में ही क्यों न हों या यूं कहें कि खाना नं० 3 कुण्डली वाले पर मन्दा न होगा अगर दुश्मन ग्रह की मुतल्लका चीजों का ताल्लुक मन्दा हो तो देखो।

दुनियावी रिश्तेदार- बहिन, भाई-बन्धु, साले, बहनोई, ससुर का भी असर (पत्थर फाड़े या तारे) जिगर खून आम खुशी गमी की औसत हालत या खुशी गमी की रेखा, स्वभाव नर्म-नर व नारी होगा। दरिन्दे शेर जंगली जानवर, भाई का घर, नाप-पाने का मकान, मकान के सामने-साथ वाले आम रिहायश अन्दरुनी, दरख्त की शाख व तबादला होगी। जिस्मानी ताकत मुतल्लका बृह० अगी चोरी, अय्यारी, यारी, मुहब्बत, मुलाकात, जंग व जदल, नेकी, इन्साफ, मुनिसफी या फराहद मन्सूबी, दुर्भाग्य ताल्लुक, बच्चा पैदा करने की ताकत, परिवार कबीला का बढ़ना व बढ़ाना, उठती जवानी का हाल, आकाश, दुनिया से जाता के चले जाने का रास्ता, दूसरों से ×××× की मदद से पैदा करना, दोस्त यार, मददगार आदमी मुख्तलिफ, बुध शनि और मंगल जैसे हों वैसा ही फल होगा। इस घर में चन्द्र शुक्र, शनि राशि फल का होंगे। मंगल के बुर्जों की बर्थ का असर जाने से बृह० व शुक्र का जाती फैसला तबाह होगा। यह रेखा से खाना नं० 11 का और रेखा या नं० 3 का मुनाफा होगा बुध चन्द्र, मंगल मर्द औरत की जोड़ी या शादी ताल्लुक व उम्र का साथ जाहिर होगा मुतल्लका चीजों या ताकतों का एक ही सबूत या एक ही नजरिए में इकट्ठे हो कर काम करना मानिन्द मर्द औरत के जोड़े से बच्चा बनाना।

चौथा घर नम्बर चार (4)

चौथे चन्द्र को पेट माता और ठण्डी रोशनी माता है.
चार तरफ का पानी देखा दूध समुन्द्र दरिया है
दिल सफर, माता, धरती, घोड़ा, तरफ शुमाली मशरक है
चरिन्दे चावल दूध पाताल जवानी उम्र आती है
तहरीर दौलत या वक्त जवानी रंग मिला है चांदी का
अलविदा मोती घर माता का रस होता है शान्ती का
मुख्तलिफ तबीयत फर्क मकानों ताल्लुक मिलते हैं नदी का
हर सुख सदका जो चोरी किमात भी देते हैं जो जी का
राहु राहु केतु घर चौथे में पाप से डर सब करते हैं
नाहें स्वाह न नाहें मर्जी बदन पाप की करते हैं
ग्रह चौथे के रात को जागें या जागें वो दुनिया में
मन्द कोई न हो जब करता जा नाहें वो बुढ़ापे में
एक अकेला ग्रह स्वाह कोई घर चौथे जब बैठा हो
फल बुरा न वो कभी देवे स्वाह चन्द्र का दुश्मन हो

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

घर चौथे जब बुध हो खाली आखिर उम्र तक उत्तम हो
चन्द्र का फल घर ही देवे ख्वाह चन्द्र बुध मन्दी हो
घर चौथे में ग्रह जो आवे तासीर चन्द्र की होता है
असर मगर उस घर में आवे शनि जहाँ कि बैठा हो
गुरु रवि और चन्द्र देवे कहीं भी जाके बैठे हो
फल वैसे ही घर चौथे के उस टेवे में होते हों

माता का ताल्लुक, दिल, दूध, धन-दौलत, कुदरती तौर पर तबीयत का झुकाव क्या होगा। चक्र, शंख शक्ल या अंगुलियों पर "औ" का निशान शान्ति स्वभाव नर्म तर माहिक्र पानी होगा। तस्वीर खाली, माता का पेट, जिस्मानी हालत का असर घोड़ा, दूध वाले जानवर, खाकी या पानी के जान-वर, माता खानदान मामी, खुशी का मकान खाली तह ज़मीन बहती माता, स समुन्द्र पार या मुसुन्द्र का सफर, खुशी, गृह० का धन दौलत, रात को फूल के रोशनी, बजाजी कपड़े का काम, रूहानी ताकत मुतल्का बुर्ज, बहुत बजाजी, शाव करें चन्द्र की चीजें, बस, चर्चों का ताल्लुक रूहानी कारोबार, मुआल-ताल्लुक, मुताल्लुके चन्द्र जैसे हो वैसा फल होगा, शुक्र मंगल शत या संकतीक, केतु राशि फल का होगा ग्रह असर माहिवर रफ्तार ठण्डा होगा। यह टेवा के खाना नं० 10 का और टेवा या नं० 4 का मुखालिफ शनि होगा। बुध का सफेद गोल, चन्द्र राहु केतु इस घर में घर छोड़ने का हल्फ लिए होते हैं जिस तरह रात को जागने वाले आँख के होशियार होते हैं इसी तरह ही इस घर के ग्रह रात को जागते या अपना असर रात को जिया करते हैं या वो ग्रह आखिरी वक्त जब कोई मददगार न हो मदद किया करते हैं। बुढ़ापे में तो खास तौर पर मदद किया करते हैं।

<u>पक्का घर नम्बर पाँच 15।</u>

घर पाँचवां ईशान गुरु का तेजु तपस्या होता है
हवा, रोशनी, व लड़के, पोते, वक्त आइन्दा होता है
औलाद जन्म ता उम्र बुढ़ापा मदद वक्त औलाद से है
पाँचों ही इन्द्री, हालत उनका धर्म शोहरत देती है
अक्ल शाह बना हो हाथा इल्म ब्रह्म इबादत भी है
देवन्दी जो पौधे मिले तो खाली जगह पर जगती है
रोशनी पहली घर पहले की हवा अच्छी घर पाँचवें है
दोनों चलती इस दी उठती दीवार गमरती दुलहनी है
उम्र औलाद की देहल अपनी घर 5वें से लेते हैं
घर 3-9 या 4 हों चन्द्र असर बुरा 5 मिलते हैं
रवि गुरु दोनों से कोई घर 10वें जा बैठा हो
पाँचवें घर ब्याह होरत उसका ज़हरी मुजमल होता हो
गुरु रवि और राहु केतु कहीं भी इकट्ठे बैठे हों
फल वैसे ही घर 5वें के उस टेवे में होते हों

ट औलाद का ताल्लुक, औलाद ब्रहेला शोहरत, औलाद का धर्म, दौलत व किस्मत, औलाद की सुख, वक्त जन्म औलाद, औलाद व अपने सुख का ताल्लुक, अंगुलियों के बीच खाली जगह का हाल, अक्ल व इल्म, अंगूठे पर "औ" का निशान, तंदरुस्ती वगैरह. स्वभाव नर्म सुख, आलसी, औलाद के बजाय

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

सहन — आने जाने का रास्ता

बुध मकान. वैषहदी पौधे, वकालती ताकत, मुकाबला दूर्व, रूह, रोशनी, हवा, सायार इन्साफ, हवाई हमला, पांचों इन्द्रियां हवास, तेल की सामग्री, कामों का सुख अगर बृह० या सूर्य के मोहरा ग्रह बैठे हों, मंगल पक्का का सामान, आग का खौफ अगर दुश्मन ग्रह हों, किस्मत की नेक रूहानी बरकती औलाद के बुध जिन से अपने बुढ़ापे तक का बराबर मददगार होते जाना और दूसरों की मदद से ~~पैसा~~ पैदा करता चीजें मुतल्लका औलाद है, अगरचे बृह० सूर्य, राहू केतु बैठे हों वैसा ही फल होगा। बृह० सूर्य रात्रि फल का होगा यह सहन के खाना नं० 9 का और केतु केतु नं० 5 का मुतिफक होगा सूर्य/सूर्य का सुर्ख पक्का, पीला, बृह० सूर्य मुतल्लक।
पक्का पीला (सूर्य + बृ०)

पक्का घर नम्बर है "6"

" घर छठे पाताल में बैठे केतु (पुत्र) बुध (पुत्री) कहते हैं
दुश्मन ग्रह पास होते हुए भी वो नहीं लड़ते हैं
केतु लड़का तो बुध है लड़की बुध (पुत्र) दूसरे बेटा की साथी है
रिश्तेदार हो जाता पिता के अक्ल के अदल बदल बुध बातें है
बुध देता नहीं शुक्र करता केतु भी धोखा देता है .
अकेले अकेले ही बैठे दोनों उम्दा जिस्म चेहरा बनता है
आकार चेहरे का गर बुध से हो, खूबसूरत हो केतु से
दो ही ग्रह पाताल में होते बैठे तरफ हों रह ही के
खुलासा ख्याल, कद कामत लम्बा सब हथेली उंगली की
बनाई व मोहर या हो उम्दी जेबी या रफ्तार गुफ्तार हो
माता नानी या मामू उस के हमदर्दी कोठी केतु बुध ही है -
दर्द सिर्फ मकान का हो, बायला पेट बल्ली है
बरतान होवे या हो साहूकारा पेशानी चेहरा होती है
तरफ मुकाम या हो कोरा पानी फूल मुतल्लिका होती है
आकार परिन्दे हाथ के नाखुन बुध औलाद का होता है
माजरा भाव अपार हो दुनिया सहारा हल भी होता है
केतु की चीजों पर केतु हो मन्दा पर मन्दा न हो दूसरों पर
बुध भी नहीं गर साथी हों बुध मन्दा बुरा दूसरों पर
उम्र मन्दी इस ग्रह की होवे घर छठे जा बैठे जो
साथ उपाय करें न उत्तम ग्रह फल फिर भी हो
फल औलाद का गुरू रवि पर, रवि न दौलत हो
गुरू दूर्व से कोई बूझे शुक्र का फल बारहवें हो
बुध केतु और शुक्र देखे कहीं भी इकट्ठे बैठे हो
फल वैसे ही घर छठे के इस देवे में होते हों

बन्द

रफ्तार गुफ्तार, माता पिता, या औलाद के जरिए बन जाने वाले रिश्तेदार जिस का रिश्तेदारी ताल्लुक बुध कुण्डली वाले के ताल्लुक के बगैर हो। इन्साफ बुध जिस ग्रह का है। चेहरा व पेशानी की हालत बुध की चीजें, हमदर्दी कोठी, मामू, लड़की, दुश्मन, फूल की खुशबू या बदबू कोरा पानी, हवाएं, हाथ के नाखुन का हाल, मकान के दर्द सिर्फ की चीजें, पट्ठे दाड़ें, आम रिश्तेदार, स्वाभाव गरीब वाली, लड़के का सुख, सुरत-सुरत। केतु की चीजें

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

हमदर्दी सच्ची, खालस बट्टाई, कच्चे कागज व हथेली व अंगुलियों की, तमाम सब का हाल चाक व माथा मय बृह० बुध या बृह० केतु मुश्तर्का परिन्दे मोहर बालक घर, आम बर्ताव व दस्तकारी, हाथ सब्जी, फल पत्र, जिस्मानी ताकत मुतल्लका सूर्य, मरने के बाद बाकी रहे हुओं का हाल, आयन्दा, नेकी परोपकार में अन्दरूनी अक्ल, ह कुदरती रहना शाश्वत भाव अपार सकारा बल्का, आती बीमारी का ह असीं हस्ती रिश्तेदारों से पाई हुई चीजें, मुताल बुध केतु शुक्र जैसे हों वैसा ही फल होगा। मंगल, शनि राशि फल का होगा, नेकी फलता-फूलता, केतु की चीजें। यह केवल है 12 का, केवल या 6 का मुखालिफ राहु होगा, बच्चा, जिसका वास्ता बुध केतु, बुध का उत्तम फल, केतु का बुध केतु की चीजों पर मन्दा मगर दूसरों पर अच्छा अगर बुध की मंदा हो तो केतु बुध केतु की चीजों व दूसरों पर मन्दा होगा। मगर बुध का बुध की चीजों पर नेक होगा। खाना नं० 2 व 6 का फैसला खाना नं० 8 को साथ ले कर होगा।

<u>चेहरा</u>:- आकार बुध का चेहरा की पाकदिली खूब खूबसूरती

केतु: खाना नं० 6 । चेहरे पर तमाम ग्रह:- बृहस्पति = नाक व माथा, सूर्य = दाईं आँख की पुतली, चन्द्र= बाईं आँख की पुतली, शुक्र = रुखसारा, मंगल नेक= ऊपर का होंठ, मंगल बद= नीचे का होंठ, बुध= दाँत, नाक का, गलासरा गांठ, शनि = बाल । भवों व पलकों के बालदार, राहु : ठोडी केतु = कान ।

चेहरा की चौड़ाई कुल चेहरा की लम्बाई का 2/3 अगर केतु के तीन हिस्से तो तीन हिस्सों में से दो हिस्से नेक होती है यह चौड़ाई जिस कदर मिकदार से घटे उसी कदर नेक असर ज्यादा बढ़े और मुबारक हो। चौड़ाई केतु की ताकत, लम्बाई बृह० की ताकत । सूर्य-शनि दोनों का मालिक गुरु। गोलाई बाहर को उभार मुलहकी बुध की ताकत, ऐसी गहराई नीचे अन्दर को दबना, राहु की ताकत, ऊपर की ताकतों का घटना बढ़ना ग्रहों की दृष्टि से दोनों की ताकत के घटने या बढ़ने से मुराद होगी।

चेहरा की चौड़ाई -- खाना नं० 6 के केतु से या खाना नं० 6 से जिस कदर बृह० का साथ हो उसी कदर चेहरा लम्बा होगा। जिस कदर कम असर या ताल्लुक बृह० का खाना नं० 6 से हो उसी कदर चेहरा चौड़ा होगा। जिस कदर चेहरा की लम्बाई ज्यादा उसी कदर नेक असर ज्यादा हो। साथ लाई हुई जाती किस्मत का। चौड़े चेहरा में बृह० की बजाए राहु के साथ शनि की बु मुर्वित ताकतें होंगी। लम्बा चेहरा बृह० के साथ व ताल्लुक से केतु में शनि की हमदर्दाना ताकतें होंगी। अक्सर कम होंगी और जिस कदर चेहरा चौड़ाई से लम्बाई वाला होता जाए उसी कदर यह बुरा मनहूस ताकतें कम होती जाएंगी और नेकतर बढ़ेगी या लम्बे चेहरा वाला हमदर्द होता चला जाएगा।

मर्द का चेहरा व मुँह दोनों ही लम्बे हों तो नेक बख्त होगा।
मर्द का चेहरा व मुँह दोनों ही चौड़े हों तो बुद मर्द होगा।
औरत का चेहरा लम्बा व मुँह लम्बा हो तो बद बख्त होगी।
औरत का चेहरा व मुँह चौड़ा हों तो नेक बख्त होगी।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

पक्का घर नम्बर 7 शुक्र

घर सातवां है पक्का शुक्र घूमता बुध ऊपर आता है
दोनों इकट्ठे चलती चक्की - जिसका शुक्र [illegible] आता है
बुध सातवें का चक्र कुम्हारा मिट्टी शुक्र होती है
दोनों घुमायें [illegible] तोड़े की घर आठवें जो होती है
शुक्र बुध जब दो हों इकट्ठे शनि भी उम्दा होता है
पर दौलत की कमी [illegible] मिट्टी से मिलता है
तरफ बुध-मंगल नाम औरत नाम [illegible] है
अहवाल हथेली [illegible] मिट्टी है, तराजू शादी [illegible] है
फल [illegible] पत्थर, घर लड़कियों के देते हैं
जैसा शुक्र हो वैसे [illegible] निकले पत्थर से होते हैं।
[illegible] बुध हो, हो रिश्ता लड़की, [illegible] नेक हो तो
मोक्ष की कुंजी है

[illegible] हो अपनों से मौत हो साथ की
[illegible] व अक्ल अपने दौलत [illegible] की
घर पहले के साथी होते सातवां कोरा होगा
[illegible] ही सूर्य [illegible] आठ जब हो होगा
शुक्र बुध [illegible] जैसे कहीं भी इकट्ठे बैठे हों,
फल वैसे ही घर सातवें के [illegible] में होते हों

नेक ख्याल जहां का साथी, शुक्र की चीजें, शादी, जायदाद (मनकूला वगैरह) [illegible], जिस्म की [illegible], जिस्म के गुनाह, हवेली की हर हालत का हाल। स्वभाव [illegible] घर वाली, औरत, लड़की, [illegible], बुध की चीजें, [illegible], चेहरा की चमक या रंग, गाय, रिश्तेदार, [illegible] घर, लड़कियों के रिश्तेदारों के घर, मिट्टी के [illegible], [illegible] या सफेद [illegible], [illegible] का [illegible], अपनों से पैदा होने वाले रिश्ते, [illegible] ताकत [illegible] बुध, शुक्र, [illegible] की [illegible] व [illegible], पराई दौलत का मिलना, [illegible] बुध की साथी, [illegible] [illegible], व्यापार, [illegible], [illegible], [illegible] अक्ल, दुनियावी ताल्लुक में, [illegible], [illegible], जायदाद के लिए [illegible], [illegible]-मंगल, शुक्र [illegible], [illegible] बुध जैसे हों वैसा ही फल होगा। [illegible] होगा। यह [illegible] है [illegible] और [illegible] या न० 7 का [illegible] होगा [illegible] रंग [illegible] बुध [illegible] शुक्र [illegible]।

पक्का घर नम्बर आठ 8

घर आठवां है मौत निशानी [illegible] ही [illegible] हैं
[illegible] में से कोई हो आठवें मौत [illegible] हैं
अगला [illegible] घर [illegible] तो [illegible] पीठ भी होती है
[illegible] की पीठ ही [illegible] होती है
तरफ [illegible] [illegible] होती है
[illegible] बुध हो [illegible] होती है
[illegible] मंगल का [illegible] होता [illegible] हों

छत मकान से नीचे उतरे चारपाई भी मन्दी हों
घर आठवां जब नहीं पे आये 2- 6 भी आ मिलते हैं
12 ब्याह हो दूर ही बैठा फैसला अपना देते हैं
मंगल बद है शब्द से मन्त्र- मन्दा जादू मंत्र है
एक अकेला हर दम अच्छा शनि मंगल या चन्द्र हैं
घर 11 है दुनिया का अन्दर आठ को बाहर मिलते हैं
घर 11 है नींव जो आये छत गिरी ही लेते हैं
शंह का पानी या दूध हो छत पर बुध चान्दी से बांधते हैं
आतशी शीशा जब कभी चमके चश्म कहानी मिलते हैं
शनि मंगल और चन्द्र टेवे कहीं भी इकट्ठे बैठे हों
फल वैसे ही घर आठवें के उस टेवे में होते हों

मंगल शनि, चन्द्र अगर तीनों में से हर एक अकेला अकेला हो तो अच्छा फल वर्ना मन्दा फल।

उम्र रेखा का शुरू बृह० के बुर्ज की जड़ और सेहत रेखा के कटने का शनि का हैडक्वार्टर कब्रों मुकाम है। खाना न० 8- 11 में शनि का राहु केतु का ताल्लुक खाना न० 8 शनि का हैड क्वार्टर है जहाँ कि राहु केतु हेली बन्दी के कारखाने शनि को पहुंचाते है । इस घर में अगर कोई भी नर ग्रह आ जाए (सूर्य, मंगल बृह० अकेला या मुश्तर्का सिर्फ नर ग्रह ही मुश्तर्का) तो यह घर मौत का घर न होगा। यानि श्मशान का दरवाजा बन्द होगा या मौतें न होंगी। राशि न० 8 मंगल का घर या लाल जंगी झण्डे वाले का मुकाम है जिसे किसी ने फतह नहीं किया। इसकी अपनी माँ ने या चन्द्र ने ही नीच कर दिया है और खाना न० 8 लड़ाकों किया। सब के लिए ही मौत का घर हो गई है। इसी वजह से जिस्म के दिल (दिल) को अपना सारा सहारा बनाया है कि मौत से बचाता रहे। मगर चन्द्र भी पानी पानी हो कर समुन्द्र ही में चला जाता है। चन्द्र को समुन्द्र भी माना है। या मौत के डर से माता का अपना दिल भी बड़े समुन्द्र में छुप जाता है और मौत का खाना मुतल्लक नहीं होता। आखिर सब को आंख फड़कने पर (शनि के आखिरी वक्त में) रुपए के आठ आने ही मिलते हैं यानि अपनी कमाई के रुपए का आधा या हेली व बन्दी की दो चीजों से एक अठन्नी ही साथ ले जाता है जिस तरह खाना न० 8 में राहु केतु मुश्तर्का के उनके अपने दुश्मन ग्रहों का जोर पड़ता है उसी तरह ही ऐसा शख्स जिन्द पलीती और जादू मंत्रों की बारीकियों की तरफ पड़ने वाला हो।

बुध करतूत शनि की बुराई, साए- चाये, मौत अपने बुजुर्गों से मुतल्लका ख्यालात, श्मशानभूमि कोयले चीजों का जलना, मंगल बद की बुराई, बीमारी की किस्म, ख्वाबात एवं आतशी, दुश्मन, सिर्फ छत मकान, बिच्छु जंगली जानवर चीता, ऊँट, पेड़ों को तबाह करने वाला, कबूतर, कच्ची धरती, नफरती ताकत मुश्तर्का गुरु, बुध, गन्दे हाल, जिस्म को पेट में गर्मी वगैरह से हो जाए, बदहज्मी कड़वाहट, नदी हर एक का फायदा, दुनिया का बाहर, मौत जिगाती बीमारी जद्दुद, शनि-मंगल-चन्द्र जैसे हों वैसा ही फल होगा। चन्द्र राशि फल का होगा। यह सेहत है न० 2 का और सेहत या न० 8 का मुन्सिफ देगा चन्द्र, खूनी सुर्ख स्याह कर्जों रंग, खाना न० 2, 6 का फैसला खाना न० 8 को साथ लेकर होगा।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

पक्का घर नम्बर नौ 9 :-

घर नौवाँ है गुरु बुजुर्गों जड़ बनाते ग्रह नौ की
बुनियाद असली जो होवे अपना मज़ परोपकार बुजुर्गों की
उम्र दादा या बाप हो अपनी जमाता है खेल खिलाड़ी का
घर कच्चा बुनियाद पक्का हो हाल है दुनिया गैबी का
मात पिता की हालत अपनी आराम हराम की रोजी है
कर्म धर्म या पिछला जन्म हो मैदान कुदरती पानी हो
दरियाओं से गंगा हो तो पेट माता का होता है
जल उंगली पर लेते बढ़े हों मणि वीर्य भी होता है
हर हालत का वह दीवाना हवा परों से उड़ता है
एक जहाँ से दूजे चलता कई वर्ष से फलता है
जड़ बुजुर्गों की याद दोरंगी किस्मत का आगाज़ भी है
घर दूजे पर बारिश करता समुन्द्र पिता ब्रह्माण्ड भी है
तीजे घर का असर हो पहले बाद मिला घर पांच का है
पानी मिट्टी के ऊपर उड़ता असर पक्का घर नौ का है
नौवें घर के ग्रह कुल ही का असर खानदान सब मन्दा है
रुह कुल के झगड़े में लेते असल पचास अन्दर है
मंगल बद या शुक्र बुध हो मन्दे इस घर होते हैं
शनि केतु या हर ग्रह उम्दा वक्त 9 गुणा देते हैं
घर नौवें मरकज़ है कुण्डली धरती का जमहुर है
जिस्म में रुह की हरकत जिसके हाकिम सब ही ग्रह का है
गुरु अकेला जब टेवे में कहीं भी इसके बैठा हो
फल वैसा ही घर नौवें का उस टेवे में होता है।

खाना नं० 9 के ग्रह किस्मत के बुनियादी ग्रह होते हैं इस खाने में खाना नं० 3 और खाना नं० 5 के ग्रहों का असर भी आ मिलता है औलाद की पैदाइश के दिन से खाना नं० 5 का असर न सिर्फ खाना नं० 9 में जाने लग जाता है बल्कि बाप बेटे की मुश्तर्का किस्मत 70 -72 वर्ष सवाल पैदा करने लग जाता है खाना नं० 3 का असर कुण्डली वाले के अपने जन्म से ही खाना नं० 9 में मिलना जाता है। औलाद की पैदाइश के दिन से पहले खाना नं० 5 का असर खाना नं० 9 में गया तो बाप बेटे की मुश्तर्का किस्मत पर असर नहीं करता। बल्कि खाना नं० 9 की दूसरी चीजें यानि कर्म धर्म और कुण्डली वाले के अपने बुजुर्गों के ताल्लुक में असर रखता है औलाद की पैदाइश के दिन से खाना नं० 5 का असर कुल कुण्डली वाले की अपनी किस्मत (जो अब बाप बनता है) पर असर करता है। इसी तरह ही खाना नं० 3 का असर भाई की पैदाइश के दिन से खाना नं० 9 में जब जाएगा तो कुण्डली वाले के अपने बुजुर्गों के ताल्लुक में दखल देगा। लेकिन अगर इसका भाई पहले ही मौजूद हो तो बड़े भाई की किस्मत का असर कुण्डली वाले में आयेगा। खाना नं० 3 की इस ताकत की वजह से मंगल की राशि नं० 8 मंगल बद मौत से भी उल्टा देखा क्योंकि मंगल नेक व बद दोनों भाई ही हैं। उम्र के पहले 35 साला वक्त में आकर छोटा भाई भी हो और औलाद भी शुरू हो जाये तो खाना नं० 5 का असर खाना नं० 3 व नं० 8 दोनों के असर पर प्रबल होगा या अगर खाना नं० 3 व 5 दोनों ही खाली हों तो किस्मत की बुनियाद

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

पर सिर्फ खाना नं० 9 के ग्रह माने जाएंगें। अगर खाना नं० 9 भी खाली हो तो यह शर्त ही उड़ गई।

खाना नं० 5 का असर कुण्डली वाले पर उस के बुढ़ापे में होता है और खाना नं० 3 का बचपन में या यूं कहो कि खाना नं० 3 का असर उम्र के पहले 35 साला चक्र में होता है और खाना नं० 5 का उम्र के दूसरे 35 साला चक्र पर या किस्मत की बुनियाद पर उम्र के पहले 35 साला चक्र में खाना नं० 3 का असर होगा और दूसरे 35 साला चक्र में खाना नं० 5 का असर किस्मत की बुनियाद पर होगा। उम्र के दूसरे 35 साला चक्र में खाना नं० 5 का असर खाना नं० 3 के असर पर प्रबल होता हुआ किस्मत की बुनियाद पर होगा। हर हालत में खाना नं० 5 प्रबल होता है और नं० 3 नीचे दब जाने वाला खाना नं० 9 का अपना असर हर वक्त साथ होगा। पहले घरों के ग्रह बाद के घरों के ग्रहों को अपनी दृष्टि के वक्त जगा दिया करते हैं। अगर बाद के घरों में कोई ग्रह न हो तो वो खाना नं० 11 में तो ग्रह कोई न कोई मौजूद है मगर खाना नं० 3 खाली है तो इस हालत में खाना नं० 11 के ग्रह सोए हुए अकेले माने जाएंगे जिन को जगाने के लिए किस्मत के जगाने वाले ग्रह की जरूरत होगी। बाद के घरों के ग्रहों के जागने के दिन के फिर न का जागना मुराद होगी इस तरह पर। यानि खाना नं० 3 या 5 के ग्रह का न `ा दौरा आया तो नं० 9 के ग्रह जारी हो गए। अगर खाना नं० 9 के ग्रह खास खास सालों में जागें तो खाना नं० 9 में दिया हुआ असर पैदा होगा। जिस साल के। वर्ष फल अनुसार। पहले घरों के ग्रहों का पहला दौरा शुरू, उस साल से बाद के घरों के ग्रह जाग पड़े होंगे और उस साल से पहले वो सोए सोए माने जाएंगें। सालों में वर्ष फल के हिसाब से शुरु हों या न हों तोभी उपर का फल देंगे। शुरू उम्र की तरफ से अपनी अपनी उम्र में शुरु हो कर। यानि बृ० 16 साल उम्र से, सूर्य 22 साल उम्र से, चन्द्र 24 साल से, शुक्र 25 साल से, मंगल नेक 13 साल मंगल बद 15 साल के दोनों मुश्तर्का 28 साल उम्र से, बुध 34 साल उम्र से, शनि 60 साल, राहु 42 साल से, केतु 48 साल उम्र से। अपनी अपनी उम्र के अर्सा तक ही यानि बृह० 16 साल से शुरु होकर 16 साल ही यानि 32 साल उम्र तक, सूर्य 22 से शुरु होकर 22 साल उम्र तक आदि आदि उपर का फल देंगें। वर्ष फल के हिसाब से खाना नं० 9 वाले का असर इसकी अपनी आम तौर पर शुरु होने की मियाद की बजाए जन्म दिन से ही शुरु होता हो तो वो ग्रह जन्म दिन से अपनी उम्र के अर्सा तक ही उपर का फल देगा यानि बुध 34 साल, मंगल 28 साल आदि या थोड़े शब्दों में खाना नं० 9 के तमाम ग्रह जब कभी भी शुरु होवें वो अपनी अपनी आम उम्र की मियाद तक फल देंगें। सिवाए शनि के जो 60 साल फल देगा और उम्दा। इस तरह खाना नं० 9 में शुक्र या बुध और मंगल बद सब से गन्दे और शनि नं० 9 सब से उत्तम और सब से लम्बा अर्सा का होगा।

बृह० के खाना नं० 9 में उपर दिए हुए खास खास वक्तों में जागे हुए ग्रहों का असर :-

बृह० = निहायत मुबारक, सूर्य= निहायत मुबारक, चन्द्र = निहायत मुबारक,
शुक्र = मंगल बद का असर, मंगल = निहायत उत्तम, बुध = मंगल बद का असर,
शनि = मुबारक, राहु = मुबारक गो खर्चा मगर मुबारक खर्चा, केतु= मुबारक मगर सफर -मुबारक सफर।

वर्ष फल का साल या उम्र का साल जब ग्रह मुलाकात की मुकर्रर्

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

उम्र का हो और वो ग्रह आ जाए खाना नं० 9 में तो इस वक्त दिया हुआ असर जरूर होगा या अगर जन्म कुण्डली में ग्रह मुतल्लका नं० 9 में हो तो भी यही नतीजा होगा।

इस घर के ग्रह शुरू उम्र में और हर एक ग्रह अपने शुरू होने के दिन से अपनी पूरी उम्र तक फल देंगे। बुध का इस घर से ताल्लुक दूसरी जगह भी दर्ज है।

खाना नं० 9 किस्मत रेखा का आगाज़ बुनियाद खाली:-

किस्मत रेखा की बुनियाद पर हर बुर्ज के हिसाब का जुदा जुदा असर होता है। बुनियाद से मतलब वह जगह जो हर-असल शुक्र और चन्द्र की रेखा दरम्यानी हद है इस हद पर हर ग्रह के मुतल्लका हिसाबात अपना अपना असर देंगे।

जद्दी जद्दी बुजुर्गाना वक्त उम्र बुजुर्गी धर्म-कर्म, मज़हब, तीर्थ, परोपकार, बुजुर्गों की उम्र (बाप दादा) का मेल ताल्लुक, अपनी किस्मत की बुनियाद वाल्देन की हालत आराम या हराम छोटी अंगुलियों पर सीधे या टेढ़े खत, खत, माता का पेट, रूहानी हालत का असर, स्वाभाव धर्म बुन्द, वीर्य-शक्ति, बरकत, ननुये कुण्डली व दादी के मुतल्लका जानवर मेंढक आदि, हवाई दीन मार्ग, जद्दी मकान, बुजुर्गों के बनाये हुए, कच्चा पक्का मकान हर किस्म की अन्दरूनी पैदाइश, हमारा हंस जानवर, किस्मत का आगाज़, गैबी हैसियत, मूल जड़ जिस्मानी हालत मुतल्लका शुक्र बुध, बचपन का बुध जाती ज़माना, आगाह ताकती, पिछला जन्म, दूसरों की मदद से पैदा करदा हालतें, मरकज़, बृह० अकेला जैसा हो वैसा ही फल होगा। यह बेहद है नं० 5 का और बेहद या नं० 9 का मुख्तलिफ होगा बृह०, अगर बुध या शुक्र या मंगल बद सब से मन्दे ग्रह होवें। शनि उम्दा 60 साल तक होगा। इस घर के ग्रह शुरू उम्र में और हर एक ग्रह अपने शुरू होने के दिन से अपनी पूरी उम्र तक फल देंगे। खाना नं० 9 के ग्रहों का उपाय रंग के ज़रिए फर्श मकान से होगा।

पक्का घर नम्बर दस (× 10)

घर दसवां है शनि का अपना बुध मिरासत नाता है
बुध पिता को या उसे होवे धर्म मकान 3 रहता है
चार तरफ की चीजें दुनिया चालाकी मक्कारी हो
रिश्तेदारी हो गैर हकीकी दुःख महज़ल बीमारी हो
बामात खुराक या वक्त होशियारी तरफ शरीर की होती हो
ईंट, पत्थर और काठी इमली कीकर कांटे झाड़ भी होती है
काली भैंसी उम्र पिता की ज़हर दरिन्दे होती है
तिकोन बड़ी चौकोर हो लम्बी छत स्याह और तिल भी है (तेल भी है)
आम स्वाह नारंग दुनिया नज़र ग्रह की होती है
लोहा लक्कड़ या कीड़े, मगरमच्छ ताकत मिलती होती है
मजूर उपरा प्रकट कौए की पहचान सांप की होती है
बाल जिस्म के काले पूरे कुत्ती मर्जी भी होती है
सांप का घर और आंख की पुतली रंग स्याह भी होती है।
गाय भैंस हो काले रंगी दुध ज़हरीले होते हैं

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

अन्धेरा या खत्म रोशनी आरेदार इकट्ठा हो
फिकर जमा कुल एक ही दुनिया किस्मत दस की दसवें है
घर दसवें में तीन ग्रह तो चलते शनि से हैं
राहू केतु और बुध तीसरा तीनों ही शक्की हैं
ग्रह पापी उस टेवे में बैठे कहीं भी उसके बैठे हों
फल वैसे ही घर दसवें के उस टेवे में होते हों

अगर खाना नं० 10 रद्दी ग्रहों से रद्दी हो रहा हो तो वो टेवा अन्धे ग्रहों का होगा। चाहे ~~xx/xx~~ तमाम ही ग्रह मय शनि गुरु भी अंध घरों के हों। अन्धे की तरह असर फल देंगे। । मुश्तमिला चीजें शनि खाना नं० 10 विरासत पिता का/ की सुख, मकान जायदाद मातहत बुजुर्गों, ~~xxx~~ गमी, अहमक, दुःख अज तादाद बीमारी गैर इलाजी बड़ी तिजोरी, बड़ी मत्तैल, अन्धेरा, स्याहाव सर्द खुश्क, खाली, वालिद की उम्र, 2 साल लगातार रिहाइश का मकान, कीड़े स्याह, बाल स्याह, या भूरे, काली आंखें, मगरमच्छ, सांप दुम या जहरीले जानवर, रुहानी ताकत मुकाबला शनि मक्कारी, होशियारी, सामान मुताबिक लोहा लकड़, ईंट पत्थर, बाल, खाल, बाल, सेहत जिस्म की काठी, या दांत आम बर्ताव वास्ते सलाह मशवरा, तमाम मुतल्लका मुश्किलों से मुक्त ताकत बिजली वक्त शादी व ब्याही, ख्याली दुनिया, साथ लाई हुई चीजें, मर्दों का ताल्लुक उसी होशियारी, मकर, पापी ग्रह जैसे हों वैसा ही फल होगा। बुध या केतु राहू शक्की होंगे। यह सेहन है नं० 4 का और इसका नं० 10 का मुन्सिफ होगा चक्र स्याह लोहा रंग।

<u>पक्का घर है नम्बर ग्यारह ।।</u>

घर ग्यारह का शनि है मालिक पर करतार गुरु का है
घड़ा भरा पानी का है बेशक बर्ताव तो गुरु ही का है
फकीर की झोली की किस्मत मिलते जन्म वक्त बुध आमद है
शनि गुरु का हल्फ उठाए फैसला करता दाद में है
उर्द र श्रेष्ठ घर रेखा तो किस्मत का सैलाब भी है
लालच दुनिया मकान खरीदे उम्र तायदाद औलाद भी है
छिलका पोस्त शान व शौकत हाथकी कमों पालता है
दो मुंह के यह सांप का घर तो कुल खोटा बैल भी है
दीवार के मकरदी पहला हाकिम इसमें राहू केतु हैं
बुध माता का याद है करके फैसला करता शनि भी है
अहवाल है बाजुब रंग भी उसके एक फैसला दे भी है
बुध केतु को पापी बतावे कुल कुबातें वो नहीं है
धन दौलत है ग्यारह आता घर तीजे से आता है
मंगल कुण्डली कहीं हो बैठा फैसला हलका होता है
बुध गुरु नहीं इस घर अच्छा या कि चक्र बैठा हो
उम्र पहली में शक्की मिलते जब घर तीजा मन्दा हो
किस्मत का ग्रह घर उस तीजे मदद न 5 से होती हो
घर 3 खाली ।। सोये किस्मत शनि पर होती हो

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ग्रह मुकाबले बुरा नहीं करते जब कुण्डली के खानों में

~~फल मुकाबले बुरा नहीं करते थे~~ फल 2–11 अपनों अपना वहीं मन्दिर गुरुद्वारा
घर ग्यारह में ग्रह जो आवे तासीर शनि की होता हो
असर मगर उस घर में आवे गुरु जहाँ टेवे बैठा हो
शनि गुरु उस टेवे में बैठे कहीं भी उस के बैठे हों
फल ~~कैसे~~ वैसे ही घर ग्यारह के उस टेवे में होते हों

खाना नं० 11 असर बृह० आम का है। हर तरह की कमाई जिस में तमाम ग्रहों का असर शामिल है, श्रेष्ठ रेखा, ऊर्ध्व रेखा, धन रेखा किस्मत रेखा, हाथ की हथेली वगैरह सब के सब इस में शामिल हैं। इस खाना के लिए तमाम इल्म की वाकफी सब से ज्यादा जरूरी होगी। यह आमदन का खाना है बचत का नहीं, बाकि बचत क्या होगी इसका जवाब इस खाना से नहीं मिलता।

राशि नं० 11 सब ग्रहों ने कोशिश की मगर इसे बीच कोई न कर सका, आखिर पर शनि बुध लाभकारी नक्षत्रों के लिए सब के लिए कुम्भ पानी का भरा हुआ घड़ा शुभ के तौर पर ले आया, कि अगर चन्द्र (पानी) से ही मौत का घर अंधा हो सकता है तो मेरे भी काम आएगा। मगर खाना नं० 11 सब की अपनी अपनी आमदन है। इसे कौन बीमा करे सब की किस्मत का मुकाम है इसलिए कहा जाता है कि मेरी किस्मत कौन ले लेगा। या मेरी किस्मत को तो कोई नहीं ले सकता। सब को अपना अपना हिस्सा मिल ही जाता है और फिर जब यह खाना नं० से ग्यारह हो गया है जिसका मुकाबला इसी पानी के घड़े के कतरा कतरा पर सब से लड़ना और मरना है। जिसे किस्मत देगी वो लेगा। शनि ख्वाह अपने घर में ही इस घड़े को रखे और सब से होशियार आंखों से ही निगरानी क्यों न करे मगर बरतने वाला बृह० ही सब का गुरु है। राहू केतु के पैदा किए हुए वारदातों को साथ लेता हुआ खाना नं० 11 में आकर शनि दोनों नहीन के गुरु के दरबार में बुध को हाजिर करके फैसला करेगा। जिस में बृह० की इन्साफदारी होगी राहू केतु दोनों खाना नं० 4 में पाप छोड़ने का चन्द्र के सामने हल्फ उठाते हैं।

<u>पापी ग्रह:-</u> खाना नं० 11 राहू केतु का एक अकेला दो ग्यारह का होगा बाकि जब एक ही का मगर खाना नं० 11 में आवे तो अकेले की हालत बाकि जब 9–3 या ×× 11–5 दोनों बैठे हों तो सिर्फ एक का नं० ग्यारह में असर होगा जब शनि भी साथ होकर खाना नं० 11 में असर होवे तो ग्यारह गुणा असर होगा (अच्छा या बुरा) खाना नं० 11 दुनिया का अन्दर इस घर में सिवाए पापी ग्रहों के सब ग्रह मकड़ी की जाली की तरह जब तक अन्धेरा रहे उम्दा असर जब रोशनी का समय हो तो जमा किया हुआ शहद खर्च-खर्चा कर या जा-दौर उड़ जाएँगे। चोरी के पैसे जला घोंटने वाले सेर (शैलि साँप की राशि) बाहिरा उम्दा, आम के पत्तों जैसी हालत में ग्रह मुकाबला बीज का उपाय केवल असर कायम करेगा या उस ग्रह बाकि खाना नं० 11 बाकि ग्रह के मुताबिक दोस्तों का उपाय भी मुताबिक होगा। जहाँ कि पापी ग्रह सर्व फल के हिसाब से खाना नं० 1 में न हों अगर खाना नं० 11 में पापी ग्रह ही हों तो खाना नं० 9 में आए हुए ग्रह की मुकाबला बीज के उपाय से केवल असर

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

होगा अगर खाना नं० 9 खाली ही हो तो ग्रह० का उपाय मददगार होगा।

मियाद किस्मत -- वक्त जन्म, मुआ का रास्ता कहाना वालदैन की वक्त जन्म पर माली हालत, वालिदान आमदन, तालय, उम्र तक जाती आमदन, तादाद औलाद, औलाद की उम्र, शान व शौकत. हाथ की किस्मत, हर अज़्मों, नाखुनों का हाल व रंग, आदि, पेशानी सिवाए तिलक की खास जगह, परवरिश, शनि का जाती स्वभाव से फैसला, स्वभाव गर्म, तर, खाकी, करीब कर्ज मकान जो खुद न बनाए हों, पोशीदा बात या छिलका मकान की शान व शौकत ? आहिस्तकारी ? सोहबत संग. अर्थ, पहला ताफिज, दूसरे पेड़ बूटे या बीजबान, नफ़ानी ताकत, गुप्तकामिनि, दुनिया का अन्दर आया का दुनिया में आने का रास्ता, दूसरों की मदद से पैदा करना आमदन मार्फ़त शनि, ग्रह० जैसे हो वैसा ही फल होगा। मगर धन दौलत का फैसला शनि से होगा। यह सेहन है नं० 3 का और नं० 11 का मुताबिक होगा पूर्व ग्रह० स्याह नहीं रंगा। इस घर में ? राहु केतु शनि? पापी ग्रह एक अकेला या दो ग्यारह होगा। यानि जब खाना नं० 3,5,9,11 में राहु या केतु बैठे हो तो सिर्फ एक का नं० 11 में असर होगा जब शनि भी साथ होकर खाना नं० 11 में असर देवें तो असर ग्यारह गुणा होगा, अच्छा या बुरा।

<u>पक्का घर नम्बर 12 बारह</u>

घर 12 है गुरु गृहस्थी गुरु राहु जो बैठे हैं
मछली दूजे पानी अम्बर का, वचन श्राप दो कटते हैं
धन की थैली सातवें होवे मर्द बोलते न छठे में
घर आठवें से उम्र मिले तो, बने महल घर द्वारे हैं
गज राहु हो अकेली पापी आराम फ़राग़त मिलते हैं
शोहरत दुनिया, हड्डी कच्ची, सुख नरम का मिलते हैं
सिवाय पेशानी अलावा अंगुलियाँ महल पड़ोसी होता है
खर्चा जाती फिराज की हरकत सहूलियत का खर्चा होता है
मर्द- औरत का उम्र नाहक हाथ मुनाफ होरत है
पाँव से माथे नाखुन तेरे- बहुत हथेली ग्रह० है
तरफ जनूबी मशरक हो तो पालना पैदा होता है
एक खत्म से शुरू हो 12 जहाँ 2 होता है
घर 12 व जो ग्रह बोले घर 2 में वो बोलता है
फल घर 12-2 का इकट्ठा राहु समाधि होता है
खुद इन्सान की पेश न जाए खुदा विधाता होता है
सुख दौलत और सांस आखिरी उम्र का फैसला होता है
शनि गुरु और राहु जैसे कहीं भी उल्टे बैठे हों
फल वैसे ही घर 12 के उस जैसे में होते हों।

इसी असूल से हालात इन्सान 12 राशियों से बारह साल को गुजारता है कि आखिर कभी न कभी 12 साल के बाद ही माहिर ! दुबारा? सुख ही देगा और यह सच है कि 12साल के बाद सब की अवधि पूरी जाती है और फिर वही ग्रह० का जमाना सबसे को खाना नं० एक सूर्य निकल आता है।

अर्थ, मिट्टी व हवा, अलावा० ख्यालात का मालकत

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

श्राप व आशीर्वाद वापसी व वापसी मर्दों की कुशलिता, आसमान ताकते की चमक, नजरानी की शोहरत, हथेली पर बृह० के वा अंगुलियों पर बृह० के निशान आबाद-विरासत, हड्डी, खटाई दुरुस्ती, सफाई, खानदानी खून, हथेली व अंगुलियां अंगूठे और अन्दर या बाहर को झुकाव, पांव के नाखुन, नाभी ... रंगी नाखुन, रंगी व लड़की बुध, नाबालिग ... वाली बुध, हवाओं का मुताबिक दुनियावी धन दौलत का बुध, विरासती ताकत बृहस्पति शनि, आखिरी वक्त, धर्म रास्ता आखिरत बुध का रास्ता, रंगी नाखुन, मर्द औरत का नाड़ी सांस चलते मुहब्बी बुध, दूसरे धर्म मुड़ गई चीजें, ... शनि बृह० राहु जैसे हो ऐसे पैदा ही फल होगा। बुध राशि फल का होगा। यह देहन है खाना नं० 6 का और खाना नं० 8 12 का मुश्किल मुर्दे हालत मगर सारा असर बृह० ही की बहाव की हालत का फैसला राहु से होगा।

अक्सर

मुश्तर्का खाने

खाना नं० 6 में जब केतु को माना था तो इसका दूसरा साथी राहु खाना नं० 12 में और बृह० दोनों 8 राहु-केतु को बराबर बांटते खाना खाना नं० 2 में बैठा है। खाना नं० 2 में बृह० है और मुश्तरका रूप में खाना नं० 8 का असर आया। खाना नं० 8 पापी ग्रहों की 8 तीनों ही राहु केतु शनि 8 बैठक है और खाना नं० 2 सिर्फ राहु केतु की बैठक है यानि जब खाना नं० 8 का असर 2 में जाए तो शनि का बुरा असर साथ देवें। लेकिन जब खाना नं० 2 का असर खाना नं० 6 में जाए तो सिर्फ राहु केतु का असर (इस तरह से खाना नं० 2 को गुरु की राशि माना है क्योंकि राहु केतु मुश्तरका सिर्फ हवाई गुरु के घर को ही हवा का मालिक बृह० तसलीम करता है) मता। खाना नं० 6 से जब खाना नं० 12 में असर गया तो खाना नं० 6 में से बुध का असर भी मिला हुआ जाना जो आकाश व खोल हवाई का मालिक है। इस तरह खाना नं० 8,2,6,12 में हर तरह का रुख हुआ पाताल और आकाश में हर तरफ बुध व बृह० की चारों तरफ घुम लेने वाली गांठ में शनि के चारों तरफ मार कर लेने की ताकत बढ़ी हो गई बुध और बृह० से भी सूर्य और शनि दोनों का ही राज मिला जो कि दोनों बुध और बृह० कायम मुकाम हैं। इन चारों तरफों की हालत चलत खाना नं० 4 चन्द्र को मिला जिस में लेनी की मिला दी। मंगल जब से खाना नं० 4 और शनि के चन्द्र से जो खाना नं० 4 का मालिक है अपनी 8 दुश्मनी के स्वभाव का ... कबूल किया हर वक्त के बुरे और भले को जाने ... है चन्द्र से सब की उम्र की ताकत अपने काबू कर ली और सब की उम्र का मालिक हुआ और तमाम ही के सफर में अपना असर ताकत की हालत पकड़ी।

ग्रह के खाना नम्बर:-5

निम्नलिखित ग्रह जैसे ही जाने किसी भी घर में इकट्ठे हो जायें तो उनके साथ के दिए हुए खानात नम्बर का असर पैदा हो जाएगा।

सूर्य-मंगल == खाना नं० 1 , शुक्र-बृह० == खाना नं० 2, बुध-मंगल = खाना नं० 3, मंगल-शुक्र = खाना नं० 4, सूर्य-बृह० == खानात नं० 5, बुध-केतु == खाना नं० 6, शुक्र- बुध = खाना नं० 7, मंगल-शनि-चन्द्र = नं० 8,

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

दिमाग़ के खाने :-

सिर (दिमागी ताकतें राहु की, कायम शुदा का। कुण्डली का खाना नं० 12 चाक के सुराख़ से 90 डिग्री पर सिर और पावों की तरफ को सीधा हुआ खत दिमाग के हिस्सा को बराबरी से अलग कर देगा। साल साल तक दिमाग के खाने पूरे नहीं होते। 42 साला राहु की 42 साल की राजधानी जो सिर की सतह का मालिक है।

कुण्डली खाना	राशि		दिमागी	मुतल्का ग्रह	असर ग्रह	ताकत	हरकतें
7	तुला	1	इश्क	शुक्र	औरत	मिट्टी	इश्क
11	कुम्भ	7	जिन्दगी बढ़ना	बृह०	औलाद	उम्र और ताज	तालब
5	वृश्चिक	8	हमला रोकने की ताकत	मंगल बद	मौत	बाबा	गद्दी
10	मकर	13	होशियारी	शनि	जायदाद	देखना	मक्कारी
12	मीन	14	तकब्बर	राहु	शरारत	सोचना	दिमागी हरकत
5	सिंह	15	बुर्दबारी	बृह०	पुत्र	औलाद	शोहरत
6	कन्या	16	इस्तकलाल	केतु	मुल्क	चलना	पांव की हरकत
3	मिथुन	17	मुहिब्बे मिजाजी	मंगल नेक	भाई	पीना	नेकी
7	तुला	18	भरोसा	बुध	सिर	बोलना	अक्ल
9	धन	19	मज़हब	बृह०	मुअल्लिम	हवा	सांस
1	मेष	20	बुजुर्गी	सूर्य	पिता जिस्म	आग	गुस्सा
4	कर्क	21	हमदर्दी	चन्द्र	माता दिल	पानी	शान्ति

आम इस्तेमाल में दिमाग का बायां हिस्सा आता है और कभी ही अचानक कुदरती तौर पर एक हिस्सा के असर में दूसरे हिस्सा का कोई खाना रेखा में पहली राशि मेष जिस में सूर्य उच्च है मुंह खोलना या उस के उलट हालत की ताकत वाले सूर्य को पहले ही घर में बन्द कर देना या दुनिया की तमाम ताकतों के बरखिलाफ काम कर दिखाना जाता करता है इन तमाम खानों के दायें और बायें हाथ से मुतल्का है कुदरत के सितारों का असर दिमाग के खानों पर होगा। दिमाग का असर हाथ की रेखा के दरियाओं के पानी से जाहिर होगा। दिमाग का बायां हिस्सा दायें हाथ पर दिमाग का बायां हिस्सा दायें हाथ पर दिमाग का दायां हिस्सा बांए हाथ पर रेखा के दरियाओं में अपना असर डालता है जिस तरह से जिस्म दिमाग में यह टुकड़े मुकर्रर ग्रह और मुकर्रर हिन्दसों के माने गए हैं। इसी तरह ही इनका असर देखने असर देखने के लिए सामुद्रिक में बुर्ज और ग्रह होने के लिए खास खास जगहों पर मुकर्रर कर दिए गए हैं।

कुण्डली का दिमाग के खानों से ताल्लुक:-

ग्रह अकेले अकेले या मुश्तर्का होकर जो हाल इन्सानी दिमागी हालत का कर सकते हैं हू बहू वही हालत इन्सानी किस्मत की जो ग्रह कुण्डली में करेंगे। यह जो हालत ग्रहों के हिसाब से इसकी किस्मत की होगी वही हालत दिमाग की होगी।

पुष्करना

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ग्रहों के पक्के घर दिमाग के 12 खाने:-

इन्सानी दिमाग के यही 12 खाने कुण्डली में ग्रहों के पक्के तौर पर मुकर्रिर घर हैं जो बारह राशियों के नाम किए गए हैं। दिमाग के दाएं और बांए हिस्सा में इसी स्थिति के हैं।

जन्म कुण्डली ग्रहों के पक्के घर

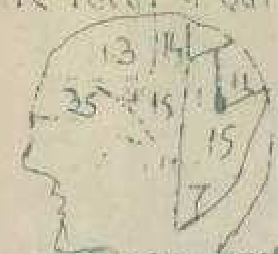

चन्द्र कुण्डली दिमागी खाना नं०

टेवे के मुताबिक (जब खाना नं० एक देकर मजमून "लाल किताब" दुरुस्त हो चुका हो। एक फोटो की शक्ल पर दिए हुए खानों में तमाम ग्रह टेवे के खानों में लिख कर दिमागी खानों के असर के मुताबिक टेवा दुरुस्त करें।

कुण्डली	दिमागी खाना नं०	कैफियत — बृहस्पति (शरीफाना)
2	2	(शुक्र के मुतल्लिक) शादी की इच्छा, इश्क के बाद का नतीजा गुरु-घंटाल, 100 चूहे खाकर बिल्ली हज को चली, 37 से 70-72 साल उम्र तक।
3	17	मंगल के मुतल्लिक अदल या मुन्सिफ मिजाजी।
4	21	चन्द्र के मुतल्लिक-हमदर्दी या रहम मिजाजी
5	20	सूर्य के मुतल्लिक इज्जत या बुजुर्गी कीच में कमल, पत्थर में मोती की ताकत।
6	18	बुध के मुतल्लिक फोकी उम्मीद, बायस तबाही, गणेश जी, गरुड़ जी, की सवारी। केतु के मुतल्लिक भरोसा सिर्फ फोकी उम्मीद नहीं, कुछ हौसला की उम्मीद या आस होगी। गणेश जी चूहे की सवारी।
9	19	जाति मजहब या रवादारी
11	35	चन्द्र के मुतल्लिक वाकयात गुजरते हुए की याद
12	12	राहु के मुतल्लिक राज दारी।
सूर्य (दिमागी)		
5	20/22	बृह० के मुतल्लिक इज्जत बुजुर्गी, जाती अदब।
6	23	केतु के मुतल्लिक - पाबन्दगी।
7	24	बुध के मुतल्लिक- हौसला
8	25	पापी ग्रहों के मुतल्लिक, कत्ल करने की ताकत, जहर-पियाला का सूर्य, झगड़ा फसाद।
9	26	बृह० के मुतल्लिक, मसखरगी, बेवकूफी, बहुत ही भोलापन बुद्धू।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

चन्द्र (भैंसी या मक्खन की)
3 27 मंगल से मुश्तर्का- शेर व चीते की ताकत।
4 28 (खाली) पुरानी खानदान
5 29 सूर्य से मुश्तर्का- कद व कामत व शोहरत तमाम उम्र की ताकत, चिड़ियों के बाज़ उड़ाने की ताकत।
6 30 केतु से मुश्तर्का, शबाब-जोश मर्दानापन की ताकत यानि बैठा हुए बैठी बचेट, अच्छे से अच्छा, बुरे से बुरा।
7 31 शुक्र से मुश्तर्का- रंग रूप में फर्क, बुध से नहीं और लोगों की नज़र और रंग में फर्क का ताल्लुक यानि अगर बुध यानि आसमान को उजाड़े तो चन्द्र पिता के आसमान से मारे।
8 32 शनि से मुश्तर्का, सफाई आदमी . न इत्तफाक. नारियल साख मगर तो अन्दर से कपट की नाव।
9 33 बुध से मुश्तर्का- इल्म रियाज़ी के अव्वल।
10 34 मंगल बद से मुश्तर्का- जगह मुकाम की याद ,पूरा चोरीबाज़ और तैरने को मुआ लेने वाला।
11 35 बृह0 से मुश्तर्का- रे वैरागी , खानदान गुज़रे हुए की याद।
12 36 राहु से मुश्तर्का- वक्त गुज़रे पर पछताए आता है याद गुज़रो गुज़रा हुआ ज़माना। (।) कभी हम भी बादशाह थे। फलक पुकारे पूछ।

शुक्र (गृहस्थी)
1 1 शनि से मुश्तर्का- शुक्र का पलंग, ऐसा (खाली) 16 से 36 साल उम्र तक।
2 2 बृह0 से मुश्तर्का - शादी की बरकत, शुक्र से याद का मल्का बूढ़ी औरत भी बूढ़े आदमी पिछली हद को पहुंची, 67 से 70 72 साल उम्र तक।
3 3 मंगल से मुश्तर्का- शुक्र से पहली नफ्स वाल्देही मुहब्बत एक से 18 साल उम्र तक।
4 4 चन्द्र से मुश्तर्का दोहरी मुलाकात, हल्के शुक्र और मल्का शुक्र का मजमुआ।
5 5 बृह0 से मुश्तर्का वक्त की मुहब्बत।
6 6 केतु से मुश्तर्का- दिलचस्पी वाली मुहब्बत औलाद नर का फल बराबर होगा।
7 7 बुध से मुश्तर्का- दिलचस्पी बढ़ने की ताकत (करीब उम्र नहीं)
मंगल (मुश्तर्का)
1 8 सूर्य से मुश्तर्का- दबाव रोकने की हिम्मत
3 17 बृह0 से मुश्तर्का- अक्ल मुश्किल मिज़ाजी
8 14 शनि से मुश्तर्का- न तकदीर या बुध पहली
4 4 मंगल बद-मंगलीक- मुहब्बत के तीनों हिस्सों को तबाह करने वाला गृहस्थ खराब हर तरह की तबाही।
बुध (अन्दरूनी असर)
1 37 शनि से मुश्तर्का - राहु
2 38 बृह0 से मुश्तर्का - इस असर दवाकी

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

3 39 मंगल के मुतल्लका - चाह, सब्र, मशवरा करने की ताकत
4 40 चन्द्र के मुतल्लका- मुकाबला एक चीज़/ चीज़ का दूसरी से।
5 41 सूर्य के मुतल्लका - हकायकी असलम।
6 42 बाकी इस्तमदादी, उसूलात को लेकर नतीजा पर पहुंचने वाली लियाकत।

शनि । इल्म वलायती।
1 1 गुरु के मुतल्लका- चारों तरफ की मुतवज्जी माकूली
2 7 गुरु के मुतल्लका- जिन्दगी पहले की हालत
3 10 गुरु के मुतल्लका- आराम
4 4 चन्द्र के मुतल्लका- तोरही मुलाकात, तरफा इल्म और चलता सूरज के मुतल्लका का मजमूआ असर।
5 15 बुध० के मुतल्लका- मुख्तारी
6 16 केतु के मुतल्लका - इस्तकलाल Steadfastness
7 7 गुरु के मुतल्लका जिन्दगी पहले की हालत उस जन्म की नहीं
8 14 मंगल बद के मुतल्लका तलवार या खुद फलदी
9 9 बाकी चलता देने की ताकत
10 13 बाकी होशियारी की ताकत
11 11. बाकी खुश नीयत बयान करने की ताकत
12 12 राहु के मुतल्लका - राजदारी

<u>राहु-केतु:-</u> राहु केतु को कोई अपनी जगह नहीं दी गई लहरों के मालिक है। एक कुत्ते को सिर से पकड़ा और दूसरे के पांव से तो कुल मखलूक की हद को जगह मिल गई।

ग्रहों का असली वजूद गांठ है और हर कुण्डली में ही हर बुर्ज की मुकर्रर अंगुलियों की जड़ और हथेली की गांठ पर मानी गई है। दुनिया के आगाज में बुध के आकार में सब से पहले अन्धेरा ... हर जगह में सूर्य की रोशनी मानी गई है। बुध० जो खोली के ... होता है ... है यानि हवा अन्धेरे में भी होती और रोशनी में भी होती हो सकती जैसे का एक बर्तन हो तो उस के अन्दर वाली जगह में भी हवा होगी और बाहर उस बर्तन के भी हवा होगी। बुध का शीशा अन्धेरे को भी और रोशनी को भी दोनों तरफ अन्दर बाहर होने दे देगा। मगर जो शीशा या बुध कैसी हवा को अन्दर से बाहर या बाहर से अन्दर न जाने देगा वही दुश्मनी बुध की होगी बुध० है। या बुध के आकाश की खाली जगह में जिस्मत को जाहिर करने वाला सूर्य या शनि को जुदा जुदा और इकट्ठे ही होने दे हालात बुध की ताकत से दे देगा या बुध का शीशा ही बुध० के दोनों अन्दर बाहर मकानों में गांठ लगा देगा और यह गांठ ही ग्रह है या यह आकाश की कुल सब के लिए इकट्ठा बांधा हुआ देता है या यही अक्ल और बुध सब तरफ गांठे लगा रही है।

दो चीजों के जो इकट्ठा करने/होने की हालत का नाम गांठ या ग्रह कहलाता है। या दूसरे शब्दों में बुध० (हवा) (खला आकाश) को इकट्ठे बांध देने वाली चीज़ की ताकत या गांठ की जिस्मत की हालत पैदा करने वाली चीज ग्रह है जिस का असर कु-चन्द्र रखी जा गई मगर यह

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

"नहीं गया" की मिसाल से जाहिर है रस्सी को तोड़ तोड़ कर इधर उधर पक्के तौर पर फिट रखने वाली चीज का नाम ग्रह है। जैसे "रस्सी का बल" तो राख होने पर भी नहीं मगर किस्मत का ताल्लुक चलता रहता। हर एक बुर्ज या पहाड़ का दरिया या रेखा उसी पहाड़ या बुर्ज के अपने नाम से मुकर्रर किया गया है।

राशियों इस नाजुक में ग्रहों को रोशनी के घरों में जलते हुए लैम्प माना गया है और रास्ते को उन के लिए जगने या चमकने की इजाज़त की जगह या ग्रहों का घर माना है मिसाल असर से मुराद यह है कि वो कितने फ़ासले तक जग सकते हैं यह जगने का वक्त हर ग्रह की मियाद के लैम्प की तरह तेल की मियाद कैण्डल पावर (बत्ती की ताकत) है। मसलन सूर्य का लैम्प जल रहा है इस का रंग गन्दमी है साथ ही अगर बृह० का लैम्प आ पड़े जिस का रंग ज़र्द है तो दोनों लैम्पों की रोशनी जो रंग देगी वही रंग जिन्दगी में इन ग्रहों के असर का होगा यानि ज़र्द रंग कच्चे पीले की बजाए रोशनी अब पक्के पीले रंग की होगी जैसी कि इसी तरह से की सब ग्रहों के लैम्पों के रंगों का आपस में इकट्ठे या जुदे जुदे चमकने पर होगा। अब एक राशि में जब कोई ग्रह या लैम्प कुदरत की तरफ से जगाया हुआ होवे तो उस घर से रोशनी दूसरे घर में कितने दर्जे जाएगी यह भी इस इल्म में मुकर्रर है यानि सौ की सदी या 50 की सदी या 25 की सदी या कुल की कुल आधी या चौथाई ताकत से दूसरे घर में रोशनी को जाने का असूल मुकर्रर है हर एक घर की तासीर यानि किस्म खाना नं० एक इज्जत, दौलत, खाना नं० 2, इसी तरह से बारह खानों का असर मुकर्रर है इसी तरह पर एक ग्रह का गुरु होना लैम्प का जग जाना समझा गया है और अपने वक्त पर खत्म होने से मुराद उस लैम्प के बुझ जाने से होगी। लैम्प बुझ गया या जलने लगा। मगर ग्रह का घर वही रहा चाहे इस घर में कोई भी और ग्रह आए, मगर मकान की मालकियत असली मालिक की ही रहेगी। इस में मुखालफाना कब्जा असर न देगा। बुर्ज या पहाड़ जिस क़द्र ऊंचे लम्बे चौड़े और मजबूत होंगे उसी क़द्र ही एक दूसरे की अच्छी व बुरी हवा की रोक थाम कर सकेंगे दरिया की नदियां या समुद्र के दरिया जिस क़द्र गहरे और तह जमीन साफ वाले होंगे उसी क़द्र ही इन में पानी की ज्यादा चाल या पक्का असर होगा। जिस क़द्र नदियां और दरिया कम गहरे और चौड़े होंगे उसी क़द्र ही न सिर्फ पानी कम या असर हल्का होगा बल्कि असर के वक्त की रफ्तार भी मध्यम होगी रेखा में मुख्तलिफ किस्म दरिया में किश्ती, जजीरें या रास्ता की रुकावटें होंगी। दरिया या रेखा जिस जिस पहाड़ या बुर्ज के इलाका से गुजर कर आएगा उसी उसी किस्म की मिट्टी साथ ले आएगी और जिस जिस किस्म की मिट्टी दरिया में मिली हुई होगी उसी उसी किस्म का असर रेखा के दरिया में मौजूद होगा और बुर्ज या पहाड़ की जड़ी बूटियों से होकर आई हुई नदियां, तेज मीठी कड़वी हवा के असर का साथ होगा।

हथेली पर ग्रहों के पक्के घर :-

हर ग्रह की रेखा भी कुण्डली का खाना नं० हुआ करती है मसलन चन्द्र की दिल रेखा जब बृह० के बुर्ज को जा मिले, मगर बृह० के बुर्ज के अन्दर तक पूरी न हो तो शनि और बृह० की अंगुलियों के दरम्यानी जगह को खाना नं० 1। जैसे शनि का हैडक्वार्टर खाना नं० 8 होगा अंगूठा खाना नं० 2 होगा [illegible] दिल रेखा खाना नं० 4 होगा। सिर रेखा खाना नं० 7 होगा रेखा का शुरु

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

व आखिर व हर खाना नम्बर की हद बन्दी की खास खास जगह और ऊपर को नीचे को उठाव या दबाव या किसी ग्रह के ऐन ऊपर ही किसी ग्रह का निशान भी मौजूद हो जाता है जिस के लिए हालात मुताबिक पर दस्तकारी करता मददगार हुआ करता है। चन्द्र की लकीर जब सिरे पर आकर ही मालिक हो जाए या दो शाखी का भाग हो चन्द्र नीच या मंगल बद का निशान होगा यानि चन्द्र खाना न0 8 का और मंगल खाना न0 4 का होगा।

यह जरूरी नहीं कि हर एक ग्रह अपने इलाका की लकीरों से भरे हाथ पर रेखाओं से बनी मुरब्बा शक्ल □ चारों तरफ की लकीरों से मिल कर मंगल बना वही शक्ल अगर बारीक बारीक रेखाओं से हाथ की बाकी रेखाओं से जुदा हो जाए तो भी शुभ मंगल नेक होगा।

पक्का ग्रह:-

पक्का ग्रह या पक्की रेखा हर ग्रह की मुकर्रर रेखा पक्का ग्रह होगा।

मसनोई (बनावटी) ग्रह:-

मसनोई ग्रह या शाखें रेखा की हर ग्रह की मुकर्रर रेखा की शाख ग्रह मसनोई हालत का ग्रह होगा।

पक्के ग्रह का असर अपनी मुतल्का चीजों का असर होगा मसनोई ग्रह अपने पक्के ग्रह की मुतल्का चीजों का असर देगा लेकिन मसनोई ग्रह के हर दो जुज़ अपने मसनोई हालत के दोनों ग्रहों की मुतल्का चीजों का असर भी बख्श दे जाता है। मसलन सूर्य पक्का ग्रह है और शुक्र बुध मसनोई सूर्य। अब सूर्य हमेशा अपना असर सूर्य रेखा या सूर्य की रेखा या तरक्की रेखा खाना न0 1-5 का असर देगा। लेकिन शुक्र बुध मुश्तर्का मसनोई हालत में सूर्य का असर या शुक्र की आयु या शुक्र की शादी रेखा और बुध सिर की रेखा का भी हर दो ग्रह खाना न0 7 का असर दे जायेगा लेकिन वो भी उम्र के हर सातवें या हर आठवें साल (अल्प आयु) कष्ट ग्रह के वक्त उस ग्रह का मसनोई हालत का ग्रह काम देता है जो पक्के ग्रहों से मसनोई ग्रह कौन कौन सा बन जाता है।

पक्का ग्रह	मसनोई ग्रह
बृहस्पति	सूर्य-शुक्र (खाली हवाई)
सूर्य	बुध-शुक्र
चन्द्र	सूर्य - बृह0
शुक्र	राहु-केतु
मंगल नेक	सूर्य-बुध
मंगल बद	सूर्य-शनि
बुध	बृह0-राहु
शनि	शुक्र -बृह0 (केतु स्वभाव), मंगल-बुध (राहु स्वभाव)
राहु	मंगल-शनि (ऊंच), सूर्य -शनि (नीच)
केतु	शुक्र- शनि (ऊंच), चन्द्र-शनि (नीच)

गौतलका दरअसल पापी ग्रहों के काम का नतीजा है और पापी ग्रह तीन हैं।

पाप:- राहु परशा चलाने वाला परशुराम मगर परशे कुल्हाड़े का

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

साथ न होगा। केतु सिर्फ खाली फरसा या कुल्हाड़ा. कुल्हाड़े वाले का साथ न होगा।

<u>पापी:-</u>

शनि परशुराम, परशु -फरसा दोनों की जमा यानि कुल्हाड़ा व कुल्हाड़े वाला दोनों साथ।

मंगल बद जिसके एक = सूर्य-बुध-केतु } शुक्र होता है।
बद सूर्य शनि×राहु×केतु सूर्य-शनि --राहु }

सूर्य शनि (रात -दिन) खाली बुध होते हैं अगर बुरी हालियत या ऐसे घरों में हों जहाँ कि सूर्य या शनि दोनों में से कोई भी मन्दा हो तो राहु सूर्य -22 साल उम्र शनि 35 साल उम्र तक नीच या मंदा ही बद होगा चाहे वो किसी भी घर में बैठा हो

<u>असर:-</u>

मनहोई बनावट के ग्रहों का असर आम-खास बातों का होगा।

1 मनहोई गुरु-- औलाद की पैदाइश का मालिक है।
2 " सूर्य - सेहत का मालिक है
3 " चन्द्र - मालदेवी सुख का मालिक
4 " शुक्र -दुनियावी सुख (बजरिया औलाद)
5 " मंगल- औलाद जिन्दा रखने का मालिक (नेक-बद्दी का मालिक है)
6 " बुध- इज्जत शोहरत
7 " शनि- दौलत बीमारी
8 " राहु- झगड़े फसाद
9 " केतु- ऐश का मालिक है।

मनहोई हालत की बनावट के ग्रह की हालत में उनके हर दो ग्रहों का असर जुदा जुदा कर लेना या दो का मुश्तर्का कर लेना हो सकता है यानि राशि फल का होगा किस्मत की हेराफेरी पक्का ग्रह यही रेखा शायद ही कभी बदला करती है। मनहोई ग्रह नामों का बदलना मुमकिन है। वो भी उम्र के हर सातवें साल मगर 21 वर्ष की उम्र के रेखा में कोई तब्दीली होती नहीं मानते। यह बालिग होने का जमाना है। उम्र के हर सातवें साल तब्दीली हालत (चाहे बुरी ओर हों चाहे अच्छी ओर) मानते हैं। "अल्प आयु" वालों की उम्र के आठवें साल (8 16, 32, 40, 48, 56 और 64 तक) जिन्दगी खतरा में गिनते हैं।

<u>अन्धे ग्रह:-</u>

अगर खाना नं० 10 को बाहम शत्रु या नीच हैसियत वगैरा के दश्मनी ग्रहों से बरबाद हो रहा हो तो वो टेवा अन्धे ग्रहों का होगा। चाहे तमाम ही ग्रह मय शनि गुरु भी ऊँच घरों के हों। अन्धे की तरह अपना फल देंगे। (मुफस्सिल देखें शनि नं० 10 में)

अन्धराता ग्रह:-

चौथे सूर्य और सातवें शनि हो तो ऐसा टेवा अन्धराते वाला या आधा अन्धा होता है।

<u>धर्मी ग्रह:-</u>

पापी ग्रह शनि राहु केतु तीनों ही है। राहु-केतु खाना नं० 4 में पाप छोड़ने की चन्द्र के सामने कसम उठाते हैं और शनि नं० 11 में गुरु गुरु को हाजिर नाजिर जान कर राहु केतु के पैदा किए गए पापों का फैसला करता है। अगर राहु-केतु खाना नं० 4 या चन्द्र के साथ किसी भी घर हों और अगर शनि खाना नं० 11 में या गुरु के साथ किसी भी घर में हो तो इस टेवे में पाप व पापी दोनों का ही बुरा असर न होगा और सब ग्रह धर्मी होंगे।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

साथी ग्रह:-

जब कोई ग्रह आपस में अपनी अपनी मुकर्ररा राशि और कायम घर की राशि या अपने अपने पक्के घरों में अदल बदल कर बैठ जाएं तो साथी ग्रह कहलाते हैं। मसलन सूर्य का पक्का घर खाना नं० 5 है और शनि का पक्का घर खाना नं० 10 है अब अगर सूर्य हो खाना नं० 10 में और शनि हो खाना नं० 5 में तो दोनों बाहम साथी ग्रह होंगे।

(1) कुण्डली के हर खाने की मुशतरका दीवार या दीवार हमसाया ग्रहों (सिर्फ दोस्तों) को मिलाया करती है मगर दुश्मनों को अलग-अलग रखती है।

एक रेखा के मुकाबिल दूसरी रेखा ‖ या == एक ही किस्म की रेखा होगी। क्योंकि दोनों एक ही बुर्ज पर वाक्या हों ऐसी शाखों से मुराद होगी कि अपना ही भाई-बहिन साथ बन रहा होगा या वो दूसरी शाख अपने ही बुर्ज का हाल ज़ाहिर बताएगी।

बाजूदावत:-

जो ग्रह आपस में दोस्त हों और ऐसी हालत में बैठे हों कि खुद तो वो दोस्त ग्रह ही रहें मगर इन में से हर दो एक या किसी एक ही बुर्ज पर आने दुश्मन ग्रह हो जाने वाले तो खुद दोस्त ही हैं, ताहम बाजूदावत से ही याद होंगे क्योंकि अब उन में किसी न किसी तरह से दुश्मनीभाव हो गया है।

दोस्ती दुश्मनी करता है या देखता है:-

दृष्टि के वक्त कुण्डली के खानों में एक दो तीन आदि की तरतीब से पहले घरों का ग्रह अपने बाद के घरों का ग्रह अपने बाद के घरों से दोस्ती-दुश्मनी करता (को) देखता हुआ कहलाता है सिवाए खाना नं० 8 के जो खाना नं० 2 को पीछे की तरफ देखता है।

कुण्डली में पहले या बाद के घरों के ग्रह:-

दृष्टि और एक दो तीन तक बारह की तरतीब से जो घर या खाने पहले आ जाएं इन में बैठे हुए ग्रह पहले घरों के होंगे यानि जो ग्रह दूसरे ग्रहों को देखते हों और जो भी गिनती की तरतीब में पहले नम्बरों के मुताबिक ग्रह वाक्या हों

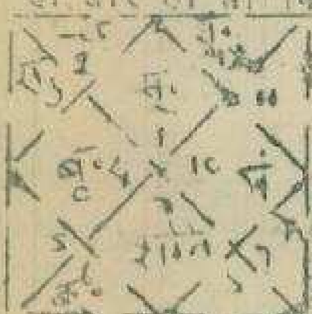

अब सूर्य को कहेंगे कि वो शनि के पहले घरों का है। बुध को मंगल के पहले घरों का कहेंगे। अब मंगल के सूर्य बुध शनि हर एक या तीनों की गिनती में तो अगर पहले नम्बरों पर हैं मगर मंगल से पहले घरों के ग्रह से मुराद सिर्फ बुध से होगी या मंगल अब बुध के बाद के घरों का ग्रह है एक ही घर का ग्रह जब दो और घरों को देखे। मसलन खाना नं० 3 देखता है खाना नं० 9 और खाना नं० 11 को अब खाना नं० 9 - 11 दोनों ही घरों के ग्रह खाना नं० 3 में बैठे हुए ग्रह से बाद के घरों के ही ग्रह होंगे।

(2) पहले घरों वाले ग्रह अपने बाद के घरों में अपना फल मिलाया करते हैं जब बोलें कि चन्द्र दुश्मनी करता है गुरु से तो मुराद होगी कि चन्द्र है पहले घरों में गुरु से।

ऊपर को उठने वाली शाखें या ऊपर को मुंह रखने वाली की शाखों का असर नेक होगा। मगर नीचे को निकल जाने वाली शाखें या नीचे को मुंह रखने वाली शाखें का कोई नेक असर न होगा।

पहले घरों का असर बाद के घरों में मिलने का तरीका यह होगा कि

खाना नं०	1	7	4	10	2	6	8	12	3	9	11	5
ग्रह	सू०	शनि	बृ०	मं०	चं०	बुध	–	शुक्र	राहू	केतु	–	–

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

अब कि पीछे से बाद के घरों में किसी ग्रह का बुरा असर आना बन्द न हो जाए या पहले घरों के बुरे ग्रह की मियाद तक बाद के घरों के ग्रहों का नेक असर न होगा। यही असूल खाना नं० 8 के ग्रहों का खाना नं० 2 के ग्रहों के लिए होगा। लेकिन अगर खाना नं० 8 में सूर्य, बृह० या चन्द्र में से कोई भी अकेला अकेला या कोई दो या तीनों ही मुश्तर्का बैठ जाएं तो खाना नं० 8 न आगे को खाना नं० 12 को और न ही पीछे को खाना नं० 2 को देख सकेगा। बल्कि खाना नं० 8 का ऐसा असर सिर्फ खाना नं० 8 में बन्द हुआ गिना जाएगा। गोया मौत के घर को (सूर्य, बृह० चन्द्र मुश्तर्का) योगी जैसी जीत लेगा।

<u>कायम ग्रह</u>:-

जो ग्रह हर तरह से दुरुस्त और अपना असर बगैर किसी दुश्मन ग्रह के असर की मिलावट के साफ-साफ और कायम रख रहा हो यानि राशि नम्बर पक्के घर या दृष्टि आदि किसी तरह से भी इस में दुश्मन का असर न हो और न ही वो किसी दुश्मन ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो।

<u>ग्रह का घर</u>:-

ग्रह की अपनी मुकर्रिर राशि (बमूजब फैहरिस्त दोस्ती, दुश्मनी बराबर/ ऊँच, नीच, घर का) घर का मालिक होने की ऊँच या नीच फल की राशि इस ग्रह के लिए इस ग्रह का घर कहलाता है। मसलन खाना नं० 3, 6 बुध के लिए।

<u>घर का ग्रह</u>:-

ग्रह का पक्का घर (बमूजब फैहरिस्त दोस्ती दुश्मनी, बराबर/ ऊँच नीच, घर का) इस ग्रह का घर कहलाएगा मसलन खाना नं० 7 बुध के लिए।

<u>दोस्त ग्रह/ दुश्मन ग्रह</u>:-

किसी ग्रह के सामने खाना दोस्त/ दुश्मन में रख हुए ग्रह इस ग्रह के दोस्त/ दुश्मन ग्रह कहलाएंगे। किसी दूसरे की मार्फत दोस्त / दुश्मन न लेंगे।

<u>ऊँच -नीच ग्रह</u>:-

जब कोई ग्रह ऐसी राशि में हो जो इस के लिए ऊँच फल / नीच फल की मुकर्रिर है।

<u>बराबर का ग्रह</u>:-

बराबर का ग्रह के खाना नं० वास्ते बराबर की ताकत के नीचे में लिखे हुए ग्रह मसलन नं० 1 बृह० के ग्रह के बराबर की ताकत के।

<u>पापी ग्रह</u>:-

शनि, राहू, केतु तीनों मुश्तर्का (पापी ग्रह) लिखे जाते है वो बृह० के बराबर के ग्रह कहलाएंगे। सिर्फ राहू केतु मुश्तर्का (पाप) के लिखे जाते है वो शुक्र के बराबर के ग्रह कहलाएंगे।

बृह०, सूर्य, मंगल के पुरुषों की शाख से मर्द और मर्दों का ताल्लुक शुक्र और चन्द्र से शाखे औरत और औरतों का ताल्लुक जाहिर करती हैं या सीधे खत मर्द और वो शाखी से औरत होगी।

<u>नर ग्रह मर्द पर</u> :-

बृह०- रूह के ताल्लुकदारों पर असर देगा। सूर्य- जिस्म के ताल्लुकदारों पर असर देगा। मंगल - खून के ताल्लुक दारों पर असर देगा।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

स्त्री ग्रह स्त्रियों पर :-

<u>स्त्री ग्रह स्त्रियों पर:-</u>

चन्द्र – माता की हैसियत वाली पर असर देगा।
शुक्र– औरत के दर्जा वालियों पर असर देगा।
बुध– शुक्र का साथी के हाल में बुधा भी दर्ज है।

<u>मुखन्नस ग्रह (नपुंसक ग्रह):-</u>

शनि जाती या जमादात पर, बुध नबातात पर, राहु हरकत दिमाग पर, केतु हरकात ~~पुरुषत्व~~ पाव पर असर करेगा।   जो आसमान से नहीं है

<u>मशनोई ग्रह:-</u>

हवानात, बे-जबानों पर असर करेगा। //

हस्त रेखा में 21 साल उम्र से रेखा बालिग और 12 साल उम्र तक नाबालिग मिलते हैं। मगर कुण्डली में वर्ष फल के हिसाब से उम्र में जिस दिन से (या से पहली बार) सूर्य का राज या दौरा शुरू हो जाए उस दिन से तमाम ग्रह बालिग गिने जाते हैं। चाहे उम्र 21 वर्ष से कितने ही कम या ज्यादा हो। (दौरा से मुराद के ग्रह का वर्ष फल के हिसाब से खाना न0 एक में आने से है।

(I) सूर्य अगर कुण्डली के खाना न0 1,5,11 (जन्म लग्न को खाना न0 1 रखते हुए) में चाहे अकेला चाहे और ग्रहों के साथ हो तो जन्म दिन से ही तमाम ग्रह बालिग गिने जाएंगे।

(II) सूर्य का दौरा शुरू होने से पहले इन्सान पर इस के अपने पिछले कर्मों का फैसला (अमूमन 7 या 8 साल उम्र या हर तक सातवें या आठवें साल) असर किया करता है जो तब्दीली का जमाना हुआ करता है।

बगैर रेखा वाला हाथ कजाक, डाकू, संगदिल होगा सब ही ग्रह नीच फल की राशि के हों।

बहुत ज्यादा रेखा वाला महज भाग्य और वहमी होगा। एक ही घर में बहुत ज्यादा मगर नाकस या नीच ग्रह हों।

ज्यादा चौड़ी रेखाएं – बहुत कम नेक असर देंगी ।
चौड़ी रेखा– कई तरफ की दृष्टि से टकराए हुए दुश्मन ग्रह।
धुंधली सी रेखाएं– फिरकी होगी देर बाद असर देंगी।
धुंधली रेखाएं-- बहुत दुश्मन ग्रह बाजुकायदा।
साफ रेखाएं-- कुदरत तालीम और खुशनसीबी होगी।
गहरी रेखाएं-- जल्द असर देंगी।
साफ रेखा-- पक्के घरों के ग्रह या घर के ग्रह मगर कायम।
<u>गहरी रेखा -- ऊंच घरों</u> के ग्रह ऊंच फल की राशि के ग्रह।

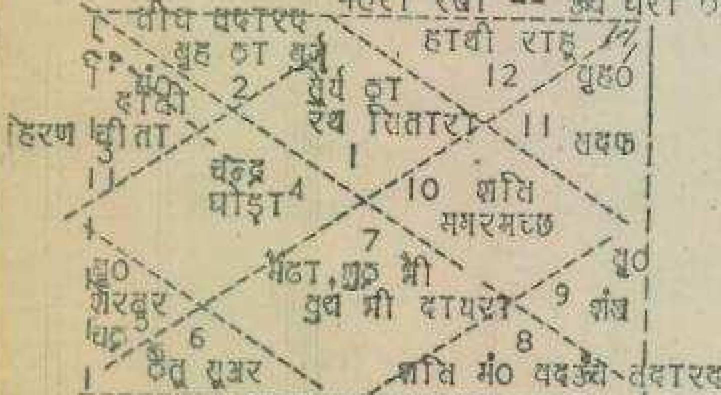

कुण्डली में हर ग्रह या बुर्ज के पक्के घर

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ग्रह की उम्र का अर्सा:-

जब कोई ग्रह हर तरह से कायम अपने वजूद में खुद अपनी ही मुकम्मल ताकत का (चाहे नीच या घर का मालिक मगर किसी दूसरे का इस पर या इसका कोई असर न हो रहा हो) तो वो अपनी कुल उम्र तक असर देता रहेगा या इसकी उम्र होगी बृह० 16 साल आदि। ग्रह के असर का आम अर्सा अपनी हालत से बाहर जब कोई ग्रह ऊपर की शर्त (ग्रह की उम्र का अर्सा) से बाहर दोस्तों या दुश्मनों के वास्ते में हो जाए तो इसके लिए बृह० 6 साल, सूर्य 2 साल और चन्द्र एक साल आदि लेंगे। अपनी मियाद के शुरू, बीच, या आखिर पर हर ग्रह असर करता है। इस लिए बाकी हिस्सा की आम मियाद में हर ग्रह के साथ दरमयानी ग्रह का असर शामिल होगा।

नं०	ग्रह	आम अर्सा 35 साल	महादशा साल 120	कुल साल	असर समय	असर रफ्तार मानिन्द	"क"
1	बृह०	6 साल	16	16	बीच में	शेर	32
2	सूर्य	2 "	6	22	शुरू	रथ	22
3	चन्द्र	एक "	10	24	अन्त	घोड़ा	24
4	शुक्र	3 "	20	25	बीच	बैल	50
5	बुध	2 "	17	34	हमेशा एकसा	मेंढा	68
6	शनि	6 "	19	36	अन्त	मछली	72
7	मं बद	3 "	4	15	सूर्य के बिना मंगल अकेला है।		56
8	मं नेक	3"	3	13			----
	कुल	6 "	7	28	शुरू में	हिरण, चीता	364
8	राहू	6 "	18	42	अन्त में	हाथी	36 दोनों ग्रह या
9	केतु	3 "	7	43	अन्त में	सूअर	रियायती 40-42 दिन

नोट:- "क" एक वर्ष में दिन या एक दिन या रात में घण्टे, महीना 30 दिन का और दिन या रात जुदा जुदा 12 घण्टे का हर एक।

हर एक ग्रह अपने नस्फ और चौथाई हिस्सा मियाद में भी अपना असर जाहिर क देता है हरएक ग्रह अपने वक्त के नस्फ या एक चौथाई में भी अपना असर पूरा पूरा करता है ऊपर का असर सारी उम्र पर ही इसी तरह होगा।

हर ग्रह की मियादों में बीच के ग्रहों की मियाद:-

दौरा हो	बृ 6	सू 2	चन्द्र 1	शु.3	मं.6	बु.2	श.6	रा.6	के.3
शुरू	के 2	बृ 8	बु 4 या	मं 1	मं 2	च 8	रा 2	मं 2	श 1
मध्य	बु 2	च 8	सू 4	शु 1	श 2	मं 8	बु 2	के 2	रा 1
अन्त	सू 2	मं 8	च 4	शु 1	श 2	बु 8	श 2	रा 2	के 1

अच्छे बुरे ग्रह व.रेखा हाथ साथ हाथों में :-

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

रेखा में जंजीर ,गुरु निशान । मंगल, बीमारी। नई निशान । कुदरती व इख्तियारी। बच्चे । असर में रुकावट। मतलब बुरा असर। बाहर । असर चक्र में। सितारा ।सूर्य चन्द्र का ताल्लुक । त्रिशूल । शनि का ताल्लुक । सीधे खत । बृह० का ताल्लुक। लेटी हुई लकीर ।शुक्र। टेढ़ी लकीर ।चन्द्र। वृत्त ।राहु। चारखाने ।केतु। अपना अपना असर जिनका जिक्र ऊपर में है, किया करता है। बतौर हमेशा नेक असर देता है। शाखदार रेखा, शाखदार बाल पंक्ती की रेखा मतलब मददगार या सीधी रेखा नेक होती है। ग्रहों का अपने दुश्मन ग्रहों की मुकर्रर राशियों में होना या इनको दुश्मन ग्रहो का देखना इनके असर में खराबी का सबब होगा। इनके बरअक्स ग्रहो का अपने दोस्त ग्रहों की राशियों में जाना या इनको दोस्त ग्रहों का देखना या इनका अपने दोस्त ग्रहों का साथी ग्रह हो जाना इनके असर को मुबारक करेगा। चन्द्र दुश्मनी करता है से मुराद है कि खुद अपने ही फल को कुण्डली के बारह भावों की तफसील में दिए हैं। खुद ही दुश्मनी करने वाला ग्रह खराब कर देगा।

ग्रह	बराबर की ताकत है	दोस्त	दुश्मन
बृह०	शनि, राहु, केतु	सूर्य, चंद्र, मंगल	शुक्र, बुध
सूर्य	बुध बराबर, केतु मध्यम करे	बृह०, चन्द्र, मंगल	शुक्र, शनि, राहु से ग्रहण
चन्द्र	शनि, मं., शु., बृह.	सू., बु., राहु से मध्यम करे	केतु से ग्रहण
शुक्र	मंगल, बृह०	शनि, बु., केतु	सूर्य, चन्द्र राहु
मंगल	शनि शुक्र, राहु बराबर	सूर्य चन्द्र बृह०	बुध, केतु
बुध	शनि, केतु, मंगल, बृह०	सूर्य, शुक्र, राहु	चन्द्र
शनि	केतु, बृह०	बुध, शुक्र, राहु	चन्द्र, सूर्य, मंगल
राहु	बृह., चन्द्र मध्यम हो जाए	बुध, शनि केतु	शुक्र, सूर्य, मंगल
केतु	बृह० शनि बुध सूर्य मध्यम	शुक्र, राहु	चन्द्र, मंगल
	हो जाए		

चन्द्र और शुक्र बराबरी मगर चन्द्र शत्रुता करता है शुक्र से
बृहस्पति और शुक्र बराबरी मगर शुक्र शत्रुता करता है बृहस्पति से
मंगल, शनि बराबरी मगर मंगल दुश्मनी करता है शनि से
चन्द्र बुध दोस्त मगर चन्द्र दुश्मनी करता है बुध से

बारह घरो में राशि व ग्रह कुण्डली के हिसाब से फर्क मालूम होगा। यह बात मुन्दर्जा जैल फेहरिस्त से जाहिर होगी । दरअसल कुण्डली में राशि नम्बर से मुराद की तह

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

जमीन और कुण्डली के हिसाब से मकान की इमारत मुराद होगी। मिसाल खाना नं० ११ दरअसल राशि के हिसाब से शनि की मलकियत, ग्रह कुण्डली के हिसाब से यह खाना नं० ११ वृह० का घर है। खाना नं० ११ से मुराद यह होगी कि घर की जमीन पर तो शनि का असर है और मकान की इमारत पर वृह० का। ग्रहों और राशियों की कुण्डलियों के खाने भी जहाँ तक हो सके बाहम मिलते जुलते मुकर्रिर किए गए हैं। सिर्फ मामूली फर्क है जो गौर से देखने से मालूम हो जाएगा।

<u>ग्रह की अपनी राशि:-</u> हर ग्रह अपनी मुकर्रिर राशि में नेक फल देगा। बेशक इसकी वो राशि किसी दूसरे ग्रह का पक्का घर मुकर्रिर हो चुकी है।

राशि नं०	किस ग्रह की राशि	किस ग्रह का पक्का घर	इस राशि नं० में किस ग्रह का नेक असर होगा
2	शुक्र	वृह०	शुक्र का नेक असर होगा
3	बुध	मंगल	बुध का नेक असर होगा बशर्ते कि मंगल नेक हो।
5	सूर्य	वृ.सू.इकट्ठा	से सूर्य का नेक असर
6	बुध -केतु	केतु	बुध का उत्तम, केतु का बुध केतु की चीजों पर मन्दा मगर दूसरों पर अच्छा। अगर दोनों साथ हों तो बुध का और बुध की चीजों पर अच्छा मगर केतु दूसरों का मन्दा होगा।
7	शुक्र	शुक्र-बुध	शुक्र का नेक, बुध बाकियों की भी मदद दें।
8	मंगल	मंगल-शनि चन्द्र (उम्र)	अगर तीनों में से हर एक अकेला अकेला तो अच्छा फल, वर्ना मन्दा फल होगा।
11	शनि	वृह०	शनि का नेक बाकी ग्रह वैसी (शनि का पेड़) से गला घोंटू वाले बेर, जाहिरा उमदा मगर झाग के पताशे।

<u>राशि ग्रह:-</u>

मेष वृष मिले मिथुन से तर्जनी अंगुली मिलते हैं।
कर्क, सिंह और कन्या राशि अनामिका अंगुली लेते हैं
तुला वृश्चिक धन तीनों की छोटी कनिष्का होती है
मकर कुम्भ और मीन इकट्ठी मध्यमा अंगुली बनती है
मेष वृश्चिक मालिक मंगल, तुला वृष शुक्र की है
कन्या मिथुन का बुध है मालिक कुम्भ मकर दो शनि की है
गुरु मालिक है धन मीन का कर्क चन्द्र की होती है
सिंह अकेला दुनिया मग्ने राशि जो सूर्य की है।
केतु बैठता कन्या में तो राहु विरासती मीन का है
पाप बड़ा आसमान से ऊपर उड़ निकली पाताल में है
गुरु रवि और मंगल तीनों नर ग्रह ही कहलाते हैं
शनि राहु और केतु तीनों पापी ग्रह बन जाते हैं
शुक्र लक्ष्मी चन्द्र माता दोनों स्त्री जाते हैं
बुध अकेला चढ़ी सभी का जिस में सब चक घूमते है
चक लालच गर मारे दुनिया नेक साथ को मिलते है

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

30 दिन का एक माह //24 घण्टे का दिन-रात	ग्रह जिस क्रम से नीचे लिखे हैं इसी क्रम से एक के बाद दूसरा इन्सान की उम्र पर अपना अपना असर करते हैं ग्रह	जानवरी ताल्लुक	राशि नं0	असर मातिहत	एक साल में मियाद दिन
16	बृह0	शेर, जर्द, हवा	9, धन	बीत मारे	16
16			12 मीन	मछली	16
22	सूर्य	रथ, सुर्ख तांबा, गेहुंआ	5 सिंह	नर शेर	22
24	चन्द्र	घोड़ा, सफेद	4 कर्क	केंकड़ा	24
25	शुक्र	बैल, यही रंग सफेद	2 वृष	बैल	25
			7 तुला	तराजू	25
28	मंगल नेक	हिरण	1 मेष	मेंढा	28
28	मं. बद	सुअर पहाड़ी चीता	8 वृश्चिक	बिच्छू	28 मरण
34	बुध	भेड़ा सब्ज	3 मिथुन	मर्द-औरत जोड़ा	34
34			6 कन्या	लड़की	34
36	शनि	मछली काली	10 मकर	मगरमच्छ	36
			11 कुम्भ	मछली	36
324 चोथों	राहु	हाथी काला नीला	12 मीन	"	40 दिन
36 से 40 या 42 रियायती दिन	केतु	सूअर चितकबरा मगर दुर्म व होगा	6 कन्या	लड़की	42 दिन दोनों एक में रियायती दिन 364 या 366

पुश्तदारी ताल्लुक ग्रह व राशि

अंगुली	नं0	राशि	शक्ल	रफ्तार	रंग	तासीर	स्वभाव	घर का मालिक	ऊंच फल	नीच फल
तर्जनी	1	मेष	मेंढा		सुर्ख	मर्द क्रूर	आतशी	मंगल	सूर्य	शनि
	2	वृष	बैल		दही रंग	सर्द-खुश्क	खाकी	शुक्र	चन्द्र	नहीं
	3	मिथुन	स्त्री-पु.		सब्ज	गर्म-तर	बादी	बुध	राहु	केतु
म	10	मकर	मगरमच्छ		काला	सर्द-खुश्क	खाकी	शनि	मंगल	बृ0
ध्यमा	11	कुम्भ	भरा हुआ घड़ा		"	गर्म-तर	बादी	शनि	नहीं	नहीं
	12	मीन	मछली		नीला जर्द	सर्द-तर	आबी	बृह0-राहु	शु केतु	बुध
अना	4	कर्क	केंकड़ा		दूधिया	" "	"	चन्द्र	बृ0	मंगल
मिका	5	सिंह	शेरबर		सुर्ख-तांबा	गर्म-खुश्क	आतशी	सूर्य	नहीं	नहीं
	6	कन्या	लड़की		सब्ज चितकबरा	सर्द-खुश्क	खाकी	बुध केतु	बु के	केतु
कनि	7	तुला	तराजू		दही रंग	गर्म-तर	बादी	शुक्र	शनि	सूर्य
ष्ठा	8	वृश्चिक	बिच्छू		सुर्ख	सर्द-तर	आतशी	मंगल	नहीं	चन्द्र
	9	धनु	ब्याही गाय		जर्द	गर्म तर	आतशी	बृह0	केतु	राहु

नोट:- ग्रह व राशि का असर इकट्ठा होते हैं।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

कुण्डली के 12 खानों में ग्रहों की मुख्तलफ हालतें

नं०	राशि	मालिक	उच्च	नीच	पक्का घर	किस्मत को जगाने वाला	ग्रह कुण्डली	फलराशि का
1	मेष	मंगल नेक	सूर्य	शनि	सूर्य	मंगल	मंगल	राहु
2	वृष	शुक्र	चन्द्र	=	बृह०	चन्द्र	रा-के	=
3	मिथुन	बुध	राहु	केतु	मंगल	बुध	शनि	शनि
4	कर्क	चन्द्र	बृह०	मंगल	चन्द्र	चन्द्र	चन्द्र	शु मं के
5	सिंह	सूर्य	–	–	बृह०	सूर्य	सू बृ	=
6	कन्या	बुध केतु	बुध/राहु	केतु	केतु	राहु	बु रा के	बु शु शु रा
7	तुला	शुक्र	शनि	सूर्य	शुक्र बुध	शुक्र	शुक्र	सू बु रा
8	वृश्चिक	मंगलबद	=	चन्द्र	शनि मं बद	चन्द्र	मं बद	=
9	धनु	बृह०	केतु	राहु	बृह०	बृह०	बृह०	शनि
10	मकर	शनि	मंगल	बृह०	शनि	शनि	शनि	बु के
11	कुम्भ	"	=	=	बृह०	बृह०	शनि बृ	=
12	मीन	बृ० राहु	बु के	बुध राहु	राहु	केतु	राहु	बुध

खाना नं० 2 का नीच नहीं होता और न खाना राहु व केतु ! सिर्फ दोनों की मुश्तर्का बैठक है जिससे राशि फल का ग्रह नहीं है यानि कि इस खाना के ग्रह अपना अपना या अपने अपने कर्मों के करने कराने का खुद जुम्मेदारी हैं खाना नं० 5 का उच्च नीच दोनों ही हिस्से नहीं होते यह अपनी खुद बनाई कमाई/ औलाद कमाई की किस्मत का ग्रह है। खाना नं० 11 का उच्च नीच दोनों ही हिस्से नहीं होते यह आम दुनियां मुतल्लका के किस्मत का लेन देन है। खाना नं० 8 का उच्च नहीं होता कोई मौत को नहीं मार सकता सिवाए चन्द्र के जो शिव की शक्ति व गैबी मदद मानि है। दुनियां की माता की कुदरत का बच्चा, माता के पेट में बच्चे की तरह रहने वाला खाना नं० 3 का नीच ग्रह फल में माना, वह मौत हालत से दूर होगा। मगर जायदाद जायदाद के लिए अच्छा न होगा। अगर जायदाद के लिए अच्छा हो भी तो कायम उपाय है।

खाना का ताल्लुक ग्रह व राशि नोट:- सूर्य [illegible] केतु [illegible] बुध चन्द्र ग्रहण राहु [illegible]

ग्रह	घर की राशि	उच्च फल की राशि	नीच फल की राशि	मियाद असर
बृह०	धन, मीन	कर्क - 4	मकर नं० 10	32 दिन
सूर्य	सिंह	मेष - 1	तुला - 7	22 दिन
चन्द्र	कर्क	वृष - 2	वृश्चिक -8	24 दिन
शुक्र	वृष, तुला	मीन - 12	कन्या - 6	50 दिन
मंगल	मेष, वृश्चिक	मकर - 10	कर्क - 4	56 दिन
बुध	मिथुन, कन्या	कन्या -6	मीन -12	68 दिन
शनि	मकर, कुम्भ	तुला - 7	मेष - 1	72 दिन
राहु	मीन	कन्या-6, मिथुन-3	मीन-12, धनु-9	औसत 40 दिन
केतु	कन्या	धनु-9, मीन-12	मिथुन-3, कन्या-6	360 से 366 दिन

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पीछे दी गई सूचि में राहु व केतु का जिक्र है और बुध का गौर से देखें तो मालूम होगा कि राहु खाना नं० 12 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है और इसी में नीच भी लिखा है। इसी तरह केतु खाना नं० 6 में घर का मालिक और इसी राशि में नीच भी।

राहु जब बृह० के घर खाना नं० 12 में सिर्फ हो तो नीच होगा हालांकि बृह० व राहु बाहमी दुश्मन नहीं, बराबर के हैं। राहु के वक्त (या जब राहु- बृह इकट्ठे हों) बृह० चुप ही हो जाता है राहु को आकाश (खाना नं० 12) नीला रंग माना है। बृह० की हवा को जब आकाश का साथ मिले या ज्यों ज्यों हवा आकाश की ओर ऊंची उठती जाएगी हल्की होती जाएगी और दुनियादारों के सांस लेने के काम की घटती जाएगी। लेकिन जब यही बृह० की हवा नीचे की तरफ को होती जाएगी तो केतु का साथ होता जाएगा (खाना नं० 6) तो हर एक की मददगार होगी इसी उसूल पर राहु के साथ जब बृह० हो तो न सिर्फ बृह० का असर चुपचाप बन्द हालत का होगा बल्कि राहु का अपना असर बुरा होगा। या शनि/बृह० की ताकत इकट्ठे पर नतीजा अच्छा होगा। इसके खिलाफ अगर राहु को बुध के खाली आकाश में खुला ही बेताब मिलता जाए अगर वो खाना नं० 12 के माने हुए आकाश में की बजाए बुध के खाली आकाश में ही हो तो राहु का फल उस का अच्छा बल्कि उम्दा असर देगा। या राहु को बुध का घर खाना नं० 6 या बुध का साथ मिले तो नेक असर देगा। राहु के भी बुध का दोस्त इसलिए दोनों के बाहम साथ से दोनों का फल उम्दा होगा। या दोनों ही खाना नं० 6 में उच्च फल के और दोनों में से हर एक या दोनों ही खाना नं० 12 में मन्दे फल के होंगे। राहु ठोस फर्श तौर पर अगर आकाश माने तो यह फर्श दीवार बृह० को साफ कह देगी कि ऐ बृह० तू मेरे ऊपर मेरी जगह या मेरे नीचे इधर इकट्ठी दुनिया में एक ही तरफ रहो गोया राहु ने बृह० को दो जहान में से सिर्फ एक ही तरफ कर दिया या राहु के साथ पर बृह० दो जहानों में से सिर्फ एक ही तरफ के जहान का मालिक रह जाता है या दो में से एक तरफ के लिए वो चुप ही किया जाता है।

<u>केतु:-</u>

जब बुध के साथ हो तो वो बुध के घर खाना नं० 6 में हो तो नीच होगा लेकिन जब केतु बृह० का साथ मिल जाए तो केतु उच्च फल का होगा। केतु बृह० बराबर का फल देगा। राहु केतु चूंकि अपने अपने से सातवें के बैठे के उसूल पर के ग्रह हैं इसलिए राहु अगर नं० 3,6 में उच्च हुआ तो केतु वहीं नीच होगा। यही हाल है कि केतु का। अगर केतु खाना नं० 9,12 में उच्च होगा तो राहु इन घरों में नीच होगा

<u>बुध:-</u>

जब बुध हो राहु के घर खाना नं० 12 में तो नीच होगा क्योंकि नं० 12 इसके दुश्मन का घर है और जब बुध हो केतु के घर नं० 6 में तो उच्च होगा, क्योंकि यह राशि बुध की अपनी ही राशि है और बुध केतु दोनों ही आपस में बराबर के ग्रह हैं और दोनों ही शुक्र के दोस्त हुए हैं बुध पर कोई असर न होगा। अगर केतु [illegible] हो तो खाना नं० 6 में नीच ही होंगे। बृह० के साथ बृह० के घरों में राहु साथ का नतीजा मुख्तलिफ होगा या बृह० के साथ या बृह० के घरों में राहु बुरा फल देगा और नीच होगा। बुध के साथ या घरों में केतु दुमे का इश्म फिर पत्थर या दीवार नीच फल का होगा क्योंकि राहु केतु मुकर्रा घर खाना नं० 6 और 12 भी बुध बृह० के ही हैं जहांकि इन्हें जगह मिली है।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ग्रहों के कुर्बानी के बकरे

शनि:- दुश्मन ग्रहों से बचाव के लिए शनि ने अपने पास राहु केतु दो ऐसे ग्रह ऐजेण्ट बनाए हुए हैं कि वो शनि की जगह फौरन दूसरे की कुर्बानी दिला देते हैं। राहु केतु मुश्तर्का की मजलूम शुक्र माना है। इसलिए जब शनि को सूर्य का टकराव तंग करे तो वो अपनी जगह शुक्र औरत को मरवा देता है या सूर्य शनि के झगड़े में औरत मारी जाएगी। या ऐसे कुण्डली वाले की औरत पर इन दोनों ग्रहों की दुश्मनी का असर जा पहुँचेगा। न सूर्य खुद बर्बाद होगा, न शनि, क्योंकि वह साहब बाप बेटा हैं। सूर्य खाना नं० 6 शनि खाना नं० 12 तो औरत पर औरत मरती जाए। चन्द्र शनि राहु औरत को दुख हल्का या औरत बर्बाद होवे।

बुध:- बुध ने भी अपने बचाव के लिए शुक्र से दोस्ती रखी है वो भी अपने दोस्त शुक्र को ही अपनी बला में डाला करता है या डाल देगा। चन्द्र बुध मुश्तर्का "बकरी दुध देगी मेंगनों डाल कर" दरिया में रेत, दूध में मिट्टी, चन्द्र बुध इकट्ठे तो मरेंगें मातृ।

मंगल:- मंगल बद (भाई) अपनी बला केतु (लड़के) पर डालता है। शेर कुत्ते को मरवा देगा। सूर्य खाना नं० 6 मंगल नं० 10 तो लड़का पर लड़का (केतु) मरता जाए। (भाई-भतीजे को मरवाए)

शुक्र:- शुक्र (औरत) गोबाल स्वभाव खुद अपनी बला कुण्डली वाले की माता पर जा डाले। चन्द्र -शुक्र नामुवाफिक तो माता अन्धी ।

बृहस्पति:- इसने अपना साथी केतु ही कुर्बानी के लिए रखा है। बृह० हो खाना नं० 5 मे और केतु किसी और घर में, अब अगर बृह० की महादशा आ जाए तो केतु के खाना नं० 6 का फल रद्दी होगा। औलाद का हाल जो खाना नं० 5 की चीज है। मातृ को केतु की महादशा 7 साल तकलीफ होगी। राहु-केतु खुद ही अपना आप दिखाएँगे। सूर्य - चन्द्र के लिए उनके अपने अपने निज हाल में दर्ज है।

नोट:- मंगल और बृह० इत्तफाक के मालिक होते हुए दूसरे की तो मदद करें और नाजायज़ तौर पर एक दूसरे पर ज्यादती करते नहीं देख सकते मगर जब खुद मुसीबत में हों तो गरीब केतु को मरवाते हैं। मिसाल के तौर पर तरबूज में:- बृह०-डण्डी, सूर्य-वज़न, चन्द्र-तरबूज के अन्दर का पानी, शुक्र-बीज, का गूदा (मगज़), बुध-गोलाई-आकार, शनि बीज या तरबूज की छाल-छिलका, राहु-जायका, केतु-धारियाँ, रंग-बिरंग। इसी तरह नारियल, खरबूजा, अनार, बेर आदि में (मिलावट का ताल्लुक) हर ग्रह की अपने असर जाहिर करने की निशानी के लिए ग्रह मुतल्लका में उस की बाबावार चीज में होगी। नर ग्रहों (सू., बृ., मं.) का राज या असर करने का वक्त दिन, स्त्री ग्रहों (चन्द्र शुक्र) का राज रात और नपुंसक ग्रहों (बुध मय पापी ग्रह) का राज दिन रात दोनों के मिलने का वक्त या सुबह-शाम होगा।

दौरा ग्रह:- खूब जोर से मिलने पर रेखा जिस तरफ से ज्यादा सुर्ख या लाल हो जाए वही तरफ इस रेखा या शाख के शुरू होने की तरफ होगी।

दौरा वाला ग्रह खाना नं० 7 का अपने दौरा के वक्त सब से पहले इस घर पर अपना असर जाहिर करेगा नहाकि वो जन्म कुण्डली में बैठा हो

यह जवाब ठीक नहीं है।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

इसके बाद अपने दुश्मन ग्रहों पर बारी बारी से जो दुश्मन ग्रह उस घर में हों जहां कि वो खुद बैठा था। बाद अजां दोस्तों पर और फिर अपने बराबर के ग्रहों पर अगर किसी घर में एक से ज्यादा ग्रह बैठे हों तो दौरा वाला ग्रह हर एक ग्रह के असर की तरतीब से बारी बारी दख्ल दुश्मनी से। और दोस्ताना बर्ताव करेगा। दोस्तों से अगर एक ही घर में दौरा वाले ग्रह के कई दोस्त या कई दुश्मन ग्रह ही बैठे होवें ग्रह चाल की तरतीब से। सू के दूसरे असर करेगा। अगर कुण्डली के खानों में दोस्त ग्रह जुदे और दुश्मन ग्रह जुदे घरों में ही हों तो खानों की तरतीब से । नं० । के बाद दो, तीन चौथा बर्ताव करेगा।

नं. के बाद वाला खाने के बामुजिब कोष्ठ

35 साला चक्र:-

पांचों अंगुलियां और सातों ग्रह की चाल या 7×5 = 35साल के बाद सब ग्रह अपना चक्र पूरा कर जाते हैं जो ग्रह पहले चक्र में बुरा असर करते हैं वो अपने दूसरे चक्र में यानि 35 साल के बाद दूसरी चाल में अच्छा फल देंगे ऐसे चक्र सारी उम्र (120 साल) में तीन चार ज्यादा से ज्यादा आते हैं। हर ग्रह का असर, मियाद भी इतने ही साल हैं जितने साल की उम्र पर असर मिला है यानि बृह० 16 की उम्र में असूमन होगा और 16 साल ही असर देता रहेगा। इसी तरह बाकी सब ग्रह अपना अपना असर देते हैं। इसलिए ग्रहों में माना है कि जो ग्रह पहले 35साला चक्र में बुरा असर देगा दूसरे चक्र में पहला असर न देगा। यानि अगर दाईं तरफ का असर हो गया तो बायां हिस्सा बाद में असर देगा। बाप-बेटे की उम्र और किस्मत का बाहमी तअल्लुक 35 साला चक्र के सबब 70 में खत्म मिला है।

ग्रहों की आम मियाद के सालों का असूमन 35 साला होता है। यह 35 साला मियाद 35 साला चक्र कहलाता है। ग्रहों का 35 साला चक्र और उम्र का 35 साला चक्र (या इन्सान का 35 साला चक्र) दो जुदी जुदी बातें हैं फर्ज किया कि एक शख्स के जन्म दिन से ही बृह० का दौरा शुरू हुआ बाकी ग्रह एक के बाद दूसरा (यानि बृ. 6साल, सूर्य2 साल आदि) कुल 35 साल का दौरा तमाम ग्रहों ने इस की 35 साल उम्र तक ही पूरा कर दिया लेकिन हो सकता है कि इसका पहला ग्रह बृह० की बजाए शनि शुरू हुआ हो और जन्म दिन की बजाए 7 साल से शुरू हो अब तमाम ग्रह तो 35 साल में ही दौरा पूरा कर लेंगे। अब आखिरी ग्रह का आखिरी दिन होगा इस वक्त इन्सान की उम्र 35 साल ग्रहों का दौरा मगर 6 साल, जब अभी शनि का या उम्र का पहला ग्रह शुरू भी न हुआ था यानि कुल उम्र 41 साल हो चुकी होगी जो 35 साल के हिसाब से इन्सान का दूसरा 35 साला दौरा होगा अब जिस दिन से ग्रहों का दूसरा शुरू हुआ (यानि जिस दिन जन्म दिन से शुरू होने वाला ग्रह दूसरी बार शुरू हुआ) उस दिन से जिस दिन ग्रहों ने पहले बुरा असर दिया था वो अब अपनी दूसरी चाल में बुरा असर न देगा यह जरूरी नहीं कि जो बुरा फल देने वाला अच्छा फल ही देगें मगर अब बुरा असर न देगा।

बारह घण्टे का दिन, 12 घण्टे की रात, 12 महीने का साल, 12 राशि का असर और 12 वर्ष मासूम बच्चा और 12 साल के बाद अच्छे दिनों की उम्मीद सब के सब 35 में शामिल हैं और बगावत की हवा या बृह० की तलाश की फिक्र में जर्द रंग का असर दुनिया की सब चीजों पर असर करता है। रंगदार, हाथ के नक्शा के पूरे मायने यह होंगे कि जिस ग्रह का जो रंग भी दिया गया है जब कभी उस ग्रह के असर का वक्त होगा वो ग्रह उस रंग की चीजों पर या उस रंग की चीजों से अपना असर जाहिर करेगा। यानि रंग के हिसाब से असर करने वाली चीज को पहले तो देखना

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

है कि वो किस ग्रह से मिलती है फिर देखना है कि वो चीज दरअसल किस ग्रह की चीज है। उदाहरण के लिए एक सुर्ख रंग गाय है, रंग सुर्ख (गन्दमी) सूर्य का है मगर चीज खुद गाय शुक्र की है। इसलिए सुर्ख गाय के वक्त सूर्य व शुक्र का मुश्तर्का असर लेंगे। स्याह भैंस का रंग व जिस्म दोनों ही शनि हैं मगर भैंस पर सुर्ख रंग (भूरा) होने पर सूर्य का उत्तम फल होगा और शनि का बिलकुल न होगा। क्योंकि यह दोनों ग्रह इकट्ठे काम नहीं करते और अगर किसी वक्त करें तो जमा (सूर्य), तफरीक (शनि) दोनों का नतीजा शून्य ही करते जाएंगे। अगर रंग भैंस का स्याह हो मगर माथा उसका सफेद हो तो शनि चन्द्र भी मुखालफ होंगे। अब केतु (दोरंगा रंग) और शनि दोनों का ही असर होगा। केतु और शनि के मदद पर हों तो मददगार रहेगा और शनि व केतु के दुश्मन ग्रहों की चीजों पर बुरा असर देंगे। लेकिन अगर भैंस का रंग भूरा हो और माथा सफेद हो तो सूर्य व चन्द्र का नेक असर होगा इसी तरह से कुत्ता दोरंगा कुत्ता (काला रंग के धब्बे वाला) केतु होगा। लेकिन जब सुर्ख धब्बे हों तो केतु का असर न देगा, सूर्य का ही असर देगा। लेकिन अगर ऐसा कुत्ता सुर्ख-सफेद रंग का हो तो सूर्य चन्द्र का नेक असर होगा। जब कोई चीज सूर्य चन्द्र या शनि किसी भी ग्रह के असर की साबित होगी तो फिर देखना होगा कि अब यह चीज जो फर्ज कि सूर्य के असर की है वो उस हाथ वाले के किस बात में फायदामन्द होगी यानि उस सूर्य के दोस्त ग्रह कौन कौन से हैं उस पर वो नेक असर देगी। जो ग्रह सूर्य के दुश्मन हैं उन ग्रहों की चीजों पर बुरा असर देगी। यही हाल हर वक्त के ग्रह के असर का होगा। जिस्म इन्सानी पर असर करने के लिए तमाम ग्रह राशियों के असर के अलावा बाकी चीजें भी हैं जो ग्रहों की तरह असर करने वाली होंगी। मगर आखिरी फैसला की बात तमाम ही को इकट्ठा मिला कर सब पर जबरदस्त असर करने वाली बात का नतीजा होगी। मजमूआ जो दिमाग पर बड़ा भारी असर होने से बनाएगा मगर मेहनत के साथ किताब के जरिया निकाला हुआ नतीजा या करमात एक कारआमद चीज होगी।

जिस्म व ग्रह का ताल्लुक

<u>दुश्मन पार्टी</u>:- शनि का सूर्य, सूर्य का शुक्र, शुक्र का बृह०, बृह० का बुध, बुध का चन्द्र, चन्द्र का केतु, केतु का मंगल बद, मं.बद का-राहु

<u>दोस्त पार्टी</u>:- सूर्य का चन्द्र, चन्द्र का बृह०, बृह० का मंगल नेक, मंगल नेक का राहु, राहु का बुध, बुध का शनि, शनि का शुक्र, शुक्र का - केतु।

ग्रहों में उपरलिखित दुश्मन पार्टी के ग्रह क्रमश: एक दूसरे के दुश्मन हैं जिनका रहनुमा या सरदार राहु है।

दोस्त पार्टी में ग्रह क्रमश: एक दूसरे के दोस्त हैं जिनका रहनुमा या सरदार केतु है। यानि राहु तो सिर की रहनुमाई और केतु पांव के धड़ का मालिक है।

<u>इन्सानी जिस्म में</u>:- जिगर--मंगल, दिल-- चन्द्र, धड़- केतु के सलाहकार दिमाग व अक्ल =बुध, देखना भालना = शनि, सिर =राहु के सलाहकार हैं। सिर (राहु) धड़ (केतु) दोनों को मिलाने वाली गर्दन के सांस का मालिक बृहस्पति है लिहाजा बृह० (बहालत एक अकेला इन्सानी जिस्म, बहालत कुल इन्सान तमाम दुनिया) यानि लोक और (गैबी दुनिया तमाम ग्रहों की मुश्तर्का ताकत) परलोक का मालिक है। सिर्फ इसी सिफत पर यह ग्रह किसी से दुश्मनी नहीं करता।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ग्रहों की दृष्टि

हस्त रेखा में रेखा की शाखों या रेखा के उतार व झुकाव को ज्योतिष विद्या में ग्रह दृष्टि कहते हैं। रेखा का ऊपर को झुकाव और उठाव ⟶ तरक्की या नेक असर और नीचे को झुकाव बुरा असर बतलाता है। यही हाल शाखों के ऊपर को या नीचे को निकल जाने से लिया है। रेखा का ऊपर को झुकाव या उठाव से मुराद होगी कि इस में इस ग्रह का असर अन्दर मिल रहा है। जिस ग्रह के बुर्ज की तरफ को वो रेखा उठ रही है। कुण्डली में पहले घरों के ग्रह अपने से बाद के घरों में अपना असर मिलाया करते हैं सिवाए खाना नं० 8 जिसके ग्रह पीछे को देखते या अपने से पहले घरों में अपना असर मिला देते हैं। इस तरह जब तक पहले घरों का बुरा असर खतम न हो बाद के घरों के ग्रहों का नेक असर न होगा। खाना नं० 8 की तासीर उल्ट लिखेंगे।

एक अकेले का दुश्मन न कोई- न ही दोस्ती होती है
रियाया नहीं न राजा कोई- न ही वज़ीरी होती है
एक से 6 तक तरफ को पहली, हिस्सा दायां कहलाती है
बाद के घर 7 से 12, तरफ बाईं हो जाती है
तरफ पहली न ग्रह हो कोई, बाद के ग्रह सोए होते है
घर जब बाद का खाली होए तरफ कोई पहली मिलते है
जिस घर में ग्रह हो कोई बैठा, जागता घर वो लेते है
जागे घर का ही असर ग्रह का, जब तक खाली होते
अंध दृष्टि निकम्मा ही होवे, निर्बल प्रबल किसी भी घर
पर दृष्टि ~~कि~~ का जब तक बाकी, असर जाए न दूसरे घर
घर ~~8~~× 9--11 गुरु के जागें, चन्द्र के 8,4,2 घर
रवि जगाता घर पांचवा को, शुक्र जगाए सातवां घर
शनि से 10 वां राहु 6 को, बुध जगाता है तीसरा घर
मंगल से घर पहला जागे, केतु जगावे बारहवां घर
ग्रह दोस्त नहीं बाहम लड़ते, झगड़ा कराते दूसरे हैं
शनि रवि को झगड़े देवे, ऐसे ग्रह सभी के है
ग्रह मुश्तर्का बुरा नहीं करते, वक्त कुण्डली के खानों में
फल 2,11 अपनों अपना, मर्द मन्दिर, गुरुद्वारा में
सभी ग्रह जब शनि से मिलकर, बैठे हों या कहीं भी हों
ग्रह दृष्टि से जांच नहीं/देखे, मरते जान औलाद के हो
इस ज़हर को घर नौवें से, राहु केतु हटाते हैं
अगर मदद न उल्टी देवे, मंगल केतु मरते है
एक दीवार के घर दो बाकी, ग्रह मुश्तर्का होते हैं
दो ग्रह तो कभी न मिलते, दोस्त मिले ही मिलते हैं
वजह किसी दीवार फटे गर, दुखी ज़हर हो जाती है
आम ~~खेती~~ [illegible] किस्मत हो मन्दी, मौत जल्दी हो जाती है
घर 10 में लड़ते दुश्मन गर, तो देवता अन्धा हों
सूर्य 4, शनि हो 7, मंगलबद (मेहरबान), आला अन्धा हो
राहु केतु घर चौथे बैठें, या चन्द्र भी खाली हो
शनि 11 या गुरु खाली, देवता वो कुल अन्धा हो

नोट:- मुश्तर्का ग्रहों की चीजें देखा कर लेवें मसलन शनि नं० 2 चन्द्र नं० 3 हो और दुश्मनों के कोठे की दीवार फाड़ कर इस में दरवाजा रख कर किसी मकान

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

घर अपने से पांचवें दोस्त, सातवें उल्ट होते हैं (में रास्ता मिला दें।)
आठवें ~~घर पर टक्कर~~ खाते, बुनियाद नौवें पर होते हैं
तीसरें घर के जुदा जुदा तो , बुध से वो आ मिलते हैं
घर 10 पर बाहम दुश्मन,धोखा पा देते या खाते हैं
नर ग्रह बोलते पुरुष के घर में, स्त्री बोलते नाक में है
बुध है बोलता 3,6 में, तो पापी नहीं बोलते 2 में हैं
ग्रह शत्रु में गुरु जो आवे, व वैर खत्म हो जाते है
माता चन्द्र जब साथी होवे , दोस्ती पैदा करता है
घर पांचवां औलाद का मिलते, 11 होवा घर धर्मी है
घर आठवें जो मौत दिखाती , साथ लगी 9 बुजुर्गी हैं
घर पहले की उम्र सौ साला, 90 तीन,नौ से दस बारह है
85 उम्र सात चौथे की लेते, 80 होती घर छठे की है
पौण सदी या साल 75 , गुरु मन्दिर घर 2 की है
घर और ग्रह की उम्र जुदा पर, गुजरती दो की इकट्ठी है
गुरु जगत की उम्र 75, बुध केतु 80 होती है
शुक्र चन्द्र की उम्र 85, शनि मंगल राहू 90 है
स्त्री ग्रह जब मिले नरों से उम्र 96 होती है
साथ मिले जब बुध पापी का, वही 85 होती है
रवि मालिक है पूरी सदी का उम्र लम्बी उस होती है
ग्रहण लगे जब चन्द्र रवि ~~केतु~~ को, साल तीन कम होती है।

कुण्डली में हर ग्रह व खाना नम्बर की मुतल्लका चीजों का असर देखने के लिए उसकी बाहम दृष्टि का ताल्लुक -- हर ग्रह अपने से सातवें 100 प्रति शत नजर से देखते हैं, खाना नं0 1 और 7 व खाना नं0 4-10 पूरी नजर रखते हैं। अमूमन दुश्मन होते हैं। खाना नं0 5,9 व खाना नं0 3,10 आधी नजर और अमूमन दोस्त होते हैं। खाना नं0 2,6 व खाना नं0 8,12 धणकर खराब फल मगर राशि का अंध ग्रह अपनी राशि में उत्तम फल देगा। 25 प्रतिशत नजर, 25 प्रतिशत विरोध, 100 प्रतिशत दृष्टि की हालत में दो ग्रह एक दूसरे के ज्यादा नजदीक या एक ही हो जाते है या मिल जाते है। 50 प्रतिशत पर इन का दरम्यानी फासला नरफ रह जाता है या दोनो की ताकतें आधी आधी बाहम मिल जाती है। 25 प्रतिशत पर सिर्फ एक चौथाई मिलते है यानि तीन चौथाई वो एक दूसरे से दूर रह जाते है। बुध की राहू ~~केले~~ केतु से दृष्टि ~~खाम~~ खाली खाना नं0 2 ,9 से मिलती है।

ग्रहों की बाहम दृष्ट व राशियों (कुण्डली की खानों) से ताल्लुक:- बात को समझने के लिए राशि मिस्ल स्त्री और ग्रह को मर्द कहें , दोनो का कसलाद ग्रह व राशि या मर्द- औरत का जोड़ा , मिथुन राशि बुध के खाली आकाश में शुक्र की गृहस्थी मुहब्बत (हकीकी व गैर हकीकी में 2 दृष्टि - दुनियां) की त्रिलोकी या खाना नं0 3 में मंगल के पक्के घर भाई-बन्दी से चल रहा है। इस जोड़े की स्थित तीन हिस्सों में बटी हुई समझें। (1) घर की मालिकियत या साधारण जैसी कि हर मर्द औरत की मिल्की आ सकती है। (2) अंध हालत की यानि जो हर एक या बाहम एक दूसरे के लिए दूसरे की नेक हो सकती है। (3) नीच या मन्दी और दुश्मनी भरी बुरी या एक के हाथों दूसरे का बुरा करने वाली होगी।

हर एक राशि के बा असर के लिए इस के घर का मालिक

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ग्रह उदाहरण का आम हालत का (भला या बुरा) जैसे फल की राशि के मुताबिक नेक फल देने का ताल्लुक वाले राशि को ग्रह के लिए या ग्रह को राशि के लिए मानें और नीच फल की राशि का ग्रह बुरे असर के ताल्लुक होगा। पर किसी खाने राशि की कुल मुतल्लका ग्रह के लिए मानें वाले ग्रह के लिए उस राशि के ताल्लुक से समझें। लेकिन जब किसी जातकी। हर एक राशि किसी खास ग्रह के लिए खास-खास ताल्लुक (बुरा या भला) और हर एक ग्रह किसी खास राशि के लिए खास खास ताल्लुक मुकर्रर किया गया है। इस तरह पर मुकर्रर किए हुए जोड़े से से जब कोई ग्रह अपनी मुकर्रर राशि को छोड़ किसी और ग्रह की मुकर्रर राशि में जा बैठे तो वो ग्रह जा चल कर दूसरी जगह जा बैठा है, कुण्डली वाले की किस्मत पर वैसा ही असर करेगा जैसा कि वो दूसरी जगह जाकर हो गया है।

(2) कुण्डली के बारह खानों को एक बड़े मकान की बारह कोठरियां कह कर है, हर एक खाना की लकीर को उस कोठी की दीवार मानें तो ख्याल आएगा कि कुण्डली के चार खाने चार चार दीवारों वाले, चार कोने हैं जिनमें तीन कोना हुआ ख्याल किया गया है। बाकी 8 खाने सिर्फ 3-3 दीवारों से घिरे हुए हैं, आधे-आधे मकानों की तरह के 8 मकानों हैं:- जिस में कुण्डली वाले का आधा आधा हिस्सा मिल कर कुल आठों से आधा या चार पूरे घर और हैं। गोया मकानों के कुल आठ घर हो गए पहला घर अकेला बना का जिस व आठवां (8) खाना नं0 8 मौत है. ग्रहों के लैम्प मानें, इन कोठरियों के दरवाजे किसी न किसी तरफ खुले हुए माने गए हैं या एक घर में जलते या जाते हुए लैम्प की रोशनी उन्हें दरवाजों से दूसरे के अन्दर जाती हुई मानी गई है। रोशनी के इस तरह दूसरे घर में पहुंच जाने के ढंग को ग्रह की दृष्टि कहलाती है। "लाल किताब" में हर ग्रह अपने से सातवें देखता है से मुराद है कि जो अपने उस घर से अपने से सात के घर को देखता है, या उसका अपना बैठे हुए घर का असर जो अपने सात खाने में भी पहुंचा रहा है। मगर यह मतलब नहीं है कि जो ग्रह अपने से सात वाले सातवें घर के ग्रह के असर को अपनी तरफ अपने बैठे हुए खाना नं0 में खींच रहा है। खाना नं0 8 मौत का घर ताकत देखता है यानि कि वो अपना असर खाना नं0 2 की तरफ देखता है वह खाना नं0 2 को सब के लिए राहु-केतु की मुतल्लका बैठक के असर का मुकर्रर है। अगर खा नं0 2 में खाना नं0 8 के सारे यानी असर में तमाम पापी ग्रहों का जमा की शामिल के दूसरे लफ्जों में जमा होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरू हो जाना ——— रेखा का टूटा हुआ नहीं होना बल्कि तब्दीली हालात जाहिर करता है। चाहे वो तब्दीली अच्छी तरफ हो चाहे बुरी तरफ हो, अगर ऐसी तब्दीली बुरी तरफ को जाती मालूम हो तो शाह के रिश्ते और नेक असर होगा।

अपने से सातवें घर को देखने वाले खानों के ग्रह यानि खाना नं0 3,6,9 के ग्रह तीसरा चौथा को देखता है मगर चौथा तीसरे को नहीं देखता। इसी तरह छठा बारहवें को देखता है मगर बारहवां छठे को या में अपना असर नहीं डाल सकता। सिवाए खाना नं0 12 के बुध के क्योंकि बुध को आकाश माना है और खाना नं0 6 पाताल और खाना नं0 12 आकाश में ही जाकर आकाश होता है। हर सातवें रास तब्दीली हालत कर सकते हैं। खाना नं0 8 मौत पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें रास तब्दीली हालात के करते हैं। दृष्टि अपने से बाद के सातवें को देखने वाले घर यह हैं:-

खाना नं0 3 देखता है नं0 9 को (=) खाना नं0 6 देखता है नं0 12 को, नं0 8 देखता है खाना नं0 2 को।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बुध के ग्रह की अलग ही कहानी है जो दूसरी जगह लिखी है। मुलाहज़ा ख० 3 के ख० 9 का देखता हुआ बुध या ख० 9 में बैठा हुआ बुध, ख० 12 ख० 6 को देखता हुआ बुध सब ही ग्रह का फल बेबुनियादी कर देता है। चाहे वो तमाम एक तरफ और बुध अकेला ही मुकाबला पर, चाहे वो इसके दोस्त हों या दुश्मन, चाहे वो इसके साथ ही हों या उन से अलग मुकाबला पर। खाना ख० 8 पीछे को देखता है इसी असूल पर खाना ख० 8 ने ख० 2 को देखा और ख० 2 ने ख० 6 का तो ख० 8 का असर ख० 6 में 25 प्रतिशत होगा और ख० 6 ने ख० 12 को देखा तो ख० 8 का असर ख० 12 में चला गया या ख० 8 का असर 12 में 25 प्रतिशत %.जाता है अब ख० 2 में 100 प्रतिशत ख० 8 का असर मिला है और ख० 12 में 2,6 की मार्फ़त 25 प्रतिशत ख० 8 का असर मिला होता है, मगर ख० 2 देखता है 25 प्रतिशत ख० 12 को।

<u>100 प्रतिशत और अपने से बाद के सातवें को देखने का फ़र्क</u>

100 प्रतिशत वाला खाना अपने से बाद के खाना में दूध में खांड की तरह अपना असर ऐसे का वैसा ही मिला देता है मगर अपने से सातवें वाला अपने से बाद के घर के असर को उल्टा देता है गोया दूध का दही ही जमीयत कर देता है दोनों हालतों में दृष्टि का असर तो 100 प्रतिशत ही होता है फ़र्क थोड़ा सा यह है कि (1) 100 प्रतिशत के असर के खाने सिर्फ़ बन्द मुट्ठी के अन्दर के मु मुकर्रिर हैं मगर अपने से बाद के खाने बाहर की त्रिकोणों के घरों से मुकर्रिर हैं मुट्ठी के अन्दर अपने से सातवें का असूल न होगा और न ही बाहर वालों पर 100 प्रतिशत का असूल चल सकेगा।

(2) जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर को 100 प्रतिशत नज़र से देखता है तो वो देखने वाला ग्रह अपने बाद के घर के ग्रह में (बाद के घर में नहीं) अपना असर ऐसा मिला देता है कि पहले का असर दूसरे में मिला हुआ मालूम ही न होगा जैसे दूध में खांड (ऐसी मिलावट को दूध की मिलावट कहते हैं) और इस पहले घर वाले ग्रह का वही असर रहेगा जैसा कि वो पहले घर में था। मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के सातवें को देखे तो न सिर्फ़ देखने वाले ग्रह का असर उस घर में (ग्रह में नहीं) ऐसा मिला हुआ होगा जैसे एक टांग कटे आदमी को दूसरी टांग लगा दी गई (दो चीज़ों का इकट्ठे होकर काम करना मगर अपने अपने वजूद को न छोड़ना, यह मिलावट संगत की कहलाती है) बल्कि इस पहले घर वाले ग्रह का असर बाद वाले के लिए बिल्कुल उल्ट होगा। यानि अगर पहले घर वाले का पहले घर में नेक असर था तो बाद के घर में मिलने के वक़्त वो पहला असर अगर नेक था तो बाद वाले के लिए बुरा ही होगा मगर पहले का खुद अपने लिए वैसा कि वो होवे वैसा ही रहेगा।

ग्रह का असर ग्रह में और ग्रह का असर दूसरे ग्रह के घर में और उन दोनों का फ़र्क़:- (1) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के ग्रह में मिल जाने से मतलब यह होगा कि पहले घर के बाद के घर के ग्रहों का असर एक ही हो गया। या बाद के घर के ग्रह में पहले घर के ग्रहों का असर ऐसा मिला कि जुदा न किया गया लेकिन इस मिलावट से बाद के घर में यानि बाद के खाना नम्बर में अपना कोई असर न डाला, हो सकता है कि उस बाद के घर में कई ही ग्रह हों पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के सब ग्रहों (जितने भी हों) में जब मिला तो हो सकता है कि अब असर वो पहले तक सब जो बाद के घर में थे दोस्त हों, तो अब

(3) इनमें पहले घर के ग्रह की ज़हर मिली तो वो सब के सब या इनमें

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

में से चन्द्र मालूम या चन्द्र दूसरों के दुश्मन हो जाएं।

(ख) उन में रोशनी पैदा कर देने की ताकत का असर मिल जाए तो जो पहले दुश्मनी भाव से वे अब बाहम या चन्द्र दूसरों से दोस्ती का ताल्लुक कर लेवें।

(2) पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर में मिल जाने (ग्रह में मर्दों) से मुराद होगी कि बाद के घर के ग्रह खास- अलग ही रहें मगर की मंगल की बनाई हुई मिलावट की तरह अलग अलग होते हुए भी पहला आ मिलने वाले ग्रह के असर का गुलाम हो क्योंकि कुल घर का ही असर आ मिलने वाले ग्रह के असर से सब के लिए बदल दिया या बाद के घर के ग्रहों के लिए जो बाहर बराबर ही किसी और असर का हो गया। यानि कुल ग्रहों के अपना अपना पहला असर कुल घर की तमाम चीजों पर बदल कर दिया। जब ग्रह से ग्रह मिला था तो असली तौर पर यह फर्क हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने भी बाद के घर के ग्रह के असर को बदला था यानि बाद के घर का असर जिस में कि वो ग्रह जिनका असर ही बदला गया बैठा था सिर्फ अपना ही बदला हुआ असर कुल खाना ~~असर~~ की सिर्फ उन चीजों पर किया। जो चीजें कि उस असर बदला जाने वाले ग्रह की और उस घर की जिस में बैठा हुआ कि वो असर में बदला जाने वाला ग्रह था, थीं। अगर बहुत ग्रह हों तो उन ग्रहों के जिनका असर बदला गया अपने बदले हुए असर का सबूत सिर्फ उन्हीं चीजों पर दिया जो चीजें कि उस खाने की उन ग्रहों से मुताल्लका हैं। मसलन - बुध व शुक्र दोनों दोनों का ही पक्का घर खाना नं0 7 है जिस में ऊपर से खाना नं0 1 के का असर मिल सकता है, फर्ज करें कि खाना नं0 1 में है सूर्य और नं0 7 में हो शुक्र बुध, अब सूर्य का असर दोनों में मिल गया यानि शुक्र व बुध दोनों ही सूर्य की तरह चमकने लगे और सूर्य का असर नं0 7 वालों के लिए अपना पहले घर में उच्च हालत का होने की बजाए उल्टा बुरा न होगा और वो असर दोनों ग्रहों में दूध में खाण्ड की तरह मिल जाएगा। यह है हालत 100 प्रतिशत की।

दूसरी मिसाल :- फर्ज किया कि शुक्र हो खाना नं0 6 में और मंगल हो खाना नं0 12 में, दृष्टि में 6-12 अपने से सातवें हैं यानि शुक्र नं0 6 का जो असर है खाना नं0 6 में कुल का उल्ट होगा खाना नं0 12 में, उस ग्रह के लिए जो खाना नं0 12 में है। वो है मंगल, गोया अब मंगल के लिए वो खाना नं0 12 सब ही चीजों के असर के लिए जो खाना नं0 12 की हैं मुबारक होगा। क्योंकि नं0 6 के का शुक्र नीच है जब इसका असर नं0 12 में गया तो वो नं0 12 की तमाम चीजों के लिए उच्च फल की होंगी। मगर यह उच्च फल सिर्फ मंगल के लिए होगा, मंगल के लिए जो खाना नं0 12 का है यानि कुण्डली वाले के भाई (मंगल) का गृहस्थ का सुख उस भाई के लिए अच्छा होगा। मगर कुण्डली वाले के शुक्र (औरत) का फल पैदे का वैसा ही मन्दा और नीच होगा। मुख्तसर 100 प्रतिशत की मिलावट की हालत में कुण्डली वाले को जाती अच्छा बुरा असर मिलेगा मगर अपने से या सातवें की दृष्टि असर करेगी बाद के घर पर जिस की वजह से उस घर का जो ग्रह कुल कुण्डली वाले का जैसा भी ताल्लुकदार होवे उस पर असर देगी। मगर कुण्डली वाले पर सीधा असर न होगा। मसलन बाद के घर में सातवें मिलावट की हालत में शुक्र है तो असर होगा बाद के घर का शुक्र पर उल्ट कर या औरत जात के ताल्लुक दार या कुण्डली वाले के बहुरानी आदि पर अपने असर का उल्ट असर होता होगा। अगर पहले घर का कुण्डली वाले को मन्दा फल मिलता रहा है तो उस मन्दे फल का उल्ट अच्छा फल मिलता जाएगा, कुण्डली वाले के उस ग्रह के मुताल्लका रिश्तेदार को जो बाद के घर के ग्रह से कुण्डली वाले के साथ संबंध हो, यानि मं. हो तो भाई बुध आदि। है तो बदल

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

रोज़गार, बीमारी, शादी, औलाद, सफ़र आदि खास-खास बातों के लिए दृष्टि :-

दो घरों के बीच जब घर होवे 3 (पांचवां) दोनों खानों के ग्रह बाहम मददगार होंगे, चाहे दोस्त हों चाहे दुश्मन, पांच (छठवां) देखने वाले घर के ग्रह देखा जाने वाले घर पर अपना बैठा होने वाले घर के असर का उल्ट असर देंगे। मगर दृष्टि की शर्तें अलग होंगी, 6 (आठवां) दोनों घरों के ग्रह बाहम टकराव पर होंगे। सूर्य खाना नं0 8 के जिस में लोहार व मुश्तरी की तरह का टकराव बारिश, बरसात देने का फायदा टकराव होगा। बाकी सब टकराव के घरों में मन्दा असर होगा। 7 (नौवां) दोनों घरों के ग्रह बाहम बराबर दोस्ती व दुश्मनी जो भी होवे। 8 (दसवां) दोनों घरों के ग्रह बाहम दुश्मनी पर होंगे मसलन खाना नं0 9 से 6 के तक (दरम्यानी खाने) बीच खाली होवें 10 से 12 = 3, 1 से 5 = 5 कुल 8 और क्योंकि नं0 9 में शनि है जो नं0 9 में निहायत मुबारक और 60 साला असर का है और नं0 6 में बुध है जो बतौर बुध नं0 6 में ऊंच या राज योग है लेकिन अब अगर खाना नं0 6 वाले शनि देने वाले के माया आदि सिर्फ बुध के मुतल्लका कारोबार ही करें तो वो राज करने के लिए राज योग होंगे लेकिन अगर वही माया आदि शनि के मुतल्लका कारोबार करें तो वो बरबाद होंगे बतौर बुध नं0 9 वालों के लिए यानि इसके बुजुर्गों के लिए शनि का फल उत्तम ही होगा। और नं0 6 वालों माया आदि के लिए बुध के काम मुबारक होंगे। इस दुश्मनी का देने वाले पर कोई बुरा असर न होगा। अगर कोई होगा तो शनि का नं0 6 के घर के मुतल्लका वालों पर मन्दा होगा। सिवाय खाना नं0 10 से नं0 5 तक के बीच घर होवें (खाना 12 से 5 यानि) कुल 6 घर मगर खाना नं0 5 से 10 तक के बीच (दरम्यान बीच का) कुल 4 घर यानि खाना नं0 10 देख सकेगा नं0 5 को मगर नं0 5 नहीं देख सकता नं0 10 को सिवाय नं0 5 के चन्द्र के जो नं0 10 के लिए ज़हर होगा। आम तौर पर पहले घरों के ग्रह दूसरे घर वालों को देखा करते हैं (सिवाय खाना नं0 8) लेकिन खाली खानों की हालत में दोए घर या दोए ग्रह देखने के लिए ऊपर की शर्तें आगे पीछे दोनों ही तरफ़ लगा कर देखी जाएगी। A* खाना नं0 2-6, 2-9, 2-10 व 11-3 व 3-8, 3-5 मुश्तर्का गिने जाते हैं।

> जब ग्रह बोलते कुण्डली के घर में, सभी बोलते साथ में हैं,
> बुध के बोलता 3-6 में, तो चाहे नहीं बोलते 2 में हैं।

(नोट:- आवश्यक दृष्टि अगले पृष्ठ पर दी गई है।)

ग्रह का असल असर हर घर में :-

जन्म कुण्डली में कोई भी ग्रह A जिस हैसियत से बैठा होवे वो ग्रह अपनी उस हैसियत का असर (अच्छा, बुरा, मन्दा ऊंच-नीच आदि) सिर्फ उस वक्त देगा जिस साल के वो वर्ष फल के हिसाब से उस बैठा होने वाली हैसियत के लिए मुकर्रर की हुई राशि का पहले घर में आ जाए मसलन बृह0 ऊंच है खाना नं0 4 में सो बृह0 का ऊंच होने का असर सिर्फ उस वक्त होगा जिस साल कि वो वर्ष फल के हिसाब से अपने ऊंच मौसम होने के खाना नं0 4 या 2 अप्रैल में आ जाए। जन्म से ऊंच तो है मगर असल ऊंचपन सिर्फ साल मुकर्रर और राशि या खाना नं0, फल का असर मुकर्रर में आने पर ही जाहिर होगा। इसी तरह ही सब ग्रहों का और सब तरह का होगा। न हमेशा अच्छा और न हमेशा ही मन्दा गिना जाएगा। यही हाल दोषी के ग्रह का है यानि दोषी का

A* खाना नं 1 व 11 की खास वक्त की दृष्टि के लिए सफ़ा 16 सतर नं 15 देखें

देखें इस किताब का पेज 155 (मंगल नेक) नीचे से पांचवीं लाइन

पचार की आयु 4-2

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

खाना नं०	दृष्टि	बाहमी मदद	आम हालत	टकराव	बुनियादी	धोखा	मुश्तर्का दीवार	अचानक चोट
1	A क	5	7	8	9	10	2	3
	B ख	9	7	6	5	4	12	
2	A क	6	8	9	10	11	3	4
	B ख	10	8	7	6	5	1	
3	A क	7	9	10	11	12	4	1
	B ख	11	9	8	7	6	2	
4	A क	8	10	11	12	1	5	10
	B ख	12	10	9	8	6	3	
5	A क	9	11	12	1	2	6	7
	B ख	1	11	9	6	7	4	
6	A क	10	12	1	2	3	7	4
	B ख	2	12	11	10	9	5	
7	A क	11	1	2	3	4	8	1
	B ख	3	1	12	11	10	4	
8	A क	12	2	3	4	5	9	10
	B ख	4	2	1	12	11	7	
9	A क	1	3	4	5	6	10	7
	B ख	5	3	2	1	12	8	
10	A क	2	4	5	6	7	1	4
	B ख	6	4	3	2	1	7	
11	A क	3	5	6	7	8	12	1
	B ख	7	5	4	3	2	10	
12	A क	4	6	7	8	9	1	10
	B ख	8	6	5	4	3	11	

"क" देख सकता है खाना को, "ख" देखा जा सकता है खाना नं० से।

ग्रह (मुश्तरका धोखा-दृष्टि) जिस वक्त खाना नं० 10 वाले के घर में आ जावे धोखा पूरा देगा और कच्चा धोखा या थोड़े का ग्रह जब खाना नं० 2 किस्मत के ग्रह का घर खाना नं० 11 किस्मत को जगाने वाले ग्रह के घर में आ जाए तो धोखा देगा ठेठ खानों में। अच्छा ग्रह असर अच्छा उस वक्त होगा जिस वक्त वो खाना नं० 8 में आ जाए। इसी तरह ही वर्ष फल के हिसाब से हर घर में आने पर असर की हालत होगी। यानि खाना नं० 6 में बुध राहु का ताल्लुक और खाना नं० 8 में मन्दे बुध और खाना नं० 12 में शुभ केतु के ताल्लुक का असर हो जाएगा आदि आदि। नेक ग्रह का मन्दा असर हर ग्रह अपने खानादार हालत में दिया हुआ असर दिया करता है लेकिन अगर कुछ जाति कोशिश से कोई नया वाकया खड़ा करें जो कि कुल ग्रह की मुश्तरका चीज या असर के खिलाफ होवे तो असर में तब्दीली हो जाएगी। मसलन राहु नं० 4 में पाप न करने की वजह उपाय होता है अगर उस वक्त वर्षफल या जिस हाल वर्ष-फल आदि के हिसाब से राहु नं० 4 में आया हुआ होवे और शक्ल मुश्तरका राहु की चीजें छत्री कर के मिसाल कर नर्मी बढ़ाना, कोयले की बोरियाँ पर बोरियाँ जमा रखना, लाऔलादों या काने आदमियों को हिस्सादार बनाना, या टट्टी या पाखाना की नई जगह बनवाना या मकानों

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

की सिर्फ छत ही उतरवा कर नई बदलना (बदलना) या टट्टी (परनाला) की ही छत बदलवाना आदि करें तो राहु शरारत, झगड़े, फसाद पैदा कर देगा। इसी तरह ही बृ० नं० 1 वाले जन्म कुण्डली वाले वर्ष-फल में, वाला अगर बृ० की मुताल्लका चीजें पीपल के पेड़ को कटवाना या गुरु-जनों को सताना, वर्षाय करना आदि करें तो बृह० का सोना मिट्टी हो जाएगा। (2) अगर केतु खा० 12 में हो और कोई शख्स न ही कुत्ते की सेवा करे और न ही खुद अपने घर में रखे बल्कि कुत्ते को मारना शुरू कर देवे तो केतु का फल मन्दा होगा आदि-आदि।

_दृष्टि:-_ दृष्टि के खानों में टकराव के ग्रहों का भी (काफी) हू-बहू यही असर होगा।

_बालिग-नाबालिग ग्रह:-_ बच्चा की रेखा का 12 साल उम्र तक कोई ऐतबार नहीं, 12 साल के अंदर में भी कोई तब्दीली नहीं आ सकती। नाबालिग बच्चे की रेखा को कोई ऐतबार नहीं होता मुमकिन है कि ऐसी उम्र तक वो पक्के असर की रेखा हो या तब्दीली हो जाने वाली हो। इल्म ज्योतिष से बच्चा की जन्म कुण्डली या कुण्डली के खाना नं० 1,7,4,10 खाली हों या इन खानों में सिर्फ पापी ग्रह या बुध अकेला (पापी ग्रह या बुध दोनों में से सिर्फ एक) हो तो बुध की किस्मत का हाल 12 साल उम्र तक मन्दा होगा। ऐसी हालत में बच्चा (नाबालिग) की किस्मत (X) का मालिक ग्रह मुकर्रर नहीं (असल) होगा।

उम्र के हिसाब से असर का खाना नं० देखते जाएं अगर कोई खाना नं० खाली ही हुआ जाए तो इस खाली खाना नं० की राशि के मालिक ग्रह (घर का मालिक) जिस खाने में हो वो खाना लेवे। मालिक ग्रहों का बाकी असर अहम होगा।

उम्र का साल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
जिस खाने के ग्रहों का असर लेवें (ग्रह)	7	4	9	10	11	3	2	5	6	12	1	8
12 खाना चोके का ग्रह	सूर्य	चन्द्र	केतु	मंगल	बुध	शनि	राहु	मंगल [illegible]	पितृ बृह० ग्रह	बृह०	शुक्र	शनि राहु

इस बात का वहम न करें कि एक ही खाना नं० के ग्रह कई बार क्यों होते (XX) नाबालिग हालत में 12 साल चोके का मुश्तरका असर जरूरी रहे। (जिसका मुख्तसर जिक्र अरमान नं० 113 के हिसाब से) (लग्न का मालिक ग्रह होगा और ग्रह कारक 12 साला चोखे के मुताबिक का ग्रह (साल नं० और खाना नं० के ग्रह राशिफल के होंगे))

_जन्म दिन का ग्रह:-_ (जो हुआ है) जन्म दिन और वक्त जन्म का एक ही ग्रह हो जाए (मसलन मंगलवार का दिन और बुधवार की पक्की दोपहर के वक्त की पैदाइश) तो ऐसा ग्रह कुण्डली वाले का कभी बुरा न करेगा। और न ही कभी धोखा देगा। बल्कि मौत भी इसी दिन और इसी दिन के इसी वक्त न होगी लेकिन वक्त के हिसाब से मौत का वो दिन आवे क्योंकि कुण्डली में भी वो ग्रह (वही मिसाल तौबा कर के बद करेगा) कायम होवे। कायम की तारीफ कुण्डली अलग किसी ऐसे हालतों में सिवाय जन्म दिन को किसी ग्रह का हो और जन्म वक्त किसी और ही ग्रह का हो तो ऐसी हालत में जन्म दिन और जन्म समय के ग्रहों की इन हालतों ग्रह फल, राशि फल, बराबर का ग्रह या, राशि दोस्ती-दुश्मनी नतीजे का असर होगा। (1) जन्म वक्त को गिनते हैं-- किस्मत का ग्रह और ग्रह फल का। (2) जन्म दिन को गिनते हैं किस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह का फल या समझा-- पैदाइश की रोजगार बदलत वर्ष में , अब राहु जन्म वक्त का ग्रह होगा, चन्द्र (जन्म दिन) का के पक्के घर खा० 4 में खाली (कुण्डली) वाले के लिए अब कभी और जो भी खाना खा० 4 का असर

(X) अब किस्मत की ताल्लुक अरमान नं० 12 न हुआ हो

XX ऐसी हालत में खास वक्त पैदाइश के हिसाब का ग्रह लग्न का मालिक ग्रह होगा (अरमान नं० वही 26 होवे) लेकिन अगर जन्म वक्त व जन्म दिन दोनों ही मालूम न हो तो किसी सवाल वाले से लिखा हुआ वक्त [illegible]

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

होगा, राशि फल का होगा। सिर का चन्द्र के असर से नेक असर होगा। या राहु हुआ मकान के खाना नं० 4 की चीजों पर बुरा असर करने के वक्त राशिफल का होगा। चाहे वो ग्रह [illegible] वक्त का राशि फल का ही क्यों न हो लेकिन अगर जन्म वक्त का ग्रह [illegible] के हिसाब से जो भी होवे ऊपर की मिसाल के मुताबिक हर ग्रह के खास खास घर राशि फल वालों में आ जाए तो दिया हुआ उपाय मददगार होगा। जिसके लिए पक्का होने वाला या उपाय के काबिल जन्म दिन का ग्रह होंगे। जन्म वक्त का नहीं। मसलन किसी की मंगलवार सुबह के बाद दिन का पहला हिस्सा [वक्त बृह०] पैदाइश है अब जन्म वक्त बृह० का ग्रह मंगल के पक्के घर खाना नं० 3 में होगा। क्योंकि बृह० का ग्रह खाना नं० 3 का होता हुआ बीमारी ही बीमारी जाहिर करता जाए तो मंगल का ग्रह राशि फल का होगा। जो जन्मदिन का ग्रह मिला था अब हुआ तो मालूम हुआ कि मंगल सिर्फ खाना नं० 4 और 6 में राशि फल का हिसाब है, मगर ऊपर की मिसाल में मंगल ही उपाय के काबिल है। बृह० का उपाय जो कर नहीं सकते यानि जायज नहीं ऐसी हालत में मंगल का ग्रह उपाय करना मददगार होगा।

हफ्ता में ग्रह:-

हफ्ता के दिनों की तरह रविवार [सूर्य], सोमवार [चन्द्र], मंगल, बुध, बृह०, शुक्र और शनि सात ही हैं। शाम के वक्त को आठवां राहु और सुबह के तड़के को नौवां केतु होगा। अंग्रेजी हिसाब में रात के बारह बजे के बाद दूसरा दिन शुरू होता है। मगर हस्त सामुद्रिक में सूर्य निकलने के वक्त दिन शुरू होता है यानि रात को गुजरे हुए दिन का हिस्सा लेकर नए सूर्य से दूसरा दिन शुरू गिनेंगे।

सप्ताह में ग्रह का दिन	एक दिन में ग्रह का वक्त
बृह० -- वीरवार	सूर्य निकलने के दिन का पहला हिस्सा
सूर्य -- रविवार	दिन के पहले हिस्से के बाद मगर पक्की दोपहर से पूर्व
चन्द्र - सोमवार	चांदनी रात
शुक्र - शुक्रवार	कृष्णपक्ष और शुक्ल पक्ष की बीच या अमावस की रात्रि
मंगल दोनों-मंगलवार	पूरी दोपहर का हिस्सा
बुध - बुधवार	दोपहर के बाद मगर पूरी शाम से पहले
शनि - शनिवार	काली रात या घनघोर काले बादल का दिन
राहु - वीरवार की पहली शाम	पूरी शाम मगर रात से पहले
केतु - रविवार की सुबह या दिन	सुबह या दिन मगर सूर्य निकलने से पहले [तड़का]

एक दिन में हर ग्रह का पक्के तौर पर मुकर्रर वक्त की मुद्दत के लिए की मुद्दत का वक्त 40 मिनट होगा।

(x) **[हथेली पर ग्रह] रेखाओं की बैरोनी हदूद का असर:-**

[1] अंगूठे और तर्जनी की जड़ का बीच का फासला [जिस में मंगल नेक और बृह० हैं] होसला और अकलमंदी किसी ताकत की मजबूती से मुतल्लका है। [2] तर्जनी और मध्यमा की जड़ों का बीच का फासला [बृह० और शनि का बीच] नेक ख्याल, होशियार की ताकत से मुतल्लका है। [3] मध्यमा और अनामिका की जड़ों के बीच का फासला ख्यालात की आजादी जाहिर करता है। जोश के मुताबिक लट्टू की तरह फौरन चक्कर खाने वाला होगा। [4] अनामिका

(x) नजूमियों के [illegible] का रवि दिन [illegible] [illegible] का रवि रात और मस्नूई (बुध तथा पापी ग्रह) का रात दिन रात दोनों के मिलने का वक्त या सुबह शाम होगा

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

और कनिष्का की जड़ों का दरम्यानी फासला खुद काम करने की ताकत व आमद ज्यादा – दूसरों की कमाई की तरफ उम्मीद × रखने की बजाए खुद अपनी कमाई में बरकत कर शुक्र व सब्र करने वाला हो। (5) कनिष्का की जड़ और गुरु का हिस्सा हथेली के बाहर को निकला हुआ सिर्फ गुरु के बुर्ज की हद बढ़ाने की ताकत से लोगों में रसूख पैदा करने की ताकत ××× ज्यादा। (6) गुरु की जड़ से चन्द्र की जड़ का हिस्सा जो बाजू की चौड़ाई या कलाई की चौड़ाई होगी, जिस्मानी मुहब्बत और तमाम कुल या औरत की तरह कौल-इकरारी (इश्क, मुहब्बत) मां-बाप की मुहब्बत पितरों या बुजुर्गों की सेवा की ताकत से मुतल्लका होगी।

हथेली की चारों तरफें:-

"क" गुरु से चन्द्र की तरफ की लम्बाई वाला हिस्सा जिस कद्र ज्यादा लम्बाई उसी कद्र जबान की ताकत ज्यादा और जिस कद्र कनिष्का की जड़ से बाहर को उभरी हुई या निकली हुई उसी कद्र रसूख पैदा करने की ताकत और रसूख पैदा किया हुआ ज्यादा हो।

"ख" बुध० से गुरु की तरफ अंगुलियों की जड़ वाला हिस्सा जिस कद्र लम्बा ज्यादा उसी कद्र बड़ी ही और दिमागी ताकत ज्यादा होगी और उसी कद्र गुरु के बुर्ज की पायदारी होगी।

"ग" गुरु से चन्द्र वाला हिस्सा जिस कद्र लम्बाई उसी कद्र ख्वाहिशात नफसानी या शुक्र की ताकत ज्यादा या शुक्र का असर ज्यादा होगा।

"घ" गुरु की जड़ से बुध० के आखिरी तर्जनी की जड़ तक का हिस्सा जिस कद्र यह लम्बाई ज्यादा उसी कद्र वाली हिस्सा दौलत में ज्यादा या अंगूठे की ताकत ज्यादा या मंगल नेक का नेक असर ज्यादा होगा।

नम्बर एक :- हथेली भारी या मोटी, ताकती होगा आदमी मर्द की जिन्दगी वाला क्योंकि इस हालत में तर्जनी हाथ, [illegible] दुनियावी ख्यालात, [illegible] मजदूरी पसन्द, कनिष्का नेकी जाहिर करती है।

नम्बर दो:- हथेली लागर या पतली और कमजोर की गरीबाना हालत व गरीबाना रोजगार वाला होगा।

नम्बर तीन:- हथेली लम्बी जबान में आजिज़दारी या जाहिर करने की ताकत ज्यादा हो जिस कद्र लम्बाई ज्यादा उसी कद्र यह ताकत ज्यादा।

नम्बर चार:- लम्बी व मोटी हथेली वाला खुशहाल खुश गुजरान आसूदा हाल होवे। किस्मत का असर सब की किस्मत लकीरें के नाम से मशहूर है जो बुध० का दूसरा नाम है। बारह साल तक बच्चा की रेखा और 70 साल के बाद गुरु अपनी किस्मत का इख्तियार नहीं। किस्मत एक ऐसी चीज है जो दुनियावी कारोबार में न हाथ की मदद दे और

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

न ही उस में आंख को काम करना पड़े। हर काम का नतीजा खुद बखुद ठीक हो जाए "पक्के मकान (बृह० न० 2) नेकी मकान राम बनाए" उम्र रेखा और किस्मत रेखा एक ऐसे मुकाम पर मिलती है जो शनि का मुख्यालय गिना गया है। इस मुकाम पर उम्र रेखा तो बन्द हुई मगर किस्मत रेखा चलती रही यह चढ़ी बलन्द शनि की बलन्दी या ऊर्ध्व रेखा कहलाती है। अब किस्मत रेखा को इस से होकर गुजरना है। मुख्यालय का मालिक शनि इस फिक्र में रहता है कि इस नदी नहर में ही सब दरिया आ मिलें और वो किसी दरिया के पानी को आगे न जाने दे और अगर किस्मत की हवा इस भँवर में न पड़े तो इस में शक नहीं कि वो शनि से तो बच निकलेगी मगर मुकामे मकान (बृह० न० 9) की किस्मत अपने गुरु के लिए साथ क्या तोहफा (अपने लिए खुराक तोशा, शनि बृह० न० 9 और दूसरों को देने को देने के लिए उम्दा चीज तोहफा शनि बृह० न० 2 होती है) ले जाएगी। जब अकेली ही चलेगी तो अपना तोशा इकट्ठा करने के लिए अकेली को ही तमाम दरियाओं से पानी चुराने के लिए बहुत कोशिश करनी पड़ेगी पेशानी व चेहरा का किस्मत का सही दुरुस्त नताय इस बात से मुतल्लका है। मर्द के लिए पेशानी व चेहरा जिन जिन हालतों में अच्छे गिने हैं वही हालतें औरत के हाथ के लिए उलट मायनों की होंगी। (1) खाना न० 2 व खाना न० 6 का फैसला खाना न० 8 को साथ लेकर होगा मगर किस्मत का आगाज़ खाना न० 9 होगा। (2) कुण्डली के बारह के घरों के ग्रहों के जागने के दिन से किस्मत का जागना शुरू होगी। (3) बन्द मुट्ठी के अन्दर के खानों के ग्रह जागे जगे हों चाहे सोए कुण्डली वाले की तबीयत और किस्मत के बुनियादी पत्थर होंगे। जबरदस्त किस्मत रेखा वो है जो कलाई से चल कर बृह० पर जाकर खत्म हो और शाखदार होवे। रास्ते में किसी पहाड़ या बुर्ज की मिट्टी का असर इस में न पड़े इस तमाम की तमाम से सोना ही सोना (बृह० की धातु) नजर आता हो और हर तरफ लोक और परलोक के मालिक राजा इन्द्र या बृह० की हवा मौजूद हो हाथ व हथेली के मैदान की जिस कदर ज्यादा गहराई होगी दरिया की रवानी तेज होगी। किस्मत रेखा या बृह० की लहर क्या है सिर्फ रूहानी व नूरानी हवा का एक नक्शा है जिस में असली रंग रमा हुआ है किस्मत रेखा जब कलाई से शुरू हो और दिल रेखा को उबार करके ऊपर जा निकले तो जिस बुर्ज की तरफ मुड़े उसी बुर्ज का असर पाया जाएगा। हस्त रेखा व ज्योतिष की बुनियादी चीजों के मुकर्रर मैदानों से हर शख्स की किस्मत का मैदान मुकर्रर करके एक अक्स से असल चीज की हालत या नकल से असल और असल से नकल करके असल मुकर्रर या बात का पूरा पता चल जाता है।

अरमान 122 से मुत्तलका

<u>किस्मत</u> :- हर एक किस्मत के ग्रह की ^ किस्मत रेखा कहते हैं जिस के जागने का वक्त किस्मत के असर का वक्त होगा। किस्मत के ग्रह कई एक हों तो वो सब बाहम पूरे मददगार होंगे। सब से अच्छी किस्मत बृह० का किस्मत का ग्रह होता है।

<u>किस्मत का ग्रह</u>:- ग्रह के उत्तम दर्जा पर जो ग्रह होगा जो ~~स्व~~
लाल किताब सफा 114 फरमान न० 113
राशि का उच्च फल देने का ^ मुकर्रर हो जो हर तरह से कायम साफ और दुरुस्त हो और इस में किसी तरह से भी "साथी ग्रह" होवे, बाजुकाबिल के ग्रह या दुश्मन ग्रह का बुरा असर न मिला हुआ हो, उसके बाद पहले घर का ग्रह; घर का मालिक

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ग्रह, दोस्त ग्रहों का बना हुआ दोस्त ग्रह किस्मत का मालिक ग्रह होगा।

<u>किस्मत के ग्रह की तलाश की तरतीब</u>:-

सब से पहले 12 राशियों को ऊँच फल देने वाले ग्रहों को तलाश करें, फिर 9 ग्रहों से जो उम्दा हो लेवें और बाद में बन्द मुट्ठी के खानों के ग्रहों से जो उम्दा हो लेवें। ऊँच फल देने वालों में से जो सब से तसल्ली बख्श और ऊँच हो लेवें। घर के मालिक ग्रहों से सब से ज्यादा ताकत वाले को लेवें। अगर मुट्ठी के चारों खाने खाली (लफ्ज़ खाली से मुराद है कि वहाँ भी पूरी तरह का किस्मत का ग्रह न होवे) हों तो खाना नं० 9 के ग्रहों को लेंगे वो भी खाली तो फिर खाना नं० 3 के ग्रहों को लेवें अगर वो भी खाली तो फिर खाना नं० 11 के ग्रह लेंगे। अगर वो भी खाली तो खाना नं० 5 का लेंगे। वो भी खाली हो तो दूसरा दरवाजा या खाना नं० 2 को लेंगे। अगर वो भी खाली तो खाना नं० 6 देखेंगे। वो भी खाली तो नं० 12 तलाश करेंगे और अगर वो भी खाली हो तो नं० 8 में बैठ कर देखेंगे कि आया किस्मत का ग्रह जिस में ऊपर की तमाम शर्तें न हों मर तो नहीं गया। यह तलाश जन्म लग्न की कुण्डली और चन्द्र कुण्डली दोनों से होगी। हस्त रेखा में दांया और बांया हाथ दोनों और हस्त रेखा के तमाम हिस्से शामिल होंगे।

<u>किस्मत की हदबन्दी हाथों में -- किस्मत रेखा कलाई से ऊपर को चलती है</u>:-

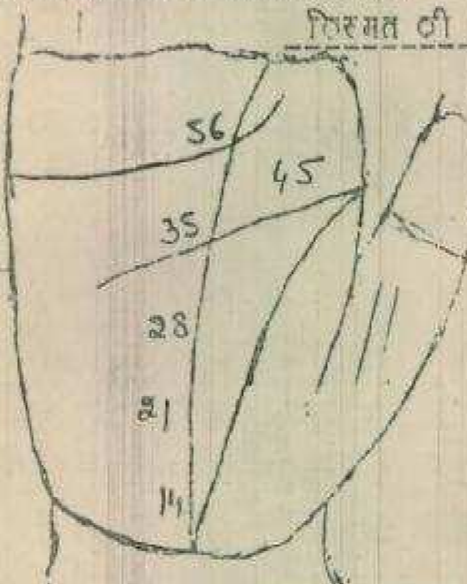

इसी तरह ही इस इल्म में किस्मत को जगाने वाले बुर्ज या ग्रह इसी चक्र में माने गए हैं और नीचे लिखी तरतीब से अपना अपना असर इन्सानी किस्मत में दिखलाते हैं।

(1) बृह० -- हवा रूह व सांस पिता, गुरु मुख।
(2) सूर्य - आग, गुस्सा, जिस्म, अक्ल, तमाम अंग, इल्म।
(3) चन्द्र - पानी, शान्ति, दिल, माता, जायदाद, जर जद्दी।
(4) शुक्र- मिट्टी, कामदेव, आजजी स्त्री, गृहस्थ।
(5) मंगल -- खाना - पीना, लड़ाई, हौसला, भाई।
(6) बुध -- बोलना, दिमाग, हुनर, अनाज, तहजीब, पैसा, दोस्ती।
(7) शनि -- देखना, चालाकी, मौत, बीमारी, लोटना।
(8) राहू -- सोचना, ख्यालात या दिल की शक्ल, ससुराल।
(9) केतु ---- सुनना, पांव की शक्ल व हरकत, राहू-केतु दोनों नेकी व बदी का हिसाब।

<u>किस्मत के ग्रह को जगाने वाला ग्रह</u>:-

जब पहले घरों में कोई ग्रह न हो तो बाद के घरों के ग्रह हमेशा सोए हुए माने जाते हैं ऐसी हालत में किस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह की तलाश की जरूरत होगी और अगर बाद के घर खाली हों तो खाना नं० को जगाने वाले ग्रह के उपाय की जरूरत होगी।

बाद में ~~मुट्ठी के खानों 10,4,7,1 के ग्रहों~~

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

जो कि खाली है। ग्रह का जागना और खाना नम्बर का जागना दो अलग-अलग बातें हैं।

(2) बगैर जगाए सोया हुआ ग्रह अगर खुद बखुद जाग उठे यानि अपना फल देना शुरू कर दे तो देना जारी हुए ग्रह की आम उम्र (गुरु 3, मंगल-6 आदि) के आखिरी साल यानि गुरु -2 शादी के ताल्लुक में शादी के तीसरे साल हर एक ग्रह का मन्दा फल जरूर होगा। चाहे वो ग्रह सोये हुए ग्रह के दोस्त हों या दुश्मन हर अपने बैठा होने वाले घर का फल (अच्छा या बुरा) न देगा, जब तक कि उस घर की की मुतल्लका तरफ या जगह में उस ग्रह की मुतल्लका चीजें न हों। अगर किसी पितृ ऋण (स्थानवाली भाव लिखा जहां लिखा है) ^, महादशा या दूसरे सबब से किस्मत का ग्रह सो जाए, मन्दा, बर्बाद या मन्दी हो जाए तो सब से पहले ऊपर किस्मत के ग्रह की तलाश की इस तरतीब से खाली खानों के घर के वाकिफ ग्रह को जगायें यानि उस का उपाय करें। शर्तें कि वो किस्मत के ग्रह के बराबर का ग्रह होवे या दोस्त होए, इसके बाद महादशा के वक्त में काम देने वाले ग्रह लेवें। वारदातें दुश्मन ग्रहों की दुश्मनी हटा दें। या राशि फल की हालत का फायदा उठायें। अगर यह भी काम न दे सके तो सूर्य को कायम करें, अगर यह भी मदद न देवे तो पापी ग्रहों और सब के आखिर पर बुध का उपाय करें।

<u>सोया हुआ घर:-</u> जिस घर में कोई ग्रह न हो या जिस पर किसी ग्रह की दृष्टि न पड़ती हो वो घर सोया हुआ होगा।

<u>सोया हुआ ग्रह:-</u> जिस ग्रह की दृष्टि में मुकाबला पर कोई ग्रह न हो तो वोह ग्रह सोया हुआ होगा। पहले घरों में।

<u>खाना नम्बर को जगाने वाले ग्रह:-</u>

खाना नं० को जगाने वाला ग्रह	मंगल	चन्द्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	राहु	शुक्र	चन्द्र	बृह०	शनि	बृ०	केतु
खाना नम्बर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

<u>किस्मत (x) का फैसला :-</u> उम्र के लिहाज से चौखे के ग्रह व वर्ष फल और राशि नम्बर के बोलने वाले ग्रहों का मुश्तर्का नतीजा किस्मत का फैसला करेगा।[xx] यह बुध के झगड़े के शामिल इन्सानी जन्म के लिये और उसकी हर एक ताकत हस्त रेखा के तमाम खबर कुण्डली की 12 राशियों और 9 ग्रहों की बाल व बाहम लगाव, व झुकाव का पैदा करदा अजर किस्मत का करिश्मा या बुराई हुआ करता है। जबकि तासीर से जन्म मरण या शुरू व आखिर के मैदान की फतह व शिकस्त का नतीजा, खुशी-गमी की शुरू व फल हुआ करती है।

<u>साकी ग्रह:-</u>

हर असल शय के शामिल के कुदरत के साथ उसके कामों का इन्तजाम उसके अपने कब्जा में ऐसे ढंग से करती लेना है जो कभी गुम न होने पाए इस इन्तजाम में कोई तब्दीली या धोखाबाजी नहीं की जा सकती सिर्फ वक्ती हरकत×ले×× वाम की कुदरत हालत में बदला जा सकता है। इस इल्म सामा के पढ़ने के लिए ही यह इल्म दुनियादारों ने जारी किया है जो जाहिरा तौ वहम का कुछ

(x) किस्मत का असर अलग न 124 देखें

×× मिसाल उम्र रियायती चालीस दिन चूंकि जिनकी के हर्फ़ हिसाब को इस इल्म में उड़ाने के लिए 28 नक्षत्र और 12 राशियों को बाद में छोड़ ही दिया जाता है इसलिए दोनों की जमा (28+12) कुल चालीस दिन रियायती तक का से [illegible]

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

झगड़ा मालूम होता है मगर दरअसल कुछ मायनी और समुन्द्र की जाहिरी रंगत की तरह अपनी तह में कीमती जवाहरात रखता है जिन की असल कीमत एक जानने वाले से छुपी हुई नहीं, हथेली के ग्रह (सात जाहिरा और दो छुपी लहरें) और अंगुलियों की 12 गांठें 9 निधि और 12 सिद्धि का याद करायगी या यूं कहो कि 9 पहाड़ों बुर्जों या ग्रहों का असर कुदरत के नौ भरे हुए खजाने या भंडार हैं जिन के [illegible] के लिए हाथ की चारों अंगुलियां या दुनिया की चारों दिशा लगी हुई हैं। मतलब यह कि [illegible] राशियों के फल या असर में इन्सानी ताकतों से अदली-बदली करने की गुंजाइश है। मगर बुर्जों या ग्रहों का फल हमेशा के लिए मुकर्रर हो चुका है जिस में इन्सानी अक्ल से कोई तब्दीली नहीं कर सकते। हर एक अंगुली की तीन गांठों से तीन लोक या तीनों जमाने (दिमागी हाल, मुस्तकबिल या अतीत, आकाश, पाताल) के कोरोंपार मुराद होगी। अंगुलियों की नाखुन वाली पहली पोरियों पर चक्र, शंख, सदफ, जाहिरा जिन्दगी का जमाना, दिन के काम काज, बताते हैं और हाथ की हद से आखिरी जगह गैबी हालात, दिल की अन्दरूनी चाल या रात का जमाना (चन्द्र का बुर्ज) बताती है। हथेली से इन्सान के अपने काम आने वाली चीजों से मुराद लेते हैं और हाथ की पीठ को दूसरे के काम आने के लिए माना गया है। हाथ व पांव की अंगुली के नाखुन के सिरे से कलाई व टखना तक और नौ ग्रह व बारह राशि की कुण्डली से 12 तरफों के दरम्यानी मैदान में तमाम (तमाम) जमादात, इन इन्सानात, कौमें, किस्म-किस्म के लोग, हैवानात, मकान आग व बाद, व जाए-रिहाईश, उधार, शुभ माल-मवेशी, चरिन्द, परिन्द, दरिन्द, दौलत-जुगत, जहर-अमृत, दुनियावी बीमार कारिंदों और उनकी दवाफा वगैरह से जो ताल्लुक के जरूरी हिस्से में, वक्त से पहले ही लिखे हुए नौ निधि, बारह सिद्धि के खजाने की कमी बेशी के मुताल्लिक कुदरती और अमोट लेख या हुक्मनामा को साफ पढ़ा ही जा सकता है। मगर इनमें अपनी मर्जी के मुताबिक अदली-बदली नहीं की जा सकती। बेशक सिर्फ अपनी बात को दुरुस्त करके ग्रह का फायदा उठा लेने की गुंजाइश है जो ग्रह फल और राशि फल की मिलावट के वक्त हुआ करती है। यही एक बात इस इल्म का खास मतलब है।

<u>ग्रह फल व राशि फल</u>:-

(1) जब कोई ग्रह अपनी मुकर्रर राशि (यानि वो राशि जिसके कि वो घर का मालिक ग्रह गिना जाता है) या उच्च-नीच फल की ठहराई हुई राशि या अपने पक्के घर की बजाए किसी गैर राशि में जा बैठे या किसी दूसरे ग्रह का "साथी ग्रह" (यह अदली-बदली कर लेने वाला आदि) बन जाए तो वो ग्रह ऐसी हालत में राशि फल या कच्ची हालत का ग्रह होगा। जिस के बुरे असर से बचने के लिए इसके [illegible] का [illegible] फायदा उठाया जा सकता है। इसके बर खिलाफ यानि ऊपर कही हुई हालत के उलट हालत पर वो ग्रह "ग्रह फल" या पक्की हालत का ग्रह होगा। जिसके बुरे असर को तब्दील करने की कोशिश करना बेफायदा बल्कि इन्सानी ताकत से बाहिर होगा। सिर्फ खास-खास दुआ-रासिया और नेक हस्तियों की सेवा में मेखा (handwritten: [illegible]) लगी सकती है वो भी आखिर तब्दील होगा। यानि जायदाद (handwritten: जानदार) या दुनियावी चीज या ताकत को इसकी हस्ती से मिटा कर इसकी एवज में दूसरी जानदार दुनियावी चीज या ताकत पैदा कर देगी मगर नया ही दूसरा जिन्दगा

असर बुरा होगा जिसकी निशानी वक्त से पहले ही नेक ग्रहों का असर हो जाने के वक्त दोस्त ग्रह की चीजों की कुदरती निशानियां और कुल ग्रह की मियाद चालीस दिन तक रहने वाली हालत [illegible] ग्रहों की निशानियां हुआ करती है। दौराने उपाय चालीस दिन की निस्फ (1/2) या चौथाई मियाद में भी निस्फ या चौथाई असर होने लग जाया करता है।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

फिर भी पैदा न होगा। सिवाए इस वक्त के जबकि ऐसी हस्तियां खुद अपनी ताकत या अपना ही आप तबाह कर लेते हैं और किसी दूसरे एवज़ तक नौबत नहीं आने देते। यह हालत भी उनकी खुदाई शरीक होने की होगी। कोई न कोई नताइजा लिया ही गया। ग्रह फल फिर भी न टला।

(2) ग्रह फल को अगर राजा समझा तो राशि फल इसका साथी वज़ीर होगा।

कौन ग्रह फल का राजा हुक्मरान होगा	कौन इसका साथी वज़ीर राशि फल का हो
1) पालिश शुदा ग्रह	नापालिश ग्रह
2) नौ ग्रह	बारह राशियां
3) किस्मत का ग्रह	किस्मत को जगाने वाला ग्रह
4) एक दो तीन की तरतीब के पहले घरों के ग्रह जबकि वो अपनी अपनी मुकर्रिरा मुकर्रिर जगह के लिये हुए हों (मुताबिक वर्ष फल)	बाद के घरों के ग्रह जबकि वो वर्ष-फल के हिसाब से अपनी अपनी मुकर्रिरा जगहों से चल कर किसी दूसरी जगह हों।

~~ज्योतिष में~~ आम तौर पर वर्ष फल के हिसाब से तख्त पर आ कर आने वाला राजा कहलाता है और राशि नम्बर के हिसाब से बोलने वाला (खाना नं० 7 में आने वाला) वज़ीर कहलाता है लेकिन अगर ऐसे राजा और वज़ीर में कुण्डली के पहले घरों और बाद के घरों में होने का सवाल भी साथ झगड़ा करें तो पहले घरों वाला बेशक आम असूल पर वज़ीर कहलाता हो मगर अब वो राजा हो जाएगा और बाद के घर वाला इसका वज़ीर बनेगा। बेशक वो राजा बनने का हकदार है।

5) खाना नं० एक के ग्रह (या मकान के खुद मालिक)	खाना नं० 9 के ग्रह या मकान जद्दी
6) ग्रह का इसके अपने कायम होने की हालत का असर	ग्रहों की बाहम दृष्टि का असर।
7) तख्त का मालिक ग्रह अपने तख्त के दौरा तक	राशि नम्बर के हिसाब से उम्र पर बोलने वाले ग्रह (अपनी राशि नं० में बोलने के सिवाए तक बाकि 3 साल)
8) महादशा में बोला का 12 साला चक्र	तमाम उम्र पर बोले का 12 साला चक्र
9) महादशा में हो जाने वाला ग्रह	महादशा वाले ग्रह को दोस्त/बराबर के ग्रह।
10) जन्म वक्त का ग्रह (*)	जन्म दिन का ग्रह

हस्त रेखाओं में

ग्रह फल का होगा	राशि फल का होगा
11) 12 साला उम्र के रेखा	12 साल उम्र तक रेखा
12) वो ग्रह जिस का कि वो इन्तखाब हो	वो ग्रह जिसका कि इस का मालिक हो
13) मर्द का दायां हाथ मर्द के खुद अपने के लिए	मर्द का बायां हाथ मर्द के खुद अपने लिए
14) औरत का बायां हाथ अपने लिए	औरत का दायां हाथ औरत के अपने लिए

(*) पक्की दोपहर [illegible] राजा पूरी [illegible] | इसके बाद [illegible] बीरबाद वज़ीर

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

15। मर्द का बांया हाथ उसकी औरत के लिए ग्रह फल का नेक असर देने वाला होगा।	मर्द का दांया हाथ उसकी औरत के लिए
16। औ	नम्बर 16 खाली है।
17। औरत का बायाँ हाथ उसके पति के लिए ग्रह फल का नेक असर देने वाला	औरत का दायाँ हाथ उसके पति के लिए

18। बच्चा दोनों के लिए राशि फल के देने वाला हुआ करता है।

19। दांए हाथ पर के लिए नर ग्रह प्रबल, बांए हाथ पर के लिए हुए स्त्री ग्रह प्रबल और दूसरा ग्रह दोनों में से किसी भी हाथ पर के लिए हुए हर तरफ अपने अपने घरों का जिस में कि वो पाए जायें असर करने वाले होंगे। औरत का यही हाल उल्ट हाथों से होगा।।2। ग्रहों का निशान हथेली पर और अंगुलियों की पोरियों पर राशि का निशान पक्के असर का होता है लेकिन बरखिलाफ।

20। अंगुली की पोरियों पर जिस ग्रह का निशान हो उस ग्रह की वो राशि।ख्वाह एक मुकर्रर करदा। राशि हो, ख्वाह उसके लिए दो मुकर्रर हों। लिहाजा कि वो घर का मालिक ग्रह कहलाता है और उस राशि न० के तमाम ग्रह जिस राशि न० की पोरी पर। कि वो ग्रह का निशान पाया जाए। ग्रह फल का होगा।	हथेली पर जिस राशि का निशान हो उस राशि का मालिक ग्रह और हथेली के उस राशि न० में जिस न० पर कि वो निशान पाया जाए होने वाले तमाम ग्रह राशि फल के होंगे। ।2। अंगुली की पोरी पर अगर किसी नम्बर पर उस नम्बर की राशि के अलावा किसी गैर राशि का निशान पाया जाय तो वो राशि न० जिस का वो निशान है और वो राशि नम्बर जिस में कि वो निशान हो तमाम ही ग्रहों के लिए राशि फल का होगा चाहे वो दोस्त हो या दुश्मन।

<u>हथेली पर खास निशान:-</u>

मर्द के सिर्फ दांए हाथ की हथेली पर नेक असर देंगे औरत दांए हिस्सा पर शुभ असर होगा।

1। कुम्भ या घड़ा पानी से भरा हुआ, दूध, कन्या, फूल, ब्याह, शादी, आदि अगर दांई तरफ से मिलें तो शुभ असर होगा।

2। लकड़ी, औजार या हथियार आग से उल्ट कींच आदि हो तो बद असर की निशानी हो।

3। कुत्ता या बिल्ली बुलन्द आवाज़ से रोए और जानवर मण्डराने लगें तो मौत की निशानी होगी।

4। नेक जानवर काला कुत्ता, गाए, हिरण आदि मिलें तो नेक फल की निशानी है।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ग्रह फल का होगा	राशि फल का होगा
मच्छ रेखा, काग रेखा धन रेखा या श्रेष्ठ रेखा आदि मुकर्रर रेखाओं से कोई भी या हथेली पर के सब खास निशान अपनी अपनी मुकर्रर जगह और दाएं हाथ पर वाकया हो तो ग्रह के और अगर अपनी जगह पर ही बजाए किसी और जगह मुकर्रर, दाएं हाथ पर ही होतो महादशा जिस में केतु का ताल्लुक होगा असर देंगे।	मच्छ रेखा आदि सब खास निशान मुकर्रर जगह; मगर बाएं हाथ पर तो राशि फल के होंगे और अगर बाएं ही हाथ पर मगर अपनी मुकर्रर जगह की बजाए किसी और जगह पर पाए जाए तो महादशा (जिस में राहु का ताल्लुक हो) असर देंगे।

22) अपनी मुकर्रर जगह की बजाए जब मच्छ रेखा, काग रेखा आदि किसी और जगह वाकया हों तो जिस ग्रह की राशि पर या उसके घर में बालिहाज बुर्ज व रेखा वो वाकया हों उस ग्रह की पूजना से नेक फल होगा। मसलन – मच्छ रेखा बुध की सिर रेखा पर वाकया हो तो शनि व बुध की चीजों की पालना यानि स्याह परिन्दों व कौए की पालना करना मुनासिब। अगर शुक्र पर हो तो स्याह गाए आदि की पूजना पालना मुनासिब फल पैदा करेगा।

	ग्रह फल	राशि फल
(x) 23)	मर्द की जन्म कुण्डली खुद मर्द के लिए मर्द पर असर ग्रह फल का	मर्द की चन्द्र कुण्डली खुद मर्द के लिए मर्द पर राशि फल का करिश्मा यानि महादशा की हालत में उल्ट नेक और अचानक चमत्कारा। चमत्कार।
24)	मर्द की चन्द्र कुण्डली इसकी औरत पर ग्रह फल का नेक नज़ारा यानि महादशा के असल के खाली साल रखे हुओं में किस्मत का नेक और अचानक असर देगी।	मर्द की जन्म कुण्डली इसकी औरत पर राशि फल (आम साधारण) का असर देगी।
25	औरत की जन्म कुण्डली औरत के लिए औरत पर ग्रह फल का असर देगी।	~~लिए औरत पर~~ औरत की जन्म कुण्डली इस के पति के लिए आम हालत की राशि फल का असर देगी।
26)	औरत की चन्द्र कुण्डली इसके पति के लिए ग्रह फल का नेक नज़ारा (महादशा के खाली सालों में किस्मत की अचानक व नेक चमक होगी।	औरत की चन्द्र कुण्डली औरत के लिए औरत पर राशि फल।

सिर्फ एक ही रेखा को देख कर किया हुआ फैसला कोई मुकम्मल फैसला ~~कोई मुकम्मल~~ नहीं होता। बल्कि वहम पैदा करने का सबब होता है सिर्फ राशि फल या महादशा में ग्रह के नेक नज़ारा (जो चन्द्र कुण्डली आदि का नतीजा हो सकता है) पर इतबार कर ~~लेना~~ लेना वहम और धोखे में रखने वाला असर हुआ करता है।

(x) आमतौर पर जन्म कुण्डली ग्रह फल का असर | ~~मर्द की जन्म कुण्डली खुद मर्द के लिए~~ आमतौर पर चन्द्र कुण्डली राशि फल का असर

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

इन्सान की उम्र और ... का 100 साला चक्र का ...

इन्सान की उम्र खत्म हो या न हो मगर खास वक्त जो मुकर्रर है वो मुकर्रर वक्त पर खत्म गिनी जाएगी। इन्सानी उम्र के लिए शनि के खाने में मुफस्सल लिखा है और खाना 10 की उम्र भी हाथ के आकार के हाशिया में दी हुई है यानि:-

आदमी की उम्र	100	75	90	85	औसतन	80	85	औसत उम्र		90	मुस्तकिल	80 (90)
खाना नम्बर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

फर्ज यह है कि किसी शख्स की 120 साला उम्र ही हो जाए या हो जावे यानी मालूम होती होवे तो उस के लिए हर एक खाना की चीज़ों का ज्यादा से ज्यादा अर्सा सिर्फ इस नक्शा में दिए हुए सालों तक असर माना जा सकता है इस खाना की उम्र खत्म होगी मगर उस शख्स की उम्र अभी बाकी ही हो तो उस वक्त वाले खाने की चीज़ों पर उसकी किस्मत का ताल्लुक न होगा हर खाने की उम्र का शुरू इन्सान के अपने जन्म दिन से शुरू गिनेंगे। सौ साल के बाद फिर वही तरतीब शुरू होगा जो जन्म दिन में था। ... घरों के पहले सौ साला-चक्र में शुरू कर दिया, पहला दिया हुआ [illegible] है।

चोले का 12 साला चक्र:-

महादशा के अलावा हमेशा ... अपना असर किया करता है इस चक्र के 12 सालों में हर साल के वास्ते लिखे हुए ग्रह अगर दुरुस्त और कायम या अपनी बुनियाद पर ... (यानि ... शरीर के बुनियाद की ...) ... की शर्त भी लिखी गई है ... किस्मत ... होना होवे ... के लिए ... ग्रह का ... होना होवे ... का फायदा उठाया जा सकता है।

चोले के ग्रह की तरतीब:-

सूर्य	चन्द्र	केतु	मंगल	बुध	शनि	राहु	खाना 8	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चोले का 12 साला चक्र:-

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	[illegible]	115	116	117	118	119	120

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

एक से लेकर 120 साल तक जो औसत उम्र माना गया है ऊपर दी हुई तरतीब से तमाम खिल्ले लिख देवें कुण्डली वाले के जन्म वर्ष फल के हिसाब से जिस जिस साल सूर्य का दौरा पहली बार शुरू होता होए का सूर्य नं० 1 में आए उस साल के खिल्ले वाले खाने की पेशानी पर लफ्ज सूर्य लिख देवें और दी हुई तरतीब से पेशानी के बाकी खानों में बाकी तमाम ग्रह वगैरह लिखा देवें और साल के सब खाने आगे पीछे, के पूरे कर लेवें ऊपर के ढंग पर चौके का साल देख लेवें, चौके का खाना नं० 10 होता है और चौके का ग्रह ऊपर के ढंग पर जाहिर होगा। यानि खाना नं० 10 वाला ग्रह ही धोखा दिया करता है और ऊपर के ढंग पर उम्र के हिस्सा पर आने वाला भी धोखा देगा। अगर चौके का ग्रह और आगे वो वाला नं० 10 में ही आ जाए तो पूरा धोखा होगा।

<u>चौके के ग्रह का धोखा</u> :-

जिस तरह ग्रहों का पहला 35 साला चक्र जब लौटता आता है तो अपने पहले दौरे के बुरे ग्रहों के असर में तब्दीली कर दिया करता है उसी तरह ही यह 12 साला चौके का चक्र महादशा के मुताबिक में और उम्र भाग के मुताबिक में हर ग्रह की महादशा के सालों के असर का उम्र से टक्कर। जब दूसरी बार एक ही ग्रह का दूसरी बार चौके का साल आवे तो सोए हुए ग्रहों के असर को जगा दिया करता है और तब्दीली हालात किया करता है चाहे भली तरफ हो चाहे बुरी तरफ।

<u>चौके के ग्रह के मायनी</u> :-

शब्द धोखा दरअसल गुमराही का ही नाम है चौके का ग्रह अगर साथ वाला हुआ तो लावेगा धोखा, अगर जावेगा तो भी धोखा फर्क यह कि चौके के चक्र से जाहिर होने वाले ग्रह धोखा है जो गुप्त ताकत का चाहे भला करे चाहे बुरा करे।

<u>आम उम्र में चौके का 12 साला चक्र</u>

मंगल	बुध	शनि	राहु	मंग-शनि	शुक्र	बृह	[illegible]	बृह	सूर्य	चन्द्र	केतु
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120

<u>ग्रह की महादशा</u> :- किसी ग्रह के बुरे और लगातार ही बुरे असर देने की मियाद उसके महादशा में हो जाना कहलाती है। महादशा के लिए ऊपर दिए हुए साल हैं। यानि बृह० 16 साल सूर्य 6 साल, चन्द्र 10 साल आदि कुल के कुल 35 साला

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

व्यक में महादशा का सिर्फ एक ही ग्रह हो सकता है और सारी उम्र में चाहे एक ही ग्रह की लगातार चाहे किसी दो की एक के बाद दूसरे की साल लगती हुई चाहे एक के बाद दूसरी या दूसरे की 8-14 कुछ वर्ष के फर्क के हो, ज्यादा से ज्यादा सिर्फ दोनों की महादशा आ सकती हैं। अगर किसी वजह ग्रह या बुर्जों के पापों के कारण से एक महादशा का ग्रह अपनी मियाद उम्र के 35 साल तक के आखिरी 35वें साल खत्म हो और फलस्वरूप दूसरा महादशा का ग्रह उम्र के दूसरे 35 में साल तक के शुरू साल से ही जारी हो जाए तो पहली महादशा का आखिरी साल और दूसरी का पहला साल या दोनों का बीच का साल (दो बार) गिना जाएगा यानि महादशा का कुल अर्सा दोनों महादशा के मजमूआ से न सिर्फ एक साल कम होगा बल्कि पहली का आखिरी साल और दूसरी का शुरू वाला साल या दरम्यानी साल चाहे वो दोनों महादशाएं लगातार हों चाहे बीच में कुछ वर्ष के फर्क होवें, एक साल होगा या दरम्यानी साल महादशा का दो न होगा। मगर मियाद में सिर्फ गिना जाएगा, या वर्ष फल के हिसाब ~~से कोई ऐसा ग्रह आ जाए~~ वर्षफल और राशि नम्बर के ग्रह बोलने के हिसाब से कोई ऐसा ग्रह आ जाए, जो महादशा वाले ग्रह का दुश्मन हो तो पहली महादशा का आखिरी साल भी साफ होगा मसलन गुरु की महादशा होती है 20 साल, अब ऐसी हालत वाली दोनों ही गुरु की महादशा आ जब जाएं तो दो बार की 20 साल के हिसाब से कुल 40 साल के अर्सा से एक साल कम या 39 साल का कुल अरसा दोनों महादशाओं का होगा और दरम्यानी 20वां साल साफ साल होगा। सब से लम्बी महादशा है भी गुरु की ही, इसलिए माना है कि सारी उम्र में किसी शख्स का बुरे से बुरा जमाना 39 साल ही ज्यादा से ज्यादा हो सकता है, जिसके दरम्यानी साल का महादशा, का साल न होते. ~~वाले ग्रह की~~

~~दो हालतें:-~~ कुण्डली में महादशा वाले ग्रह की दो हालतें

[1] जब किसी ग्रह के बराबर के ग्रह रद्दी हो, मगर वो खुद रद्दी न हो, लेकिन वर्ष फल के हिसाब से वो जिस साल तख्त का मालिक बने और उम्र के सालों के हिसाब से राशि नम्बर के ग्रह बोलने पर वो खुद भी रद्दी हो जावे, तो जिस दिन से वो कुण्डली के राशि नम्बर के ग्रह बोलने के हिसाब पर खुद रद्दी हुआ, उस दिन से वो महादशा में हो गया माना जाएगा, केवल वो वक्त पर पहले ही आ चुका होवे।

[2] जब कोई ग्रह कुण्डली में खुद भी रद्दी होवे और उसके बराबर के ग्रह भी रद्दी होवें तो जिस दिन वो ग्रह तख्त का मालिक हुआ, महादशा में हो गया गिना जाएगा, चाहे राशि नम्बर के हिसाब से बोलते चोले ग्रहों के हिसाब का साल कब ही जारी हुआ होवे पा जाते होवे, लेकिन अगर ऐसी महादशा के वक्त कुण्डली के खाना नम्बर के हिसाब से उम्र की गिनती पर बोलने वाले ग्रह अपने महादशा वाले ग्रह के दोस्त ग्रह ~~अपने महादशा मददगार~~ ही बोल पड़े, तो वो बोलने वाले दोस्त ग्रह अपने महादशा वाले दोस्त ग्रह के महादशा में हो जाने के मातम में उस ग्रह को (महादशा वाले) कोई नेक फल पैदा करने में मदद न देंगे, और न ही खुद से वो ग्रह कोई और बुरा फल पैदा करेंगे, सिर्फ दुनियादारों की तरह आम साधारण मातम-पुर्सी करते चले जाएंगे, जिस ग्रह की महादशा हो, वो अपनी महादशा के जमाने में उस महादशा के लिये लिए हुए सालों में इन्सान की उम्र या ग्रह की उम्र के हिसाब से नहीं, बल्कि सिर्फ महादशा के अर्सा-की मियाद के सालों में कोई आठ-आठ साल अपना आम असर देता की के लिए इस कुण्डली का में मौका के मुताबिक हर आठ आठ साल में होवे का यानी रक्खा करते हैं,

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यानि यह ज़रूरी नहीं कि वो उस ख़ास बारह साल में मन्दा ही होवे, क्योंकि महादशा में है या किसी और तरफ़ से रद्दी है। महादशा वाले ग्रह के ख़ाली असर का हाल:-

ग्रह	महादशा के कुल साल	ख़ाली असर कायम रखने का साल	कैफ़ियत
बुध	16	10 वां	यह दसवां साल उम्र की कुल पक्की और निहायती ख़ास के अलावा होगा।
सूर्य	6	साल का 1 या	जो साल कि हो पर पूरा ख़ास न होवे- 1, 3, 5 वां--
चन्द्र	10	मुहत या जोड़ा	जो वर्ष हो पर [illegible] 2, 4, 6 वां ---
गुरु	20	11 वां	कुल ग्रह के आम दौरा के 3 साल उम्र का पहला साल
मंगल	7	चौथा	शुक्र में मंगल के ग्रह का असर ख़त्म होने का होता है।
शुक्र	17	5 वां	महादशा का धोखा- इसके असरों वाली अकेली और दो
शनि	19	6 छठा	छोटी छोटी असरों वाली मुतल्लिका महादशा में 12 साल
राहु	18	7 वां	का धोखा सा लगा करता है, कि शायद [illegible] ही आने वाले
केतु	7	तीसरा	हों, मगर वो सिर्फ़ धोखा ही होता है, और बेमियादी, महादशा का जो साल होवे उस का नहीं। इन असरों के सालों के एक से बारह तक 12 साल में हर साल के मुतल्लिका ग्रह कुण्डली के मुताबिक अपने असरों में धोखा दिया करते हैं चाहे कुल 12 सालों में धोखा देने वाले ग्रह महादशा में हों या न हों।

इंसानी उम्र का औसतन 12 वर्ष	महादशा का ख़ास ग्रह	सूर्य	चन्द्र	केतु	मं०	बुध	शनि	राहु	शुक्र	ग्रह [illegible] पित्र	गुरु	राशिफल
	ग्रह साल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11, 12

आम ग्रहों के हालात

महादशा के वक़्त न सिर्फ़ महादशा वाले ग्रह का मन्दा फल होगा। बल्कि उस महादशा वाले ग्रह के बराबर के ग्रह भी चाहे वो कुण्डली में अपनी अपनी जगह शुभ फल के ही या उस महादशा वाले के साथी ग्रह या शत्रु के साथ ही कुल एक ही ख़ाना में क्यों न हों वो बरबाद करते हैं वही हाल दोस्त ग्रहों का होगा। जो सिर्फ़ [illegible]-पुर्सी करके चले जाया करते हैं लेकिन कुछ बुरा नहीं करते और न ही महादशा वाले का मन्दा फल अच्छा करते हैं महादशा वाले के लिए कुल के महादशा के ज़माने में क़दम पर क़दम रखने का का असर करते हैं महादशा के असर के वक़्त महादशा वाले ग्रह का कुण्डली के सिर्फ़ उस ख़ाना नम्बर का जिस में कि वो बैठा हो और उन्हीं चीज़ों पर जो चीज़ें कि उस ग्रह (महादशा वाला) की उस बैठे हुए ख़ाना की मुतल्लिका हों पर मन्दा असर होता है। बराबर के ग्रहों का जो महादशा वाले के महादशा शुरू होने के वक़्त उस महादशा वाले के लिए हो जाते हैं खोया हुआ असर भी सिर्फ़ कुछ ही चीज़ों से मुतल्लिका होगा जो कि वो बराबर के ग्रह उसे के पहले [illegible] उस ख़ाने/ख़ानों के [illegible] हिसाब के जिस में कि वो महादशा न होती तो जो असर ख़त्म हो सकता था वो अब महादशा में खोया हुआ होगा। यही असूल दोस्त ग्रहों की-मातम पुर्सी और [illegible]

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ग्रहों का जन्म पर नकद मिलने की तरह का होगा बरअक्स इसके महादशा वाले ग्रह का कुछ अपना असर दूसरों के लिए चाहे वो "बराबर के" दोस्त या दुश्मन हों महादशा को कोई असर न होगा वो असर वैसा ही होगा जैसा कि महादशा के बगैर होता था याद रहे कि चोखे के 12 साला चक्र में हर सालवीं (राहु का) या आठवां (बुध मौत निशानी का) साल नहूसती हालत हुआ करता है चाहे महादशा ही क्यों न हो। कुल नहूसती हालात के लिए ही नई किताब मुख्तसर होगी। महादशा के वक्त वाले किसी ग्रह की हो ज्यादा ज्यादा एक कम के 40 तक अंक आगे हुए के लिख लेंगे जिस तरह ऊपर की फेहरिस्त में दिखाए हैं यानी 12 सालों में अंक लिखे मौजूद हैं मगर उमर कुल सालों की पैदाइश पर ग्रहों के नाम न लिखें। अब जिस सन की महादशा शुरू हो गुजरी जाए या पहली ही महादशा वाले ग्रह का नाम एक के अंक वाले खाने में लिख दें और बाकी ग्रहों को क्रमवार में न जुदा करें यानि सूर्य के नाम के खाने में न लिख दें और बाकी ग्रहों को क्रमवार में न लिखें यानि सूर्य के नाम के खाने में न, चन्द्र के नाम के खाने में केतु आदि। अब जिस अंक की पैदाइश पर कोई ग्रह लिखा हुआ होगा तो साल का चोखे वाले ग्रह के असर का न महादशा के सालों में नहूसती हालत का होगा महादशा में पड़ा हुआ चाहे कोई भी ग्रह हो लेकिन अगर दो महादशा में लगातार एक के बाद दूसरी शुरू हो जाएं तो दोनों के बीच के साल वाले खानों के ग्रह का असर बिल्कुल न होगा। लेकिन बाकियों का बदस्तूर होगा। यानि महादशा मिली तो पूरे साल की आएगी मगर बीच के साल महादशा के पूरे ही असर का नहीं न होगा। मसलन गुरु की चोखों की 35 साला चक्रों में दो लगातार महादशाएं आती या मान लें तो महादशा के सालों के ग्रह नीचे लिखी की तरह होंगे:-

उम्र	राशि जन्म	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु	मिजान	कुल0
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40								

इन्हीं चालीस (40) अदद सालों के चोखे को जोड़ने के लिए चालीस दिन रियायती या चालीस दिन का हर उपाय की मियाद मुकर्रर की है और दिन हुए हिस्से दरअसल महादशा के असर या महादशा की मियाद का हर साल नम्बर है उम्र का साल नहीं। अगर उम्र का ठीक ठीक का साल महादशा में लिख लिए ग्रह के चोखे का साल है मालूम करना हो तो जिस ग्रह अब हिस्सा नम्बर एक लिखा है वहीं उम्र का वो साल नम्बर लिख के जिस साल के महादशा शुरू हुई और महादशा मुकर्रर की मियाद के बराबर हिस्से उम्र के सालों का साल नम्बर देख के लिए हुए खानों में तो महादशा की मियाद के साल नम्बर में यानि हिस्सा नम्बर एक से मुराद है कि महादशा का पहला साल, हिस्सा न0 2 से मुराद है। महादशा का दूसरा साल फर्ज किया किसी की 23 साल उम्र में गुरु की महादशा शुरू हुई तो जहां अब न0 1 का हिस्सा लिखा है वहां 23 का हिस्सा लिखा तो न0 2 की जगह 24 वीं हिस्सा उम्र के साल का हो जाएगा या इस तरह हिस्से लिख लेने पर उम्र के सालों में महादशा की मियाद का हर एक साल नम्बर मालूम हो जाएगा। पहली महादशा गुरु की 20वें

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

साल खत्म हुई और दूसरी भी 20वें साल शुरू हुई यानी 20वां साल दोनों महादशाओं का दरम्यानी साल हुआ यह दरम्यानी 20 वाँ साल अगर देखने के लिए मिला ही मिला यानि कुल 20वें साल न शुरू की महादशा का मिलेगा न ही शनि की जो 20वें साल की पैदाइश पर लिखा है। अब कुण्डली के हिसाब से जहाँ जहाँ कि गुरू और शनि हों और मौका के मुताबिक जैसा जैसा असर हो मिल जायगा यानि सालों में हर ग्रह जो कि ऊपर के नक्शा के पैदाइश पर लिखा है महादशा के सालों में होता रहेगा और उसी की हालात पैदा करेगा। एक तरफ तो उस फेहरिस्त के हिसाब से जो ग्रह उस वक्त हो ले लेवें दूसरी तरफ वर्ष फल के हिसाब से जिस ग्रह का दौरा हो, उम्र के जिस साल को देखना हो, वो ले लेवें, तीसरी तरफ राशि नम्बर के ग्रह चोले के हिसाब का ग्रह (उम्र के जिस साल का देखना हो) वो ले लेवें। अब इन तीनों ग्रहों में से अगर एक ही ग्रह तीनों तरफ या दो दफा लिखा पड़े वो ग्रह चोले का ग्रह होगा (महादशा के जमाने में) अच्छी या निहायत बुरी, क्योंकि गुरू महादशा में के दुश्मन ग्रह भी शामिल। मगर वो भी अपने अपने सालों में यानि एक तरफ तो ऊपर के नक्शा के सालों में सूर्य-चन्द्र-राहु बुरा फल देंगे। सिर्फ पहले दुश्मन ही दुश्मन ग्रह गिने जाएंगे यानि सिर्फ वही दुश्मन ग्रह जो गुरू के सामने दुश्मन के खाना में लिखे हैं बाकी जो ग्रह रह गए हैं वो बुध0 व केतु गुरू के बराबर के वो बुध या केतु गए गिने जाएंगे और शनि बुध केतु तीनों गुरू के दोस्त हैं वो सिर्फ मातहत पूरी करते चले जाएंगे। दूसरी तरफ लग्न का मालिक ग्रह व राशि नम्बर चोलने वाले ग्रहों का मुश्तर्का असर भी साथ होगा। महादशा का ।।वां साल गुरू के लिए महादशा के जमाना में रियायती साल होगा। ऊपर के नक्शा की पैदाइश के खाने राशि वहम मौत पितृ ग्रह का मतलब यह होगा कि।। मौतः- उस शख्स के खाना न0 8 में जो ग्रह है वो गिने जाएं उन सालों के हिसाब की पैदाइश पर जहाँ कि यू लफ्ज मौत लिखा है अगर खाना न0 8 उस शख्स की कुण्डली का खाली हो तो लफ्ज मौत के खाना के नीचे लिखे हुए हिसाबों वाले साल वाले के साल न होंगे और अगर खाना न0 8 (जनम लग्न कुण्डली) कोई ग्रह हो/ कोई ग्रह हों तो वो खाना न0 8 वाले ग्रह दो दफा (अगर एक ही हो तो अकेला/ कई हों तो हर एक अपने अपने साल जहां कि हर एक या वो अकेला दर्ज किए हुए चोले वाले नक्शा में हो) होगा देंगे। इसी तरह ही:-

पितृ ग्रहः- पितृ ग्रह से मुराद खाना न0 9 (जन्म कुण्डली के, वर्ष कुण्डली के नहीं) के ग्रहों से होगी और

राशि वहमः- राशि वहम से मुराद खाना न0 12 के ग्रहों से होगी महादशा के बगैर जो बाकी उम्र के सालों के ऊपर का असर बदस्तूर होगा। सिर्फ फलादेश करने का ढंग वर्ष फल पर होगा। फर्ज किया कि उम्र जारी के साल चोले के फेहरिस्त में बुध है उधर वर्ष फल के हिसाब से उम्र के जारी साल का ग्रह या राशि नम्बर के हिसाब से जारी उम्र का ग्रह भी बुध ही आ जाए तो बुध चोले का ग्रह होगा यानि अगर एक ही साल में वर्ष फल का ग्रह या राशि नम्बर चोलने का ग्रह और चोले की फेहरिस्त का ग्रह एक ही हो जाए तो वो ग्रह आम उम्र के हिसाब से चोले का ग्रह होगा।। और अगर आम उम्र में चोले का ग्रह और महादशा की मुद्दत का चोले का एक ही आ जाए तो वो ग्रह मौत तक की दौलत के लिए चोला दे देगा। (2) चोले

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

का ग्रह जरूरी नहीं कि नीच ग्रह ही होवे। वह ऊँच होता हुआ भी हर एक ग्रह धोखे का ग्रह गिना जाता है बशर्ते वो उस वक्त अंध हालत का हो क्यों न हो, लेकिन नाबालिग की हालत में या नाबालिग रहने के दिन तक वह धोखा का ग्रह या फल का या फलका धोखा होगा और उम्र भी खत्म कर देने तक हो सकता है मगर बालिग की हालत या बालिग हो के दिन से वह धोखा राशि फल का (यानि ताल्लुक उपाय) होगा। मगर हर दो हालत में धोखा हो जरूर। दो किस्म बात से हर एक ग्रह धोखा का साथ साथ उम्र और महादशा के असरात के सालों से तो मालूम हो गया और ग्रह का नाम भी पता लग गया। अब धोखा देने वाला ग्रह जन्म कुण्डली में जिस खाना नम्बर का हो उस ग्रह का उस बैठे हुए होने के खाने के मुताबिक जिन दिनों का ताल्लुक हो उन में वो ग्रह उस साल धोखा देगा। जिस तरह महादशा के असरात में हर ग्रह को असर बाँटा गया (मुताबिक जन्म कुण्डली) देने का रियायती साल दिया गया गिना जाता है इसी तरह ही बुढ़ापा की उम्र के हर सातवें (सात साला) हर आठवें (अष्ट आयु वाले) मन्दी की हालत होगी। उस वक्त सातवें साल या आठवें शुरू के बीच अर्से में सब की हालत असर होगी चाहे कोई ग्रह 12 खाना धोखे के वक्त के हिसाब से या वर्ष फल के हिसाब से ग्रस्त हो रहा हो ऊपर का तमाम हिसाब अगर सालों में लिख कर देखा हो तब से 12 महीनों में भी यही असर ही जाहिर होगा यानि दशा से सालों की जगह लफ्ज महीना लगावें। और महीनों के वक्त वाला हर एक से मुराद बैसाख का महीना लेवें जिस से बाद देशी महीनों के नाम होंगे फिर देशी महीनों के मुताबिक अंग्रेजी तारीखें भी देखी जा सकती है साल और महीना के बाद वार वार दिन के लिए इसी तरह में लिखें। ये 32 तक हिस्से लिख कर नम्बर एक से हिस्से होते जाते पर जन्म दिन ग्रह लिख कर तमाम ग्रह पूरे कर में होते के वक्त की मियाद एक साल होती है मगर इस एक साल में से भी आठो पूरा वक्त देखने के लिए हर एक ग्रह के वक्त की मालकियत के असरों के दौरा में इसके शुरू, मध्य व अन्त पर के दूसरे साथियों का ताल्लुक भी देख लें महादशा का असर किसी ग्रह के किसी एक खास हिस्सा की ताल्लुक के जो आते से मुराद होती है जिस तरह कि बाजार तमाम जिस्म के कोई अंग बाकायदा हो जाए किसी ग्रह का कुण्डली के बारह ही खानों के असर का हो जाना ग्रह के नष्ट हो जाने से मुराद होती है महादशा के असरात में महादशा वाले ग्रह पर उसके दुश्मन ग्रहों का असर उस ग्रह की अपनी मुकर्रा रेखा का यकायक टूट जाना मौत की निशानी होती है। महादशा के असरात के असरात में महादशा वाले ग्रह के इसके दोस्त ग्रहों का बाहमपुर्सी के वक्त का मिलना इस ग्रह का अपनी मुकर्रा रेखा खत्म होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरू हो जाना होगा। यानि वो मौत की निशानी होते हुए भी उम्र व जिन्दगी का कायम होगा बल्कि तब्दीली हालात की निशानी होगी।

<u>दो ग्रहों की महादशा:-</u> किसी वक्त दो इकट्ठे ग्रह महादशा के मालूम होते हों तो जो उन दो में से रद्दी हो जाए वो महादशा का होगा। मशनोई ग्रहों और असल ग्रहों के टोले में से मशनोई हालत वालों से जो रद्दी होगा वो महादशा ~~का~~ में होगा। मसलन सूर्य और मसनोई सूर्य (शु-बु) दोनों ही रद्दी शक्ल हो जाएं तो मसनोई हिस्सा का जो ज्यादा रद्दी हो वो महादशा का होगा।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

दशा ग्रह का असर और ... का ग्रह:-

किसी महादशा में न होगा और हर ग्रह चाहे कि वो राशि फल का है मगर महादशा का न होगा क्योंकि कायम असर ही हो चुका है।

महादशा में कौन-कौन से ग्रह कितने कितने साल शामिल हुए होंगे

महादशा का ग्रह	बृह०	सूर्य	चन्द्र	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
ग्रह जो होंगे शामिल महादशा	श 6 रा.6 केतु 3	मंगलचन्द्र 6	बु.2 मं.6 श.2	बृ.6 मंगल6 बुध2 शनि6	शुक्र 1 सूर्य 6 राहु	बृ.6 मं.6 श.केतु5	बृ. 16 केतु 3	बृ.8 सू. च.1 गुरु.सू.	बृ 6 बृ.बु. 1
कुल साल	15	6	10	20	7	17	19	18	7

ऊपर की फहरिस्त में जिस तरतीब से "बराबर के" ग्रह दिये हैं वो उसी तरतीब से एक के बाद दूसरा होते हुए गिने जाएंगे जिन ग्रहों के सामने कोई हिन्दसा नहीं दिया गया वो ग्रह हिसाब गिने जाएंगे।

बृहस्पति:- गुरु की कुल महादशा 16 साल होती है मगर इसकी महादशा के जमाना में जो आने वाले ग्रहों सालों की मियाद कुल 15 साल है यह एक साल का फर्क बृह० अपनी महादशा के बतौर पहैसियत गुरु आने वाली असर के लिए रखा करता है जो इसकी महादशा का शुरू होने का ही साल होता है या यूँ कहो कि बृह० की महादशा के कुल 15 साल रहे और 16 साल कुल में से महादशा का पहला ही साल बृह० की अपनी मर्जी का होता है इसी तरह ही बृह० हर एक होने वाले ग्रह का पहला साल भी दूसरे ग्रहों की तरफ से गुरु बृह० की शुरुआत के लिए रख लेता है जिस में भी बृह० का अपनी मर्जी का फल होगा। इस तरह पर 16 साल महादशा के अर्सा के सालों में बृह० का गुरु का अख्तियार किया गया साल हुआ, बृह० की महादशा के वक्त जो आने वाले ग्रह शनि 6 साल राहु 6 साल और केतु 3 साल यानि बृह० की महादशा के वक्त तमाम पापी ग्रह 15 साल मियाद के होते हैं। बृह० की महादशा शुरू हो तो इस महादशा का साल नम्बर एक पहला बृह० गुरु अपनी शुरुआत का ले गया। शनि के 6 सालों में से (2-3-4-5-6-7)शनि का पहला मगर बृह० का दूसरा साल बृह० शनि से गुरु साल का ले गया। राहु के छः सालों में से (8,9,10, बतौर अपना ग्रह 11,12,13) यह आठवां साल है बृह० की महादशा की मगर राहु का होगा पहला साल। बृह० राहु से गुरु साल का ले गया। केतु के 3 सालों में से (14,15,16) यह केतु का पहला मगर गुरु का 14वां साल है बृह० केतु से गुरुवाल का ले गया। खुलासा बृह० अपनी महादशा के वक्त का पहला, दूसरा, आठवां, दसवां, चौदहवां कुल 5 साल तो इस तरह ले गया और अपने दूसरे असूल के मुताबिक कि अपनी उम्र का पहला हिस्सा यानि 8साल कभी बुरा फल न देगा। चाहे बुरा असर दे चाहे न दे। यानि बृह० की महादशा दरअसल नौवें साल से शुरू होगी और 8 साल बाकी में से भी 14 वीं और 10वां दो साल और अपनी मर्जी के रख लेगा महादशा के वक्त में जिन जिन ग्रहों पर महादशा का असर न जावेगी।

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

मुहताकिआ में असर के होते होंगे ग्रह [illegible]	
बृहस्पति	सिवाए पापी ग्रहों के सब और ग्रह मददगार होंगे
सूर्य	सिवाए मंगल बद के पापी और सब ग्रह मददगार होंगे
चन्द्र	बुध-शुक्र, सूर्य, राहु, केतु
शुक्र	सूर्य, चन्द्र, राहु, केतु
मंगल	सूर्य, चन्द्र, बृह0, केतु, बुध, राहु बदस्तूर
बुध	सूर्य, चन्द्र, शुक्र राहु, केतु बदस्तूर
शनि	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, राहु
राहु	शनि, बुध, केतु, सूर्य बदस्तूर
केतु	चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु, सूर्य बदस्तूर, शनि बदस्तूर।

मुहताकिआ का असर ग्रह मुतलका की चीजों के असर से दुनिया की जाहिरा सबूत दे देता है।

नोट:- इस तमाम हाल में जहां कहीं भी मन्दे ग्रहों का जिक्र है उससे मन्दे फल सिर्फ उसी दिन से या दिन तक गिने जावेंगे जिस दिन से कि वो मन्दे ग्रह मुतअल्लिका साल से शुरू या खत्म होवें यानी उम्र के लिए ही मन्दे नहीं ज्यादा से ज्यादा हर ग्रह अपने दौरा (यानी असर की मियाद या ग्रह की अपनी उम्र) या उम्र के पहले 35 साला चक्र तक असर कर सकता है मुहताकिआ वाला ग्रह चाहे जो जन्म दिन से ही शुरू हो जाए और चाहे वो बाद ही एक के बाद दीगरे दौरे में मुश्तरका हो जाए 30 साल ज्यादा से ज्यादा मुश्तरका रह सकता है।

तख्त के मालिक व राशि नम्बर के ग्रहों मिलना कि उपाय हो सकता है ; का बाहमी ताल्लुक:-

वर्ष फल में उम्र के साल का ग्रह जो भी कोई मुकर्रर हो वो किस्मत के मैदान में ग्रह फल का कुण्डली के खाना में खाना न0 1 का दुनिया में तख्त का मालिक और हुक्मरान राजा होगा राशि नम्बर के ग्रह खाना न0 7 के उसी साल के जिस साल का कि वर्ष फल का खाना ग्रह हो राशि फल के या उस राजा के साथी वजीर होंगे। वर्ष फल में तमाम ग्रहों की आम मियाद के एक चक्र में 35 साल होते हैं और राशि नम्बर के तमाम खानों की मियाद के एक चक्र में 36 साल गिने हैं किस्मत का हाल देखने के लिए वर्ष फल वाले ग्रह को राजा और राशि नम्बर वजीर की जोड़ी 35 और 36 साला जुदी मियाद होने के कारण मुश्तरका न बन सकी इस एक साल का फर्क में चलने वाला "धोखे का ग्रह" का जुदा चक्र होता है वर्ष फल के दो चक्र = 70 साल और राशि नम्बर के दो चक्र = 72 साल या मुश्तरका 70-72 का जब हो जाए तो बाप बेटे की किस्मत का एक जगह इकट्ठी मानी है यानि बाप कायिल इतबार । बालिहाज किस्मत पुत्र बाप की अपनी किस्मत (न रहा 70 और 72 के फर्क का सिर्फ एक 71 वां साल) "धोखे के ग्रह" का माना जाता है जिस के महादशा के जमाने के अर्से के 40 साल के धोखे वाले असर के लिए 40 दिन का आम उपाय या चालीस रियायती दिन का अर्सा माना है।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

ग्रह का उपाय:-

(अ) रस बुत के नमूने की तरह ग्रह को रस और राशि को बुत मानें तो ग्रह फल के उपाय की इस हद में गुंजाइश नहीं मानी गई। राशि या ग्रह या राशि/ ग्रह फल के फल का मिज़ाज और ग्रहों के घोड़े के ग्रह के बदले के एक इल्मा इल्माती हालत में माना गया है। बुध के ग्रह का हीरा सफेद रंग पत्थर की माला। बल को काटता और मारता है। मगर जो खुद हरे रंग बुध की फुसली सिफारिश नई चीज़ बल्कि कली (टांके लगाने वाली धातु) उस हीरे में सुराख़ कर देती है। इसी तरह ही पापी ग्रह सब ग्रहों पर अपना धक्का लगाते हैं मगर उनको (पापी ग्रहों को) बदले के लिए खुद अपना ही पाप (या व पाप) के मुताबिक राहु-केतु, पापी के मुताबिक शनि, राहु, केतु तीन ही हैं यानि राहु के बुरे असर को केतु का उपाय खुद दुरुस्त करेगा और केतु के बुरे असर को राहु का उपाय ठीक करेगा। मददगार होगा और पाप की बेड़ी जब कट चुकेगी बदस्तूर तौर पर पापी ग्रहों का उपाय या उन ग्रहों की मुताल्लका चीज़ों की पालना करनी होगी या उनकी मुताल्लका चीज़ों से उनकी आशीर्वाद या माफी लेनी कारआमद होगा। मसलन शुक्र की मुताल्लका चीज़ गाय और आम इन्सानी सूरत का सब अनाज के सिवाय शुक्रिये के शुक्र की मदद के लिए गाय को अपनी सूरत का हिस्सा देवें। काम रेखा धन दौलत की हानि शनि की मन्दी निशानी कौए को रोटी का या औलाद के लिए दुनिया के दरवेश कुत्ते को अपनी सूरत का टुकड़ा दबावें।

(ब) हर ग्रह मन्दी हालत में दो ग्रह होते हैं जब कोई ग्रह मन्दा हो जाए तो उसकी मन्दी हालत में लिए हुए दो ग्रहों में से उसी एक ग्रह को हटाने के लिए, जिस के हट जाने से नतीजा ठीक हो जाए, कोई और ग्रह कायम करें जो बुरे फल के हिस्सा के देने वाले ग्रह को शुभ ही या ठीक कर देवें। मसलन - शनि मन्दा हो तो इसके मन्दी हालत की जड़ "शुक्र-बृह०" में से बृह० के हटाने के लिए अगर बुध का कायम करें तो शुक्र बाकी रह जाएगी। अब शुक्र के साथ बुध मिलने पर शनि ठीक होगा।

(स) उपाय के अलावा हर एक पक्के ग्रह का उपाय तो लाल किताब के मुताबिक ही लेंगे।

(द) हर एक ग्रह की मन्दी हालत में दो ग्रह इकट्ठे माने गए हैं पक्के ग्रह का जिस चीज़ का असर या जो असर मन्दा हो उस असर के देने वाले ग्रह को उसकी मन्दी जड़ से हटाने की कोशिश करें मसलन शुक्र जब खराब करे या खराब हो तो शुक्र के मन्दी जड़ राहु-केतु में से राहु को हटा दें तो बाकी केतु होगा यानि शुक्र के ठीक करने को राहु को ठीक कर देना मददगार होगा। बुध बृह० बृह० दोनों को ही कायम रख कर बचाने के लिए बुध की सब्ज़ रंग इलायची (सोने का ज़ेवर हरे कागज़ में रखने की तरह) मददगार होगी और बुध, शुक्र शनि की मुताल्लका चीज़ गऊ ग्रास अपनी सूरत से तीन टुकड़े रोटी के गाय, कौआ और कुत्ते को देना मुबारक फल देगा। वास्ते इज्ज़त मान धन दौलत और औलाद के नेक और उम्दा होने के वगैरह वगैरह। मतलब यह कि मन्दा फल वाले ग्रह के लिए मन्दा करने वाली चीज़ को दूर करें मंगल बद के बुरे असर से मुखालफ़त बचाएगी।

मंगल बद का इलाज:-

मंगल बद - मंगल बद व शनि के साँप की ज़हर या मंगल बद शनि मुताल्लका की मुखालफ़त पहाड़ी जंगल में सूअर को चीता कहते हैं। चीते की

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

मंगल नहीं माना है। जिस पर शरीफाना सांप न आएगा। मंगल बद का दोस्त शनि मुर्दा जिस्म की लाश पर शरीफाना सांप हरगिज न बढ़ेगा। इसीलिए राहु के मुलाकात को पसन्द किया है। ।1। मतरबे बहार, मौका के खुद खुद" इसके दिल की याद इसके ताबून के जाहिर कर देंगे क्योंकि इस का दिल था कि चन्द्र नहीं होता था न अंट को इसके पांव के नाखुन केतु कीमा। वाना लिखाते है या वो केतु के बुरे असर को बर्दाश्त करने के इलाज से काबू होगा। या चन्द्र की उपासना मदद देगी यानि चन्द्र जिस घर का कुण्डली के मुताबिक हो वही इलाज होगा।

।2। चन्द्र के शिवजी माना है मंगल बद को शिवजी ही माना है यानि चन्द्र व मंगल बद दोनों ही शिवजी माने गए हैं चन्द्र उम्र का मालिक है और इस मंगल पर मेहरबान होगा। मंगल बद सब के लिए मौत का फरिश्ता है या जहां मंगल बद होगा चन्द्र न होगा। इसी असूल पर मंगल बद ताकतवर चन्द्र की पूजा या मदद हुंडा मुतालिक होगा। तन्दूर में मीठी रोटी लगा कर बैरा में देने से भी मंगल बद का असर दूर होगा।

राहु का मन्दा असर :- जौ । । को किसी मन्द जगह में दीत तले दबाया जाए या दूध से धोकर बहते पानी में डाला जाए अगर दवेदिक आदि या लम्बा बुखार तंग करें तो "जौ" को गऊमूत्र से धोकर लाल सुर्ख कपड़े में बन्द करें और गऊमूत्र से ही दांत साफ करें जो ग्रह अंध हो इसकी मुतल्का चीज की मदद से मन्दे ग्रह का असर दूर हो जाता है।

<u>बलिहाज ताकत:-</u> ~~मेष,मकर~~ सूर्य,चन्द्र,शुक्र,बृह0,मंगल,बुध,शनि बातरतीब बाहमी मुकाबले की ताकत में कम हैं।

<u>टकराव या बर्ताव पर पैमाना ताकत:-</u> ~~ब~~ दौरा या वक्त का मालिक ग्रह और राशि नम्बर के ग्रह बाहम टकराव पर हो जाए।टकराव ~~और~~ दुश्मनी की हालत में होता है, मिलाप या बर्ताव दोस्ती की हालत में। सूर्य 9/9, चन्द्र 8/9, शुक्र 7/9, बृह0 6/9, मंगल 5/9, बुध 4/9, शनि 3/9, राहु 2/9 केतु 1/9 दौरा के वक्त ग्रहों के बाहमी टकराव के इनके बाहमी असर में कमी-बेशी होने के अलावा किसी ग्रह के उपाय के लिए दूसरे ग्रह का उपाय करते वक्त भी यह ताकत का पैमाना मददगार होगा। (बमुकाबले चन्द्र शनि मुरदा (हथियार तेज))

उम्र के दौर के साल में जिस राशि नम्बर खाना नम्बर के ग्रह काबिल उपाय होंगे। हर खाना में उम्र के 3 साल होंगे।

x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=

खाना नं0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राशि नं0	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृ0	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
उम्र के साल	1-3	4-6	7-9	19-21	22-24	25-27	28-30	31-33	34-36	10-12	13-15	16-18
	37-39	40-42	43-45	55-57	58-60	61-63	64-66	67-69	70-72	46-48	49-51	52-54
	73-75	76-78	79-81	91-93	94-96	97-99	100-102	103-105	106-108	82-84	85-87	88-90
	109-111	112-114	115-117							118-120		

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

उम्र के हिसाब से असर का खाना नम्बर देखते जाएं, अगर कोई खाना नम्बर खाली ही आ जाए तो इस खाली खाना नम्बर की राशि के मालिक ग्रह (घर का मालिक) जिस खाने में हो वो खाना लेवें। मगर यह वहम न करें कि एक ही खाना के ग्रह कई बार क्यों बोले।

राशि नम्बर के ग्रह बोलने के वक्त खाली खानों के लिए:-

आम तौर पर खाली खाने की हालत में खाली नम्बर वाली का राशि का मालिक ग्रह लेते हैं। खाना नम्बर 6,12 में बुध व बृह० के साथ केतु व राहु का लिहाज भी माना है इस लिए हर दो में से कौन का एक होगा:-

1) बृह० जब अपनी दूसरी राशि न० 9 में हो तो खाली खाना न० 12 का मालिक राहु होगा।

2) बुध जब अपनी दूसरी राशि न० 3 में हो तो खाली खाना न० 6 का मालिक केतु होगा।

लेकिन अगर बृह० 9,12 में से किसी जगह भी न हो तो खाली खाना न० 12 में बृह० राहु दोनों ही मुश्तर्का मालिक होगा।

अगर बुध 3,6 में से किसी जगह भी न हो तो खाली खाना न० 6 में बुध केतु दोनों ही मुश्तर्का हो सकते हैं लेकिन यहाँ बुध जबरदस्त होगा केतु वहाँ कमजोर होगा इस लिए ऐसी हालत में खाली खाना न० 6 का मालिक बुध या केतु में से कोई एक लेंगे जो कि दोनों में से प्रबल हो उस कुण्डली में (जन्म कुण्डली के हिसाब से) उल्टा हो, क्योंकि खाली खाना न० 6 हमेशा नेक मायनों में होता है। इसलिए दोनों में से कमजोर-या मन्दे को अब खाना न० 6 का मालिक नहीं लेंगे। खाली खाना न० 9 का मालिक बृह० और खाना न० 6 खाली का मालिक बुध होगा। बाकी खाली खानों के लिए बतह राशि-नम्बर को मालिक ग्रह (घर का) लें।

<u>जो ग्रह नीच फल दें उस ग्रह के उपाय के लिए नीचे दिया हुआ दान करें:-</u>

देवी ताकत में	किस्म ग्रह	नाम ग्रह	रंग ग्रह	उपाय वास्ते औलाद व दौलत बमुहूरत	उपाय आम चीज़
ब्रह्मा जी	नर	बृह०	जर्द	हरी पूजन	दाल चना, सोना
विष्णु	नर	सूर्य	गेहुंआ	कथा हरि भजन	गेहूं, लाल तांबा
शिव भोले	स्त्री	चन्द्र	दुधिया	महादेव पूजन	चावल, दूध, चांदी
लक्ष्मी जी	स्त्री	शुक्र	दही रंग	लोगों की पालना	घी, दही, काफूर, मोती सफेद, रेत
हनुमान जी	नर	मंगल	सुर्ख	गायत्री पाठ	दाल मसूर लाल
दुर्गा जी	नपुंसक	बुध	हरा	दुर्गा पाठ	मूंग साबुत, जमर्द
भैरव जी	"	शनि	काला	राजा की उपासना	उड़द साबुत, लोहा
सरस्वती जी	"	राहु	नीला	कन्या दान	सरसों, नीलम
गऊ माता	"	केतु	चितकबरा	दान कपिला गाएं	तिल

चोला के ग्रह का जो बुरा बुरापन होता है इलाज भी देख लेना जरूरी होगा। अगर लड़का लड़की-नाम के लिए दोनों ही मन्दे फल वाले पैदा हो जाए तो सूर्य

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

लड़का, बुध लड़की या लड़की के गर्भ में बाप का टुकड़ा मुबारक होगा। जो बुध को बना देगा। पापी ग्रहों के साथ जब वो अकेले अकेले ही बजाए कोई भी मुकाबले हों तो मंगल को कायम करना मुबारिक होगा, बशर्ते कि उस कुण्डली के वाले का अपनी कुण्डली के हिसाब से मंगल राशि फल का न हों यानि अगर मंगल खाना नं0 1 या 3 या 8 में हो तो मंगल का उपाय न होगा। बुध काम देगा। इसी तरह ही सभी ग्रहों (चन्द्र-शुक्र) में बुध की ताकत मदद देगी। बशर्ते कि बुध खाना नं0 3,6,7 या 9 का न हों ऐसी हालत में वृह0 काम देगा। सूर्य शनि के झगड़े में वृह0 मददगार होगा। बशर्ते कि वो खाना नं0 2 का न हों ऐसी हालत में मंगल मददगार होगा। बहरहाल उपाय के वक्त देख लें कि जिस ग्रह के जरिए मदद लेने को है वो खुद कहीं ग्रह फल का ही तो नहीं है खाना नं0 9 के ग्रहों का उपाय रंग के दरिया की मदद से होगा, यानि शुक्र बुध मंगल वगैरह तो उन के दोस्त ग्रहों की पालना करें या कम से कम उस नेक ग्रह के रंग की चीजें पांव तले फर्श पर न बिछाए जो रंग का खाना नं0 9 के ग्रह से मुताल्लिक है जब ग्रह उपाय का न न देवें तो घण्टों के अन्दर अन्दर ही फैसला करने के लिए नीचे लिखे उपाय होंगे।

मंगल बद:- रेवड़ियां पानी में बहा देवे
वृहस्पति:- केसर नाभि या जबान पर लगा दे या खाने को देवें
सूर्य:- पानी में गुड़ बहा दें
चन्द्र:- दूध न या पानी का बर्तन सिरहाने रख कर कीकर के पेड़ पर डालें।
शनि:- तेल का छाया पात्र दान करें।
शुक्र:- गऊ दान या चरी दान (जवार) करें।
मंगल नेक:- मिठाई, मीठा भोजन दान करें या बताशा दरिया में डालें
बुध:- तांबे के पैसे में सुराख करके दरिया में बहा दें।
राहु:- मूली दान करें या कोयले दरिया में डालें।
केतु:- कुत्ते को रोटियां डालना आदि।

<u>उपाय की मियाद</u>:- हर एक उपाय की मियाद कम से कम 40 दिन और ज्यादा से ज्यादा 43 दिन होगी। पितृ ऋण या मातृ ऋण या कुल मुतल्लीन की मदद के लिए उपाय की मियाद होगी तो वही 40 या 43 मगर हर रोज लगातार की बजाए हफ्तावार लगातार होगी यानि हर आठवें दिन जो 40 43 हफ्ते होंगे। उपाय के वक्त वाले आखिरी दिन 39वें या 40वें दिन ही भूल जाए या बन्द कर बैठे तो सब ही किया कराया निष्फल होगा और नए सिरे से फिर दोबारा शुरू करके पूरी मियाद तक करने के बाद फल देगा। अगर किसी वजह से उपाय बन्द ही करना दरकार हो मगर पहला असर भी कायम रखना मन्जूर हो तो चावल दूध से धोकर पास रखे जाएं।

<u>रियायती चालीस दिन</u>:-

एक ग्रह का असर खत्म और दूसरे के शुरू के बीच 40 दिन फालतू होंगे यानि बुरे ग्रह की मियाद के 40 दिन बाद तक बुरा फल हो सकता है और शुरू होने वाले का अपनी मियाद से 40 दिन पहले ही असर हो जाना माना है। इकट्ठे असर के सिर्फ 40 दिन ही होंगे मगर देखने को दोनों ग्रहों के जुदा जुदा 40-40 दिन न होंगे। यह रियायती दिन कहलाते हैं इसी असूल पर बच्चे के जन्म से लेकर 40 दिन और मर जाने के बाद 40 दिन का मातम या चालीसा मनाया जाता है और इन्सानों में भी चालीस वर्ष पूरा मजबूत होना चूंकि मियादी लेकर के

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

लम्बे हिसाब को इस इल्म में उड़ाने के लिए 28 नक्षत्रों और 12 राशि को बाद में छोड़ ही दिया जाता है। इस लिए दोनों की जमा (28+12) कुल 40 दिन रियायती तक कम से कम या ज्यादा से ज्यादा 40 दिन तक उपाय का असर पूरा होगा जिसकी निशानी वक्त से पहले ही नेक ग्रह का असर हो जाने के बाद दोरस ग्रह की चीजों की कुदरती निशानियां और बुरे ग्रह की मियाद 40 दिन बाद तक रहने वाली हालत में पापी ग्रहों की निशानियां हुआ करती है। औसतन उपाय 40 दिन की आधी या चौथाई मियाद में आधी या चौथाई असर मालूम होने लग जाया करता है।

<u>पितृ ऋण:-</u> पितृ ऋण से मुराद गुफिया असर होता है और बोने के ग्रह या उस के बच्चे से जाहिर हो जाएगा, गुनाह तो कोई करे मगर सजा कोई और भुगते। मगर सजा मुकर्रर इस गुनाह करने वाले का असल करीबी ताल्लुकदार (खाना नं० 9 के ग्रहों से मुराद होती है जब इस घर में या इस घर के मालिक ग्रह यानि बृह० के किसी दूसरे घर कोई और ग्रह (एक या एक से अधिक) हों या तो बाहम दुश्मनी पर हों या वो दोनों या हर एक बृह० की ताकत को खराब करते या बृह० के असर में जहर मिलाते हों तो पितृ ऋण होगा। राहु को बृह० के चुप करवाने वाला लिखा है वो अगर बृह० का मुंह बन्द करके चुप रहनी (हालत का असर बृह० के ताल्लुक से (यानि या तो वो बृह० के घरों में हो या बृह० के पक्के घर में) देवें तो पितृ ऋण का बोझ होगा। इसी तरह ही और ग्रह भी चन्द्र की बराबरी में आसमान की तरफ से मातृ ऋण हो सकते है। खुलासतन जिस ग्रह की जड़ (इसकी अपनी राशि) में इस का दुश्मन ग्रह जब उलटा फल रद्दी कर रहा हो और खुद भी रद्दी कर रहा हो और अब भी गन्दा हो रहा हो तो पितृ ऋण होगा। पितृ ऋण या कुण्डली वाले के बुजुर्गों का पाप - बाप के खिलाफ कुटम्ब को मौत वगैरह से मार देने के पाप से इस का लड़का दुःख भोगने का हकदार होगा यानि कुण्डली वाले पर इसके बाप के पाप का बोझ भी हो सकता है जिस वक्त तक केतु व बृह० का उपाय न करे पितृ ऋण का बोझ लड़के की 16 से 24 साल उम्र तक दूर न होगा। ऐसे इसी तरह ही सब ग्रहों का हाल हो सकता है चाहे ऐसे शख्स के (कुण्डली वाले के) अपने ग्रह लाख राज योग ही क्यों न हों बुरा असर दो ग्रहों का होगा और उपाय भी दो ग्रहों का करना होगा। फर्ज किया कि कुण्डली वाले के बाप ने कुत्ते मारे तो कुण्डली वाले पर वो बृह० व केतु पितृ ऋण हुआ जो कुण्डली वाले पर बालिग होने की (कुण्डली) उम्र से 16 से 24 साल रह सकता है। कुण्डली वाले के रिश्ता के ताल्लुक और पाप की किस्म ऋण का नाम मुकर्रर होगा।

ऋण की किस्म --- जैसी करनी वैसी भरनी:-

x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x=x

जिस का पाप हो	पिता का	माता का	अपना हो	दुनिया का	हकीकी रिश्तेदारों का	बेटी बहिन का	जानवरों का	धतूरा का	फकीर का
तो ऋण होगा	पितृ	मातृ	जाती	स्त्री	नातेदारा	बहिन का	जालिमाना	अजन्मे का	दरगाही
ग्रह मुतल्लका	बृह०	चन्द्र	सूर्य	शुक्र	मंगल	बुध	शनि	राहु	केतु
कैफियत	श्राप	मन्नतवश	बरात आकबत	पेट मार	मित्र मार	नजाती धोखा	जहर हत्या	धगा बेईमानी	बद नेकी
बालगी दिनों	16 साल	24	22	25	28	34	36	42	48

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

वर्ष - फल

किस्मत का हाल सालवार देखने के लिए यह जरूरी अम्र है। जब जन्म वक्त दिन, माह, पक्की उम्र मुकर्रर मालूम न हो तो सामुद्रिक में वाकया की बुनियाद पर बनाया हुआ वर्ष-फल ज्यादा तसल्ली बख्श होगा। वाक्यात से मुराद खुशी या गमी के पक्के वाक्यात से होती है। मसलन-- शादी का महीना दिन और साल, किसी नजदीकी खून के रिश्तेदार की पैदाइश या मौत, नर ग्रहों, स्त्री ग्रहों या मुश्तरका ग्रहों के मुतल्लका असर में से किसी चीज का पक्का वाकया, जन्म दिन तारीख पैदाइश नहीं, रवि, सोम आदि मुतल्लक दिन ग्रह का है, साला ग्रह या खाना नम्बर या खुद साहबे मकान दिन ग्रह का है, साला ग्रह जन्म कुण्डली में लग्न के खाना का ग्रह और अगर लग्न का खाना खाली हो तो जन्म राशि के घर का मालिक ग्रह। गरजेकि जो भी सही सही और दुरुस्त व पक्का वाकया मिल सके ले लेवे। फर्ज करो या कि किसी शख्स की शादी का वाकया पक्का मिल गया है पहली शादी का। अगर कई दफा शादी हो तो पहली शादी का दिन ही लिखने के काबिल होगा। जो इसकी 17 साला उम्र में हुई यानि 17 साला उम्र से शुक्र शुरू होगया अगर शादी का साल महीना दिन मालूम न हो और पहली शादी की औरत की मौत का दिन महीना साल ही मालूम होवे तो औरत के गुजर जाने या शुक्र के खत्म होने का साल होगा। हर एक ग्रह की दी हुई आम मियाद में शुक्र का अर्सा 3 वर्ष लिखा है 17 साल उम्र में शादी हुई तो इसका शुक्र का ग्रह 17 साल से शुरू हो गया, मान कर 3 साल 19 साल उम्र के आखिर तक रहा अगर 17 साल उम्र में औरत मर गई तो 17वें साल या औरत के मरने के दिन शुक्र खत्म हुआ या औरत की मौत के दिन से 3 साल पहले से चलकर मरने के दिन तक शुक्र का दौरा था। वर्ष फल के बनाने के लिए ग्रहों का दौरा यानि कौन ग्रह किस ग्रह के पहले या बाद अपना असर देगा। तरतीबवार लिखा है यानि सब से पहले बृह० के बाद सूर्य के बाद चन्द्र आदि आखिरी दौरा केतु का नम्बर है ग्रहों की आम मियाद के हालों में तादाद और तरतीब व भी वर्ष है सारे ही ग्रहों की कुल मियाद का जोड़ 35 साल उम्र का एक चक्र होगा। मसलन किसी शख्स का शुक्र शुरू हुआ 17 साला उम्र में तो वर्ष फल होगा।

6 साल बृह०	2 साल सूर्य	1 साल चन्द्र	3 साल शुक्र	6 साल मंगल	2 साल बुध	6 साल शनि	6 साल राहु	3 साल केतु
							1से4	5से 7
8से13	14-15	16	17से19	20से25	26से27	28से33	34से39	40से42
43से48	49से50	51	52से54	55से60	61से62	63से68	69से74	75से77
78से83	84से85	~~86~~	87से89	90से95	96से97	98से103	जितने साल तक उम्र चलती रहे या हो जाने वाले लिख देवें दोनों अंक शामिल करके हर ग्रह की मियाद होगी।	

पहचान:-

पहचानें कि वर्ष फल ठीक है या गलत उम्र के शुरू होने का पहला साल या अंक संख्या एक जिस खाना में हो वहां देखे कि पैदाइशी पर कौन सा ग्रह का नाम लिखा है, ठीक हालत में लिखा हुआ नं० 1 के खाना वाला ग्रह इसकी कुण्डली के खाना नं० 9 या खाना नं० 1 में होगा। या उस शख्स का जन्मी

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

मकान हिस्सा नम्बर 1 के खाना के ग्रहों से मिलता या वो शख्स खुद उस ग्रह का हमनाम दिन का ग्रह रविवार के लिए सूर्य, सोमवार के लिए चन्द्र आदि की हिस्सा न0 1 के ग्रह का हो सकता है। इस जांच के लिए मंगल और शनि या सूर्य और बुध या सूर्य और चन्द्र एक ही गिने जाएंगे वहां दूसरा वर्ष फल इस्तेमाल करें। अगर ऊपर लिख कर दो बातों से कोई भी ठीक मालूम न हो बाकि हिस्सा न0 1 से न मिले तो कोई और वजह से कर वर्ष फल बनावें।

तमाम उम्र पर असर (आम वर्ष फल)

उम्र वर्ष से तक	असर ग्रह	वर्ष से तक	असर ग्रह	वर्ष से तक	असर ग्रह
1 से 6	शनि	7 से 12	राहू	13 से 15	केतु
16 से 21	बृह0	22 से 23	सूर्य	24	चन्द्र
25 से 27	शुक्र	28 से 33	मंगल	34 से 35	बुध
36 से 41	शनि	42 से 47	राहू	48 से 50	केतु
51 से 56	बृह0	57 से 58	सूर्य	59	चन्द्र
60 से 62	शुक्र	63 से 68	मंगल	69 से 70	बुध
71 से 76	शनि	77 से 82	राहू	83 से 85	केतु
86 से 91	बृह0	92 से 93	सूर्य	94	चन्द्र
95 से 97	शुक्र	98 से 103	मंगल	104 से 105	बुध
106 से 111	शनि	112 से 117	राहू	118 से 120	केतु

बारह साल तक बच्चा की किस्मत का कोई इतबार नहीं। 70 साल के बाद मर्द की अपनी किस्मत का कोई इतबार नहीं बच्चों की किस्मत होगी, जो कुल 70 या 72 हो सकता, 35 साल में तमाम ग्रह चक्र पूरा करते हैं। हर एक ग्रह के असर के साल वगैरह सिर्फ उस शख्स की उम्र के हिसाब से लिए हैं जो शख्स के साल हिसाब में हर ग्रह के ऐन मुकर्ररह मियाद के अन्दर अन्दर ही पैदा हुआ होवे या दिया हुआ नक्शा दिखलाता है कि इल्म सामुद्रिक के हिसाब से जो उम्र में कि हर ग्रह का फल जाहिर होगी हर एक आम दुनियावी इन्सान पर हर ग्रह का दौरा इस के जन्म के साल से शुरू होगा। हर ग्रह की मुतल्लका जायदाद चीजों के लिए उम्र के साल को उन हिस्सा से तकसीम करें जिस खाना नम्बर से मिश्रह मुतल्लका बैठा हो बाकी बचे वाले हिस्सा के खाना नम्बर में जो ग्रह उस साल असर करेगा। खाना न0 1 के लिए 12 खाना न0 2 के लिए 11 खाना न0 3 के लिए 10, बाकी घरों के लिए अपने अपने नम्बरों पर भाग करें। शुरू या सिफर बचने की हालत में वो ग्रह जन्म कुण्डली वाले की आखरी घर में असर कर रहा गिना जायगा। हर एक ग्रह की चीजें हर खाना में खास खास मुकर्ररह है। जो चीज देखनी हो उसका मुतल्लका खाना नम्बर और जिस ग्रह के जरिया देखनी हो देखें कि वो कब और किस घर में इकट्ठे होंगे जो इस्तेमाल किताब करें एक जगह मिल कर आते हैं वहां दुश्मन ग्रह आ मिले वो खराब होगा। खाना 3 का चन्द्र मौत के घर खाना न0 8 में 24 साल में आ मिला अब खाना न0 3 के बाद 4, 5, 6 जहां चन्द्र का दुश्मन मिले मौत होगी।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

(ब) हर एक ग्रह को (सिर्फ अकेला ही अकेला) इसी तरह ही घुमाया जा सकता है यानि जितने नम्बर के खाना में कोई ग्रह जन्म कुण्डली में बैठा हो देखें कि जिस साल का हाल देखना है वो उम्र का कौन सा साल है उस उम्र के साल के हिन्दसा को उस नम्बर पर तब्दील करें जिस में कि वो ग्रह बैठा हो (जन्म कुण्डली में) बाकी जो हिन्दसा बचे उस खाना नम्बर में उस साल (जितने साल की उम्र का हाल देखा जा रहा है) वो ग्रह असर करता है और चल रहा होगा। फिकर या दुनिया वाली बच्चे की हालत में इसी घर (जन्म कुण्डली के जिस नम्बर पर है) असर दे रहा होगा। मसलन किसी जन्म कुण्डली में सूर्य है खाना नं० 11 में और उम्र का 52वां साल जारी है तब 52 के हिन्दसा तब्दील किया तो बाकी रहे 8 यानि 52 साल उम्र में सूर्य खाना नं० 8 में गिना जाएगा और बाकी ग्रह बदस्तूर वैसा कि वो जन्म कुण्डली में हों रख कर सूर्य की मुलाकात चीजों का असर देखा जाएगा इसी तरह ही हर एक ग्रह का हाल वारवार देखते जाएंगे। ख्याल रहे जिस ग्रह की मुलाकात चीजों का हाल देखना है सिर्फ उसी ग्रह को घुमाएंगे बाकी सब ग्रह बदस्तूर (जन्म कुण्डली के खानों के) होंगे। अकेला अकेला करके घुमा कर जो कुण्डली बनाएंगे वो उस साल की ~~औसत×हालत××~~ औसत हालात बताए देगी।

<u>नुक्ता नोट</u>:- जन्म कुण्डली को चाहे इल्म ज्योतिष के मुताबिक बना कर और लग्न को खाना नं० 1 लेकर बाकी खाने पूरे किए हों और चाहे इल्म सामुद्रिक से बनाई हुई हो दुरुस्त करने के बाद आगे दी हुई सूचि के अनुसार अमल दर आमद करें।

मुख्तलिफ हालात के लिए लिया हुआ वर्ष फल में

माहवारी हालात के लिए	सूर्य को चलाएं
रोजाना हालात के लिए	मंगल को चलाए
घण्टों हालात के लिए	बृहस्पति को चलाए
मिण्टों हालात के लिए	शनि को चलाए
सैकण्डों हालात के लिए	बुध को चलाए
डिग्री हालात के लिए	चन्द्र को चलाए
सप्ताह ह वार के लिए	शुक्र को चलाए
रातों हालात के लिए	राहु को चलाए
दिनों हालात के लिए	केतु को चलाए

यानि वर्ष फल कुण्डली को घुमा दें। वर्ष फल का असली असर उसी महीना में होगा जिस खाना नम्बर में कि उस साल सूर्य बैठा हो मसलन अगर वर्ष फल में सूर्य खाना नम्बर 7 में हो तो सूर्य का मन्दा असर यानि राज दरबार में बरबादियां आदि उस साल के (जन्म दिन से) सातवें महीने पैदा होंगी मगर बाकी सब महीनों में सूर्य का असर मन्दा नहीं गिना जाएगा। इसी तरह ही बाकी सब कुण्डलियों (सालाना, माहवारी, रोजाना आदि) में असर होगा।

एक साल के अन्दर के हालात के लिए ऊपर के हिसाब से लिए हुए वर्ष फल की कुण्डली जिस खाने में सूर्य बैठा हो उस खाना को उम्र के हिन्दसा का हिन्दसा नम्बर ले कर तमाम कुण्डली मुकम्मल कर लें। महीना का शुरू जन्म वक्त से लेंगे। मसलन 31 की पैदाइश हो तो दूसरे महीने की 30 तक पूरा महीना होगा

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

एक साला उम्र के बच्चे के लिए भी यही असूल होगा। मसलन जन्म वक्त 10-5-98 सोमवार 5-43 बजे शाम।

11-5-41 शाम 5-43 बजे के बाद 44वीं रात जारी

जन्म कुण्डली [लग्न के हर ग्रह]

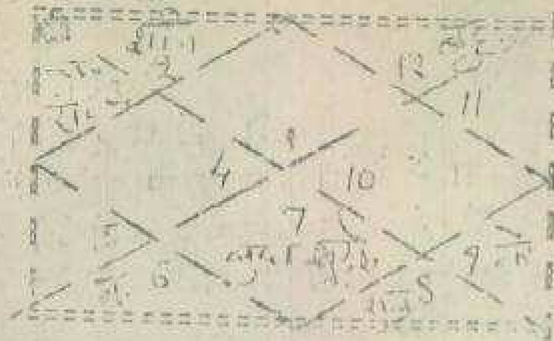

लग्न के हर ग्रह सालाना कुण्डली मुताबिक फिहरिस्त वर्ष फल बनाया गया

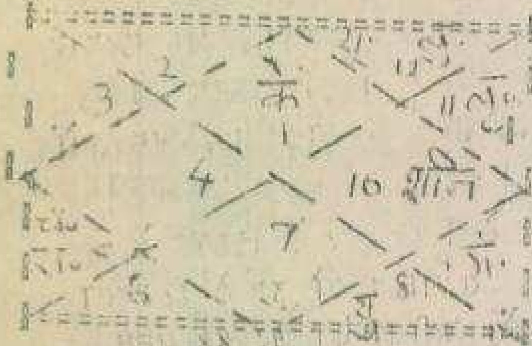

11-5-41 को शाम 5-42 बजे के बाद 3 महीना शुरू हुआ [illegible] होने वाले [illegible] बमूजब 5 लिया गया [illegible] कुण्डली को [illegible]

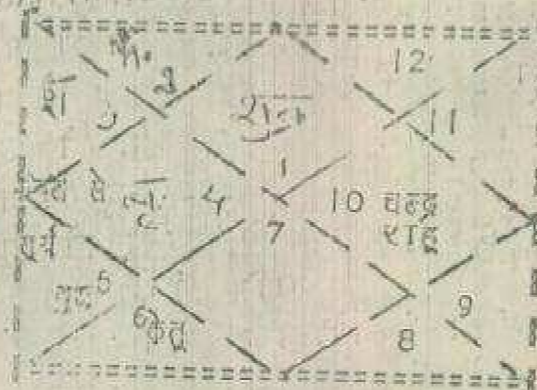

रोज़ दिन कुण्डली:-

5वें महीने का 17 वाँ दिन, पहले दिन से 16वें दिन तक 1 से 16 तारीख वाली कुण्डली में जिस जगह मंगल बैठा है उस घर को [illegible] के दिन कर 17वें नम्बर वाले [illegible] दिया गया [illegible]।

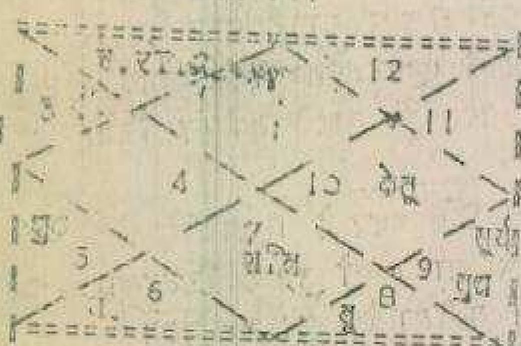

घण्टा कुण्डली के लिए 5वें महीने का 23 वाँ घण्टा रोजाना कुण्डली में बुध० 6 [illegible] कर के एक दिन कर 23वाँ नम्बर बुध० को

घण्टा कुण्डली

PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

हाथ से कमाई करके पं. बुध शुक्र लक्ष्मी पांच पदार्थ फिरे। बृहस्पत की ताकत रूहानी और दिमागी लियाकत, दुनियावी तालीम, व पैदा भी होगा। असर के लिए यह बुर्ज और ग्रह हवा के नाम से याद किया गया है। जिस का रंग बदलती है। इन्सान हवा का पुतला है और इसी हवा से ही इसका आखिरी लिया जाता है। जब यह हवा आना जाना बन्द कर लेती है तो इन्सान अमानत की हवा से आम लिया जाता है यही हवा ग्रहों में गुरु और की अमानत एक सैर लिखी गई है जो नेक बहरीली की क्यों न हो फायदामन्द है। यह ग्रह अपने वक्त के दरम्यान में असर करता है यानि जवानी में या उठती जवानी में पापों के पैदा होने के बाद और अमानत की हवा लगने से पहले पहले बृह0 का असर वक्त दरम्यान शुक्र/बुध --- सूर्य/बृह0 --- चंद्र/सूर्य. बृह0 किसी ग्रह का दुश्मन नहीं अपना पहला वक्त उम्र यानि 8 साल होगा नेक फल देगा चाहे इस वक्त अपने घर बैठा हो चाहे दूसरे दुश्मन के घर गया होवे लेकिन इस वक्त इसके घरे आए हुए पापी या दुश्मन ग्रह बुरा फल देंगे सिवाए खाना नं0 2 के।

बृहस्पति का असर:- जो बृह0 की है तो से दुश्मनी नहीं मगर बुध व शुक्र (शादी रेखा बुध पर और शादी रेखा शुक्र पर) बुध दुश्मनी करते है अपनी ही जाति का असर खराब करते है यानि बृह0 जब किसी भी दूसरे बुर्ज पर चला जाए यानि बृह0 के अपने बुर्ज के अलावा किसी दूसरे बुर्ज पर बृह0 के निशान पाए जांए तो बृह0 अपना नेक असर उस बुर्ज को जिस में कि चला गया है, दे देगा। जब दुश्मन ग्रह बृह0 के बुर्ज पर हो तो दुश्मनाना फल पैदा होगा। मगर बृह0 अपने कुल उम्र का वक्त 8 साल पहला जरूर नेक फल देगा। बृह0 पापी ग्रहों (शनि, राहू, केतु) तथा बुध के साथ पिघले हुए सोने की तरह राशि फल का होता है जिस में हर तरह की तरह का फायदा उठाया जा सकता है पापी ग्रहों तथा बुध के साथ राशि फल मुतल्का ग्रह पर एक से अलग-अलग उपाय से देख लो।

(2) जब पापी ग्रहों या केतु का फल मन्दा होवे तो बृह0 का फल भी मन्दा होगा।

(3) जब सूर्य या चन्द्र उम्दा न हो बृह0 की हवा निहायत सर्द बर्फानी तूफान की हवा की तरह किस्मत के असर को सुला देगी या किस्मत का आम दुनियावी असर मन्दा ही होगा या मन्दी किस्मत होगी।

(4) जब मंगल नष्ट हो या मंगल बद हो तो बृह0 भी नष्ट होगा यानि वह आकाश बेल होगी जो जिस दरख्त पर चढ़े उसे तबाह कर देगी। मगर बृह0 बुध मुश्तर्का वगैरह देखे बुध का खास ताल्लुक बृह0 जब दो या दो से ज्यादा ग्रहों के साथ हो जाए या उनको देखता हो जो ग्रह कि आपस में दुश्मन हों (बुध या मंगल की वो ताकत जो मंगल या बुध नर ग्रहों व स्त्री या व नपुंसक ग्रहों के बीच होने पर रखते हैं) की शर्त न होगी। और न ही उन ग्रहों की बृह0 से दुश्मनी की शर्त होगी। तो वो इसकी खानदानी दुश्मनी हटा देगा। यह मतलब नहीं है कि दोस्ती ही पैदा करवा देगा दोस्ती पैदा करवाने वाला चन्द्र है। बृह0 के ग्रह के प्रबल होने वाले शख्स का माथा चूहे के माथे की तरह तंग या न होगा। न ही दो कमर की बीमारी वाला या नाक कटा हुआ होगा। हाथ की पहली या तर्जनी अंगुली लम्बी होगी? मगर कटी हुई या टेढ़ी हो चुकी होगी तबीयत में गुस्से (लापरवाह जिस में किसी से भी मुहब्बत की न हो) की तरह का स्वाभाव न होगा और न ही जानवरों को जिबह करने वाले

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भलाई की तबीयत का होगा। रंग जिस्म व चेहरा का सोने की तरह चमकीला होगा मगर सोने या गहने की चमक वाले की तरह जर्द रंग हो मुमा न होगा। आदि मस्त शेर की तरह रोब-व मगर हरामदगी न होगी। मुन्दर्जा जैल में से बृह० की उत्तम निशानियां साथ होंगी।

रूहानी हाथ:- अंगुलियों के जड़ मालूम ही न हो और नाखुन वाली पोरी नोकीली सी हो तो मजहब पर मर जाने वाला हो जो किस्मत होगी, ऐसा आदमी मजहब के जोश का आदी होगा। ऐसे शख्स से किसी को भी फायदा न होगा। आदत का लापरवाह वाली हालत दरम्यानी न हो।

उच्च बृहस्पति:- (1) लम्बा हो (4वें), वर्ण निर्मल कान्तिमान . औरत यदि लम्बी हो तो ... , मोटी नहीं मत।

अपनी अंगुली के पैमाना से (तीन अंगुल की एक की गिरह, 4 गिरह की एक बालिश्त, दो बालिश्त का हाथ, दो हाथ का एक गज यानि 36 इंच या 48 अंगुल या एक अंगुली 3/4 इंच मगर अपने हाथ के पैमाना से होगा) लम्बाई को $1\frac{1}{3}$ से गुणा करे तो तादाद अंगुली होगी, 68 अंगुल दस-वर्तीन, 52 अंगुल नेक वर्तीन होगा। सांस (शुरू) बृह० सांस या हवा से निस्बत रखता है जो में सांस किसी नाक आदि चलता हो नेक काम या नेक ... कायम रखने वाली चीज का शुरू करना मुबारक होगा। बांए सांस से शुरू किया हुआ काम मामूली सा नतीजा देने वाला होगा। कोई बात नेक न होगा।

बृह० हवा के रास्तों से मुतल्का होगा। नेक मकान का, मकान के किसी एक सिरे पर होगा। चाहे मकान शुरू में ही हो चाहे बिल्कुल आखिर पर चाहे दाईं-बाईं तरफ मकान के एक तरफ मगर दरम्यान में न होगा। मकान का दरवाजा मुताल्लिका-जनूब (उत्तर-दक्षिण) होगा, हो सकता है कि पीपल का दरख्त या कोई धर्म-स्थान मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि मकान में या मकान के बिल्कुल साथ ही हों। सिर पर चोटी या बोदी की जगह के बाल खुद-बखुद ही, बिना किसी बीमारी की, खत्म हो जाएं यानि उड़ जाएं और जिल्द सिर नंगी हो कर रह जाए या वो अपने गले में हरवक्त माला या तवक (पूजा पाठ के लिए मांगने के लिए) या मनके आदि इकट्ठे करके कण्ठी से पता लेने में बातें रखने का आदी हो जाए तो साफ हो कि इसका बृह० (बुध इसकी जाती किस्मत इस दुनिया के तारक के लिए) खत्म हुआ सोने का मुलम्मा, झूठी अफवाहें पैदा करना वगैरा बृह० खत्म हुआ, बृह० खराब शुदा वाले को माथे/ पगड़ी पर बृह० के जर्द रंग का तिलक नाक का पानी खुश्क करने से ठीक यानि नाक साफ करने के बाद काम शुरू करना मदद देगा। अगर उस चोटी में ही बृह० खत्म का पता लग जावें तो जिस दिन से नाक का पानी खुद बखुद बन्द हो जाए, बृह० कायम होगा या नाक का पानी खुश्क रहने की उम्र तक उसर का जिक्र मददगार होगा।

<u>खानावार असर:-</u> खाना नं० 1 = कुबेर बादशाह, पैसाती पीले रंग, शेर नर, चलता साधु। ‌)

खाना नं० 2 = जगत-स्थान, मेहमान नवाज़, पूजा, धन-माया देने की दात।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

~~खाना नं० 3= दुर्गा पूजन, तालीम, दुनियावी।~~

नं० 4 = ~~बारिश~~ बारिश ,सोना

नं० 5= नाक ठेहर

नं० 6 = मुर्ग, मक्कड़, कस्तूरी ,सेन

नं० 7 = किताबें, दुआ, ऐनक, आवारा साधू, खाली हवा मट्टी

नं० 8 = अफवाह, आवारा मलंग, फकीर का मज़ या दान

नं० 9 = उम्दा मकान, मस्जिद, मन्दिर, गुरुद्वारा, बड़ा व कड़वा वृक्ष बेर आदि।

नं० 10= सूखा पीपल, इम्तहान गुरु, तालीम खत्म शुदा।

नं० 11= मिट्टी मिला मलबा

नं० 12= पीपल का हरा दरख्त आम हवा , आम दुनिया, साँस, पीतल, खुद बृह० जब "किस्मत का ग्रह" हो लेकिन अपनी जड़ मुकर्रर राशि पहले घर की अदली-बदली बैठा होने की राशि या दृष्टि के ताल्लुक में कुण्डली के किसी भी खाने में। सिवाए खाना नं० 10 के जहां कि वो शनि की मदद का उम्मीदवार होता है। हर तरह से खुद अकेला ही होवे, कुण्डली वाले पर कभी बुरा असर न देगा। ऐसा शख्स बेशक किसी दूसरे की मदद न पाएगा। और न ही वो खुद किसी दूसरे की मदद करने के ऐसा काबिल होगा बल्कि वो अकेले रूण्डे की तरह के पेड़ की तरह। साँप, पहाड़ी इलाका शनि की हुकूमत ,खजूर चन्द्र के वीरान, सूखे मैदान या वीरान या बगीचे, चन्द्र की राजधानी। होता हुआ भी तमाम दुनिया के बरखिलाफ अपनी किस्मत का खुद मालिक मेहनत और कोशिश से कामयाब बना देगा अगर किसी "पितृ ऋण"। पितृ ऋण या बजाहिर नस्ली बुजुर्गों के कर्ज़ यानि बुजुर्गों से जन्म लिया तो खुद औलाद बनाकी इन्होंने पाला पोसा तो बच्चों को हर तरह से काबिल बनाया , बैराग ही तो दान देता वगैरह बच्चे पर छा के गए हैं। या अपने बुजुर्गों के पापों के सबब ऐसा बृह० अपने पहले दौरा या कुण्डली वाले की उम्र के पहले 35 साला चक्र में नाकारा साबित होवे तो किसी खास उपाय की जरूरत न होगी बृह० अपने दूसरे दौरे या उम्र के दूसरे 35 साला चक्र में अपनी पहली कमी भी पूरी कर देगा।

निशानी :- खुद वो शख्स बृह० के ग्रह का आदमी और इसका मकान जद्दी खुद साख्ता बृह० के ग्रह का होगा। बृह० जब होवे खाना नं० 1 से 5 में तो मदद देगा शनि को भी और सूर्य को भी। खाना नं० 6 से 11 में तो सिर्फ शनि को खाना नं० 12 में तो शनि और सूर्य दोनों को ही।

मुतालेई बृह० :- सूर्य-शुक्र खाली हवा बृह० औलाद की पैदाइश दोनों जहान की मातहियत जब तक चन्द्र सूर्य और मंगल कायम या राहू केतु घरों में हो। बृह० दोनों जहान का होगा।

कीमियागर

बृहस्पति खाना नम्बर 1

गुबार कामवर, पैशानी, पीले रंग, ~~रंग~~, शेर नर, बदनी नशीन साधु।

घर पहला है तख्त हजारी ग्रह फल राजा कुण्डली का
गुरु मगर न इसको चाहे, झगड़ा मनुष्य माया का
गुरु अगर घर पहले ही आवे, इल्म सोना ले आता है .

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

लिखना पढ़ना अगर न आवे बेश फकीरी पाता है
होता भी जो सब से अच्छा काम व धर्म भी करता हो
सेहत दौलत ,रिश्तादारां- बाग बहार का साया हो
उम्र 16 से घर को सारे कुल संसार बढ़ाते है
गुरु हवा होता है चलते फिरते कुल जमाना में
उम्र 27 पिता से पहले कुल कमाई करता हो
शनि बुध से 7वें आवे पिता न गुरु का बैठा हो (*) उम्र माफी की चोटी होवे फकीरी न अपनी हो चाहे सात घर आरजाजी होवे (*)
(*) माता सुखी जिन्दगी होवे, पर औरत से दूर ही हो
बेटे को तो तरक्की आए खुद आकाश सूरती हो (आकाश= बेटे वाले की 51 साल उम्र पर)
बेटू लड़का आयद उल्टा बुध छिपाया होते हैं
घर 5वें गर शनि हो बैठा कोठे भी दो पक्के हो
पक्का हुआ हो जब उल्टा उम्र 49 मिलते हो।
गुरु जगत में प्रकट होगा सुख दुनिया का देते हैं

शादी के दिन से बुलन्द इकबाल होगा मगर वालिद के साया का सिर पर साथ न होगा। अगर होगा उसके साथ मददगार और नेक न होगा। फिर भी हैसियत तो पूरा घर पर पड़ता होगा। ~~x~~ बहरहाल उम्र का हर आठवां साल तरक्की का न होगा। अगर होगा तो वचन या आशीर्वाद पूरा होगा। मगर श्राप बद या बद दुआ से खुद अपना आप ही तबाह होगा। हर हालत में सूर्य व बृह० की तासीर से भरा दोनों ग्रहों का दोस्ताना और उत्तम फल होगा। राज दरबार का सुख शानदार तो बहुत बने। अब बृह० की किस्मत रेखा होगी (मुकाबिल पहले चारों ग्रहों का (मंगल-हिरण, सूर्य-रथ, शनि- मगरमच्छ, और बुध-चेरा) और केतु या मैंढा का असर दोस्ताना उत्तम और शुभ होगा। दुश्मन भी ज्यादा होंगे। मगर बेर होंगे राज दरबार धन-दौलत , लड़ाई-झगड़ा ,मुकदमा जायदाद मकान वगैरह में सब तरफ उत्तम ही या। औलाद 8 सालें होती रहे यानि औलाद की उम्रों में 8 साल से ज्यादा फर्क न होगा। जब 8 साल का फर्क होगा तो आगे औलाद न होगी उम्र 75 साल से कम न होगी। सूर्य का रथ हिरण शेर चीता चलाएगा और हिरण की आंख निगरानी करेगी। दोस्ताना ढंग पर या काला सांप भी सिर पर साया करने वाला शेर नाम होगा इल्म वाला, तबीयत में गुस्सा होगा, मगर पाक दिल चालाकी को फौरन समझने वाला और रोकने वाला होगा। हजूर -बीनाई होगा उम्दा जिस्म तन्दरुस्त होगा। औलाद का सुख होगा, अजीजों से मुहब्बत करने वाला और सुख पाने वाला होगा। हर हालत में बृह० का नेक असर पैदा करता होगा कि जो जरूरियात ही नहीं बल्कि बुढ़ापे में रुकावट आम व दुनियावी से नतीजे रुहानी नेक ताल्लुक जरूर होगा। मजहबी स्कूलों का आम इल्म पूरा दर्जा होगा, जिस्मानी-हालात अगर आम तो दोनों हालतें शानदार वर्ना सिर्फ सोचने वाला xxx गरीब, जिन्दा साधु हो। यानि इल्म पढ़े तो दौलत बढ़े वर्ना दया साया मदाई मिले।

बृहस्पति या दोस्त ग्रहों की मदद । या 4 या 2 में तो लड़का मामूली तांबा भी (सूर्य -राज दरबार का धन)सोने की कीमत (बृह०) से देवे।

(*) दांये तरफ की छूटी है

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

बृहस्पति खाना न० 2 (पक्का घर)

शुक्र स्थान, मेहमान_खिदमती_, पूजा_पाठ ,पढ़ने की जगह

गुरु दूजे स्थान शुक्र का ग्रह मन्द माना जाता है,
जन्म कमाई नेक होए जगत ब्रह्मा माना है
दुश्मन ग्रह (शुक्र या बुध) घर 6 से ।। राजा दिली ख्वाह कोई हो
बृह० फिर भी गुरु ही होगा ख्वाह वो औरत ही का है
अगर गुरु न हो कोई देवता नहीं गोबर का पुतला हो
जहर बिच्छू से मर्द औरत खुद अपनी से मरता हो

हथेली पर खाना न० 2 गुरु के सामने -- (बृह० न० 2 और दीगर कोई ग्रह भी 2 या 6 में शनि का बुर्ज है खाना न० 10 सांप काल मन्दा लिए हमारे टकटकी लगाए चुपचाप होगा।

सूर्य का बुर्ज है खाना न० 1 बन्दर बना बैठा जो फूं नहीं मारता बृहस्पति की ताकत हवा को फूंकता है।

राहु का बुर्ज है खाना न० 12 खाना न० 2 के बृह० के सामने राहु का हाथी खाना न० 12 में बंधा हुआ होगा। राहु अपने कान लम्बे करके केतु के खाना न० 2 के साथ न० 12 को मिलाकर गुरु के खाना न० 2 की जड़ में उपदेश की खातिर चुप होगा। मगर बृह० अब चुप न होगा यानि खाना न० 2 के बृह० पर राहु का कोई असर न होगा केतु का बुर्ज है खाना न० 6 - कुत्ता, दरवेश, नाग लड़का, बुध भी शुक्र का बुर्ज है खाना न० 7 -- शादी रेखा। बुध बुर्ज सिर रेखा बुध की, नाग व परिन्दे (तोता मैना आदि) औरत लड़की।

मंगल -3 या खाना न० 3 और राशि न० 3 मिथुन तर्जनी की जड़- बुध की राशि/ चन्द्र का बुर्ज है, खाना न० 4, दिल रेखा माली, गुरु, माता। राहु केतु तो गुरु में शामिल है गोया सब ही ग्रह गुरु का उपदेश सुन रहे हैं या खाना न० 9 में उपदेश था सिर्फ ज्ञान तो खाना न० 2 में ज्ञान का दाता बृह० न खुद मौजूद हुआ। खाना न० 2 में बृह० होने पर दुश्मन ग्रहों का कोई मन्दा फल शामिल न हो सकेगा जो खाना न० 8 - 2 में हो बल्कि खाना न० 8 के मंगल शनि की बुरी नजर को खाना न० 2 का मालिक बृह० देख कर ही पहचान लेगा। मगर बोलेगा नहीं। इस ऐसे बुरे असर के जहर को बृह० जब खाना न० 2 से खाना न० 6 के मालिक केतु के यहां भेजेगा तो वहां बुध भी होने से केतु खोल कर (बुध की ताकत) बता देगा। (केतु को मौत के यम नजर आ जाने पर कुत्ता भौंक कर बतलाएगा) होश पर बृह० के तमाम शिकारों का पूरा पूरा उत्तम फल होगा। हर काम में होशियार और नेक ताल्लुक देगा। (27 साल राज दरबार से नेक ताल्लुक होगा और हर तरफ बरकत का (शेर जर्द रंग या सफेद व दही रंग मटियाला) शेरखाना(शेरखाना, मीठा व दूध का शेरखाना, शेर जैसा बहादुर) फल होगा। जमाना की कुल हवा मदद देगी ऐसे शख्स की किस्मत रेखा भी अगर किसी दूसरे बुर्ज से न गुजरे और सीधी बृह० के बुर्ज पर चली जाए तो सब से उत्तम होगी क्योंकि अकेला बृह० हमेशा मदद देगा जिस का कोई साथी न हो बृह० की मदद होगी, उम्र 75 साल। इज्जत दौलत अज ससुराल दूसरे मेहमान दुनिया के बाग साथी बजरिया

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उर्ध्व रेखा मददगार होगी। सिर की श्रेष्ठ, ~~धन-केतु-रेखा~~, गृहस्थ रेखा या धन रेखा आदि का उत्तम फल होगा। किस्मत का असली मालिक शनि न आंख तले न हाथ या दौलत गुरु शुभ वायु हवा की तरह आए और आराम होवे। अब यह ग्रह अपने फल का मालिक या हमेशा नेक उत्तम अच्छा फल जरूर देगा। इस घर में इसके असर के वक्त चन्द्र माँ उम्दा हलफ 12 साल केतु 8 साल मंगल बद 8 साल इसके वक्त का हलफ, हलफ असर असर देंगे बाकी ग्रह अपना अपना पूरा असर देंगे। मगर शुक्र दुश्मन है और शनि के असर में [जब धर्म फल का हिसाब से शनि खाना नं0 2 में आ जाए] सेहत अच्छी रहे और मुतल्लिका घर में वह दौलत की बरकतियां खड़ी होवें जिसका मुताबिक शनि का असर साँप को दूध देना मुबारक होगा। इस ग्रह के असर का वक्त इकतारी गुरु को वह दौलत माल इज्जत औलाद जायदाद और उम्र की तरक्की के लिए न तो हाथ से न कमाई करनी पड़ती है न ही आंख की होशियारी और दुनिया की चालाकी और मक्कारी का सहारा लेना पड़ता है। गुरु खुद ही सब काम चलते चले जाते हैं। अव्वल तो बाप जायदाद बना देगा। वहाँ ससुराल से जायदाद मिल जाएगी। लाटरी दबा दबाया हुआ माल या किसी लाऔलाद की जायदाद ही हाथ लग जाएगी हर हालत में सब काम बाआसानी और उम्दा नतीजा पैदा करने वाले हो जाएंगे और मालिक पालकी बहुत आराम पाए। गुरु दिल का मन्दिर पूजा पाठी परहेजगार होगा। मिट्टी के कामों से सोना मगर सोने के कामों से खाक नसीब होवे। किस्मती खाना नं0 2 शुक्र से मुलाकात इश्क के बाद का नतीजा गुरु घण्टाल होवे। सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। ब्रह्मा और लक्ष्मी जी अपने सिंहासन पर की हालत का साथ होगा। इसका एक मामूली तांबे का पैसा उसे सोने का काम देगा। सलह कुल और बख्शीश करे तो लेनों से दो लेनी में बढ़े बढ़ा ---- हर जा का रोब कदम शरीफा-- न फसल रबीह खड़ न खरीफा। डर गया तो होगा गया, सोने की तार की तरह वो चलता होगा। वहाँ हाथ पुराने खोखड़े [जूते] मिट्टी मल भी आए साधु अपनी अपनी कुटी पर [यानि दुनिया में मालिक राजा जनक] होगा। मगर गृहस्थ न करना [यानि बड़ा भारी कबीला बड़े बड़े मकान या लोगों] की शर्त न होगी।

बृह0 नं0 2, शनि या सूर्य या चन्द्र 6 दृष्टि नं0 8 ख़ाली यानि बृ0 से अगर कोई भी रेखा निकल कर दिल रेखा और सिर रेखा के बीच शनि या सूर्य के बुर्ज की तरफ की हद तक चली जाए इज्जत रेखा होगी।

बृह0 नं0 2 बुध नं0 8 तो पिता की उम्र के खत्म करने के आलावा खुद ऐबी [16 से 19 में] उसका नशा भी खराब करे। बहिन बेवा मामू लावल्द होगी।

बृह0 नं0 2 केतु नं0 6 -- ऐसे शख्स को अपनी मौत मरने से पहले ही पता चल जाएगा और मामूली एक कुत्ते की आवाज ही उसे बृह0 का गैबी हुक्म बताएगी।

<u>बृहस्पति खाना नम्बर 3 दुर्गा पूजा ,तहलीम</u>

त्रिलोक का मालिक होगा-गुरु जो तीजे बैठा हो,
यश हो तो 18 से 18 वर्ष तीन ही ताकत हो
दुर्गा पूजन भेद मिला है 3 -18 होने का

नेक होवे तो सब से उम्दा खाना गुरु हो 3 ,9 का

सिर्फ तारे-मोर की तरह सजी हुई (शिकारगाह) सेवाए। मगर सिर्फ बिगाड़ने पर आए उसका सितारा तब भी बुरा देवे। तारीफ और खुशामद से जल्दी खत्ता (नाकस) नष्ट और बर्बाद देगा। दिमागी खाना नं0 17 मंगल से मुश्तर्का असल या मुरिंक शिवजी,दुर्गाजी ,शेर की सवारी का साथ होगा। कुण्डली में जबकि मंगल नेक होवे । बृह0 और मंगल दोनों ग्रहों का दोस्ताना मुश्तर्का और उत्तम होगा जो शाही -बख्त दकीली,बहुरात बसर और औलाद को सुख और औलाद की उम्र से मुतल्लक होगा और बुध की खुशमदी सिर्फ औलाद व नातों से मुतल्लक होगी मगर बुध दो शक्ल रावण कृष्ण व अक्ल वाला होगा। 40 साल अमीरों से मुहब्बत होगी और आराम पाएगा। राज दरबार से मुअज्जिज होगा। और नेक असर होगा जब मंगल बद होवे ऐसा नेक असर न देगा जो बंश व नस्ल में बहादुर होगा। मगर दूसरों का माल छीनने वाला होगा। धन दौलत सहीह झगड़ालू हर वक्त मगर झगड़े में झगड़ों में लगा रहेगा। शरीर मगर सुरक्षित होगा। 31 साल बीमारी का ताल्लुक हो।

बृह0 नं0 3 शनि नं0 4 – उर्ध्व रेखा जिस का दोस्त उसी को लूट कर अमीर हो जाए।

बृह0 नं0 3 शनि नं0 9 – उर्ध्व रेखा उम्र और धन दौलत के ताल्लुक में बृह0 शनि मुश्तर्का नं0 9 में तफसील देखें।

<u>बृहस्पति खाना नम्बर 4</u>

बृह0 है चौथे घर हुआ सहुज्ञ गुरु भरा
ग्रह चारों ही नेक हों-पानी (चन्द्र),मिट्टी (शुक्र),आग (मं),हवा (बृ),
जब बृह0 बन हुआ बहता दरिया हो
बुध अकेला छोड़ के फल उसका उम्दा हो
बदले बुध घर आ हुआ-खोटी हवा चलने लगी
दुनिया को तारे जब वो बेड़ी अपनी डूबने लगी

बृह0 का बहुत उत्तम फल होगा, सिंहासन बत्तीसी (बत्तीस परियों) और राजा विक्रमजीत के साया का मालिक होगा। उसके साया में नाहरी व फैज होने की बातों की बरक्त और धन दौलत का दरिया बहता होगा। मां पर भी, पिता पर थोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा जरूर होगा। दुनियावी मुहब्बत में वक्त मुसीबत पानी में सीधा तैरने वाला शेर होगा। परेवी ताल्लुक और हकूमत की। ताकत का मालिक होगा। चन्द्र व ❋ बृह0 की तासीर का बाहम दोस्ताना मुश्तर्का और उत्तम फल होगा। राज दरबार से फायदा बरों -बेत की तरक्की। हर तरह की शान्ति होवे । इसका मामूली नाये का पैसा उसे सोने का काम देगा। व उसका मकान आलीशान होगा। 24 साल तहसील व इल्म की बरकत, बल्कि हर तरह से शान्ति होगी। नाहरी व फलियां पावे। लावारिस जायदाद मिले या मुफ्त जुड़ाया धन पाए। दुनियावी बृह0 के फल की निस्बत चन्द्र जैसी फल का और भी उम्दा होवे। दिमागी खाना नं0 21 चन्द्र से मुश्तर्का रहम हमदर्दी।

बृह0 नं0 4 बुध नं0 10 – 34 वर्ष उम्र के बाद अपना ही बेड़ी डूब

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

सलाह देगा।

बृह0 नं0 4 शनि नं0 2 – मुंह की हवा से ही बात को पक्का देने वाला अपनी गुरु मुरशदी और हमदर्दी के वक्त अपनी उम्र के आखिर तक गुरु अपने लिए उल्टा किस्मत वाला होवे।

बृह0 नं0 4 सूर्य नं0 1 -- दोनों ग्रहों का जुदा जुदा और दोनों का उत्तम फल हो

बृह0 नं0 4 शनि नं0 9 तो ऊर्ध्व रेखा मगर सब से उत्तम और सब को तारने व वाली हालत का असर देवें।

बृह0 नं0 4 शनि नं0 10, चन्द्र नं0 1- हर किस्म की सवारी का सुख हो।

बृह0 नं04 चन्द्र नं0 2 दुनियावी मुलाकी में अगर कारोबार से खुद कर न हो तो कम से कम उसके बराबर का तो असर होगा, माफिक "माँ पर ही, पिता पर थोड़ा होगा "।

बृह0 नं0 4 सूर्य नं0 10 चन्द्र लगन तो राज दरबार से मुतल्लका नहरी नफों के नेक नतीजे, दीप में मोती होंगे।

<u>बृहस्पति खाना नं0 5 (पक्का घर) नाक, कैसर, असर है ग्रह फल का</u>

गुरु है 5वें ले के मालिक ** पत्थर में वो मोती है
छोटी लेया ब्वाह बेशक होवे तरक कण्ठी धोती है
बुध नं 2, 11, 9 बैठे डूबती बेड़ी होती है
पित गुरु कोई लड़का जन्मे शेरों की जोड़ी होती है
जब तलक न हो कोई ऐसा नींव भरी शेर होती है
लड़के पोते बेशक बैठे किस्मत सोई होती है

अब बृह0 का शेर आगे शेर केन्द्र घर में है। बृह0 के औलाद से मुतल्लका निशान अपना पूरा असर देंगे। औलाद की तरफ से साहिब जर व जायदाद होगा बृह0 नं0 * 5, 9 हो तो उत्तम होगा। बशर्ते की खाना नं0 2, 9, 11 में पापी ग्रहों में से कोई भी न हों। सूर्य से मुतल्लका (निशानी खाना नं0 20) अकल इज्जत बुजुर्गी (निशानी खाना नं0 22) अक्ल, महादशा के वक्त जब केतु की और जगह हो भागों को केतु की महादशा का अर्से 7 साल तकलीफ हो। (सूर्य के ताल्लुक से खाना नं0 5 का असर केतु पर होगा) तीर में मालिक पत्थर में होने की ताकत होगी।

बृह0 5 चन्द्र 9 तो किस्मत का निहायत असर नेक, इसकी माली की मामूली सी नाव बड़े भारी जहाजों का काम देवें।

बृह0 नं0 5 शनि नं0 9 तो बृह0 के वक्त से किस्मत का असर होवे मुफस्सिल शनि -बृह0 मुतल्का में लिखा है। अब औलाद का मन्दा फल न होगा।

खालिस वर्ष फल के हिसाब से या किसी तरह भी अब अगर शनि खाना नं0 9 में आ जाए तो बृह0 की मीठी हवा में शनि का सांप हो जाएगा। मगर वो मुर्दा नहीं हो जाएगा। और शनि के दिन की औलाद के जन्म पर जाम कर दुनियावी उम्दा 60 साला और उत्तम फल देगा। मगर अब बृह0 की मुतल्का चीजों से फायदा न होगा।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

बृहस्पति खाना नं० 6 (राशि फल) बुध, गरुड़, गणेश पवन तेंदू का
उपाय मदद करेगा।

×=×=×=×=×=×=×=×=×

छठे घर पाताल का गुरु छुपाये मुंह
मदद करे न बाप की बेटा बेटी न बुध
हवा भली उस शख्स की आब सफर हो
हल माता बुध की पढ़े तेंदू उल्टा हो
चूहे से तेंदू पढ़े बुध गरुड़ ही हों
रोटी खाई वो मुफ्त की रहमानी पहरा हो

साधु अपनी दुनिया (गृहस्थी हालत मालिक आम साधारण फकीर की जिन्दगी) में होगा। समाधि और सुखी परलोक के ख्यालात के बाहर और दुनिया में गलत आदमियों व नीच नौकर चाकर मातहतों की आदत व ऐश की शर्त न होगी। पिता छोटी उम्र में चल बसने वाला होगा। पिता अगर होगा, दुखी होगा तो माल सफर भी होगा। मगर दरवेश वाला मैंढक न होगा। फिर भी होगा सब की मालिक का मालिक या लेने की लाखों में रहने वाला होगा। आखिरी होगा तो खुशहाल होगा पर कभी कंगाल न होगा। मगर बुध ऐसा शख्स सब सिफ्तों का मालिक बेशक न होगा। बृह० की किस्मत रेखा की शाखें (बृह० बनशिया दृष्टि) बृह० से 12 को या बृह० को नम्बर 2 से निहायत मुबारिक होगा। इस शाख का नाम कुव्वत रेखा भी लिखा जा गया है। कुव्वत रेखा (नीचे दी गई हर दो हालत में) (किमाशी खाना नं० 18 (1) तेंदू के मुतल्लका-- खरगोश, बाजा, मोर, गणेशजी. चूहे की सवारी, (2) बुध के मुतल्लका -- कोठी उम्मीद, गणेश जी, गरुड़ की सवारी के फैसला के लिए साबुन वाले सिरहा पर चक्र, शंख, पद्म का हाल कुदरती तायदाद बुध हाथ के तारे के तारे ही मिल कर अंदर देखा जाएगा। जो दुनियावी कुव्वत और माल का ढेर सफर होगी। और बृह० का पूरा असर देगी तो व शख्स सुखी सफर होगा और अपने पास दौलत जमा न रखेगा। मासों की तरफ सब खुशहाली ही होगी। मगर बुध देने वाले के अपने लिए 40 साल दुश्मन होंगे। राशि फल का बृह० या अंगुली की पोरियों पर बृह० के निशानों से लिया हुआ बृह० हो तो चन्द्र का काम देगा। (राशि फल का बृह० अंगुलियों पर बृह० के नीचे खत ||||) आराम या हराम की रोजी के मिलने की लकीर है। जाहिर अव्वल तो ऐसे शख्स को किसी सख्त मुसीबत से काम से वास्ता ही न पड़ेगा और अगर किसी वजह से कहीं फंस भी गया तो न हाथ की मेहनत करेगा न आंख से काम लेगा मुफ्त में अपने पेट की रोजी खा जाएगा या उसे पेट भरने के लिए काफी अनाज मिल ही जाएगा।

बृह० नं० 6 बुध नं० 2 तो 16 से 19 साल उम्र के बीच न सिर्फ पिता की उम्र खराब बल्कि इकट्ठा सोना भी बर्बाद करे।

बृह० नं० 6 बुध नं० 12 तो पिता की उम्र के अलावा इकट्ठा की छोड़ा सोना तक भी खराब कर देगा।

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

बुध० खाना नम्बर 7 (राशि फल का) किताबें, कलम, ..., अवतार ..., पशनोई बुध० (शुक्र-सूर्य) साली हवाई, ... असर के वक्त बुध का उपाय करें

×=×=×=×=×

सातवें बुध० सब को तारे-खुद लड़की की बोदी हो,
वर्ना इमारत में अपने वक्त- पर भाइयों से दुखिया हो,
सब का ही वो वैद्य प्यारा- चले का जितना खुद हो गुजारा,
बुध×शु×श×चंद्र=6=6=××=××=××=××
खुद हिसाब का अपनी नारी चन्द्र पूजन हो किनारा,
बुध शनि घर 3,6,11 या कि 12 बैठा हो
ऊर्ध्व रेखा का डाकू राहु-केतु को भी तरसता हो
40-5 (45) जब उम्र हुई तो ... की ... हो
पिछले बोले सब खुद को ... बुध ... का ... हो
तोल गए जो मेल वैरागी- लालाजी कहते हैं घर की रानी,

भाइयों से तंग हो कर वह दौर कहता होगा कि भाईजी खुदा करे क्यों न मर गए "बाल फाड़ने पड़े" स्त्री धन से बर्कत होगी अगर अपनी कमाई होगी, तो सब मिट्टी के बराबर होगी। इसके शत्रु (अवतार) का साथ मुबारिक न होगा, तो वहम न वहाँ खड़ा होगा। "ब्राह्मण की बोदी नीह न मंगली" (चन्द्र पूजन मुबारिक होगा) बुध० ख० 7 की मन्दी हालत का शुभ घर रखना (सोना तोलने वाली) होगी। जिनको वह कपड़े में रखना वास्ते धन दौलत मुबारक होगा। शुक्र के बुर्ज पर बुध० की लम्बी और टेढ़ी लकीरें शुक्र और बुध० की दुश्मनी का सबूत है ऐसी हालत में भाईयों से कोई फायदा न होगा इस के दुःख से तंग होकर कुदरत देश-परदेश की जिन्दगी बसर करेगा।

हाथ पर बुध० के निशानात:-

बुध० का डण्डा या ... हो तो बहुधी इल्म में मशहूर होगा। शुक्र का फल उम्दा तो अच्छा होगा मगर बुध० का शुक्र असर से हल्का और दुश्मनाना होगा। दुनियावी व ऐसी मदद तो असर होगी सफर से जिन्दगी उम्दा होगी मगर वालिद और औलाद का सुख हल्का होगा। भाइयों से बेआरामी होगी। औलाद खूबसूरत और सुख देने वाली होगी मगर सुख देने वाली न होगी। गरजिरका औलाद भाई बहन वालिद वगैरह और औरत के सुख से महरूम होगा वो सब तो सुख में नहीं।

बुध की चीजें:- अगर बुध० रेखा ||||| शादी रेखा को काटे, तो औलाद बरबाद, और अगर बुध पर सूर्य के बुर्ज की तरफ बुध० का निशान ||| हो तो इल्म ज्योतिष और दुनियावी तजुर्बाकार होगा। शुक्र अध्यात्मी की तरफ हो तो वे आराम-40 साल सुख ऐश करेगा, मगर परहेज बाद होगा। बुध का फल दुश्मनाना होगा। तीसे जब बुध पर हों तो औलाद का नाश करें। सफर से अगर जिन्दा घर वापिस आए। भाइयों से तंग व दुखिया, अपने पेट के अनाज की वेहदत की बड़ी कदर। स्त्री धन से/ में बर्कत खुद अपनी कमाई मिट्टी में जाए। तराजू की डण्डी की बोदी तरह सब का बोझ सहारें, मिट्टी का मालों . चने की रोटी तौल पर माल दौलत के लिए तराजू की बोदी पर सब घर का बोझ होगा। खुद अपने या बुध०

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

के लिए तराजू की डंडी पर सब घर का बोझ होगा। बुध अकेला या बृह० के लिए लोहे की जगह मिट्टी होगी। भूखा गरीब रोटी की जगह व पानी की तलाश में फिरे। मगर रोटी की जगह कुत्ते का गोश्त तक ढूंढे जिस तरह की। इसका की कोई सीधा डण्डा सीढ़ (चोटी) आदि वगैरह का उपाय करें या बारिश में नहाए

बृह० ख० 7 शनि ख० 9 - दर्द रेखा, डाकू चोर।
बृह० ख० 7 बुध ख० 9 तो गृहस्थ और शादी में गड़बड़।
बृह० ख० 9 बुध ख० 7 - गृहस्थ शादी में गड़बड़।

बृहस्पति खाना नम्बर 8 == "श्मशान, दमदारा मरक, फकीर का मकबरा

घर आठवां जो खाली हो तो- साधु का वो रास्ता है
शनि मंगल सब को ही मारें- गुरु का फल वाँ मिलता है
गुरु के घर जब उत्तम होवे- सोने का अम्बार ले
शनि मंगल घर चौथे बैठे- दुनिया अक्ल गुजारा हो

अगर बुध ख० 9 में न हो तो लम्बी उम्र का बुजुर्गों ने ही पटा लिखवाया हुआ होगा। हर दम बड़े परिवार और बाबरकत हुई किस्मत का हाल होगा सिर की खोपड़ी उड़ जाने तक वो जिन्दा रहेगा या खोपड़ी को सिर से उतार कर हाथ में ले कर चलने की हिम्मत का वो मालिक होगा। सब कुछ जला कर मंगल एक पत्थर पर भी बिठा देवें तो भी उस वीराना में सोने की खान वो ढूंढ लेगा और जंगल में भी दंगल और हरियाली करेगा। मगर फकीरी का साथ न होगा, मौत से बेखौफ, दौलत लक्ष्मी होगी, मगर जब दौलत, बीमारी का साथ जरूर होगा जब मंगल बद का ताल्लुक हो, वर्ना उम्दा सेहत, कुल अपनी किस्मत में हर हार न होगी। बाबा बेशक उस से पहले मर चुका होवे मगर बाप की और खुद अपनी उम्र लम्बी होगी, बशर्ते कि बुध ख० 9 में न हो। अब यह घर खाना ख० 8 मरघट श्मशान का न होगा बल्कि बृह० की दौलत सोना और हर दम बड़े, परिवार तरक्की पर होगा, और हर तरह से जायदाद मुबारक होगा। अगर बाबा जिन्दा हो या बुध ख० 9 में हो तो उम्र लम्बी का कोई इतबार न होगा, बल्कि बाप की गैर हाजिरी में खाली मौत होगी या उसकी उम्र की हिफाजत के लिए बाप का हर दम साथ रहना दरकार होगा। अगर बाबा जिन्दा हो मगर हर दम पास न रहे तो उसके जिस्म पर हर वक्त सोना कायम रखना मुबारिक होगा।

बृह० ख० 8 मंगल ख० 4 में दाल, कुपित, दरिद्री

उपाय-- "मन्दे वक्त में बृह० या गुरु की चीजें कब्रिस्तान में देने से लाभ होगा

बृह० खाना ख० 9 (पक्का घर), घर का और कुल का, किस्मत को जगाने वाला, जद्दी मकान, मन्दिर मस्जिद, गुरुद्वारा, बताने किस्मत पखेरू, ऐश भोग

बृह० हो जब 9,12 में - घर उसके मंगल आती है
किस्मत उम्दा सबका पखेरू- नाव हवा में चलती है
ज्यों ज्यों पानी झरना बहते -होता ग्रहण अमीशाही है
वो सिद्धि का मालिक मिलते-होती 12 सिद्धि है

A— धन व औलाद

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

LalKitab 1942 Translation by Sh. pushkarna

प्राण जाए पर वचन न जाए-वचन के अव्वल दर्जे की पाबन्द, और वो के मुकाबले वक्त में हार न जाए बल्कि जाने वक्त से पहले ही चल जाए। लड़ाई का औलादी बाकमाल होए। अगर बृह0 रद्दी या मन्दा हो तो ताल्लुक फल होगा। बृह0 के नीचे का ||||। खिताबत मुतालिक वालों के लिए मददगारी पर हों अगर गुरु की तरफ हो यानि गुरु देखता हो, तो रूहानी ताकत की तरक्की और अगर चन्द्र की तरफ हों, या चन्द्र देखता हो तो माद्दी दौलत की मदद की अलामत है, और अगर ऐसे खत दोनों तरफ ही पैसे हैं यानि गुरु और चन्द्र दोनों ही देखते हों तो किस्मत अजीब रंग दिखाएगी कभी अमीरी का दरिया बहते जाएगा, कभी गरीबी की रेत भी चमकी भी न होगी। उम्र 75 साल होगी।

खाना नं0 9 अगर बृह0, धर्म, परमेश्वर, तीर्थ यात्रा, बातिन का इल्म, घर के अपने आश्रितों की मददगारी, कमीनी, परहेजगारी, परिवर्तन, मंगल का, गुरु और बुध खराब करते हैं फिर देखा नहीं होने पर यानि वह का असर न होगा। मगर न ठीक पूर्व में बृह0 का धर्म कभी भी बीच न होगा। प्राण जाए मगर धर्म न जाए और न ही धर्म के सिलसिले में हार जाए बल्कि वक्त के पहले ही चल जाए। बृह0 अब उम्र की 16वें साल शुरू हो जाए, तो खिताबत मुतालिक फल देगा। बुजुर्गों की शाफ्कत रहेगा। दरियाए गंगा की हवा में चलने की ताकत की तरह की किस्मत ××××× होगी और धन की किस्मत बहते दरिया का पहलू होगी। खिताबी खाना नं0 9 - बृह0 का जाती असर-सबसे उम्दा।

बृह0 नं0 9 शनि नं0 5 हो किस्मत का खेल और उम्दा असर शनि के वक्त से शुरू, धन-दौलत उम्दा मगर औलाद के लिए मन्दा ही होगी मुश्किल हाल बृह0 शनि मुश्तर्का में देखें लिखा है।

सूर्य साथ-तो बादशाही और दस्तक होवे, देखन और तरक्की मिले।

बृह0 कायम और खाना नं0 9 बुध नं0 4 हो राजयोग।

बृह0 नं0 9 चन्द्र नं0 5 बुध नं0 3 हो मन्दा फल होगा।

बृह0 नं0 9 चन्द्र नं0 3 बुध नं0 5 हो उम्दा फल होगा

बृह0 नं0 9, गुरु नं0 3, 5 और चन्द्र नं0 2, 5, 3 हो मन्दा भी, बादशाह भी

बृह0 नं0 9 मंगल नं0 3 हो ससुराल दौलत-मन्द और दौलत देवें

बृह0 नं0 9 मंगल नं0 3 सूर्य नं0 5 हो तीनों घरों और तीनों ग्रहों के बृह0 का ही असर होगा, और उम्दा और उत्तम।

बृहस्पति खाना नं0 10 [नीच] हुआ पीतल, मुलम्मा जर, तालीमरुख़्सत ख़ुद्दा मन्दे असर के वक्त दरिया कभी में नदी के पैसा का उपाय मददगार।

गुरुवार 10वें हुआ हवन्तों का साथ,
नाहक में दोनों गए, माया मिली न राम
घर शनि के आन कर- गुरु चढ़ाए स्वाद
ग्रह न कोई बल रहे सिर्फ शनि की आस
जीता मन्दा अब हुआ, वरे बरन फकीरान
अजब प्राण गुरु की है शनि उम्रदा मन्दा गुरु संसार

Join http://groups.yahoo.com/group/astrostudents
PDF created with pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com